ISSN 2349-6614

जुलाई 2023

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

अखण्ड भारत की अवधारणा नया संसद भवन

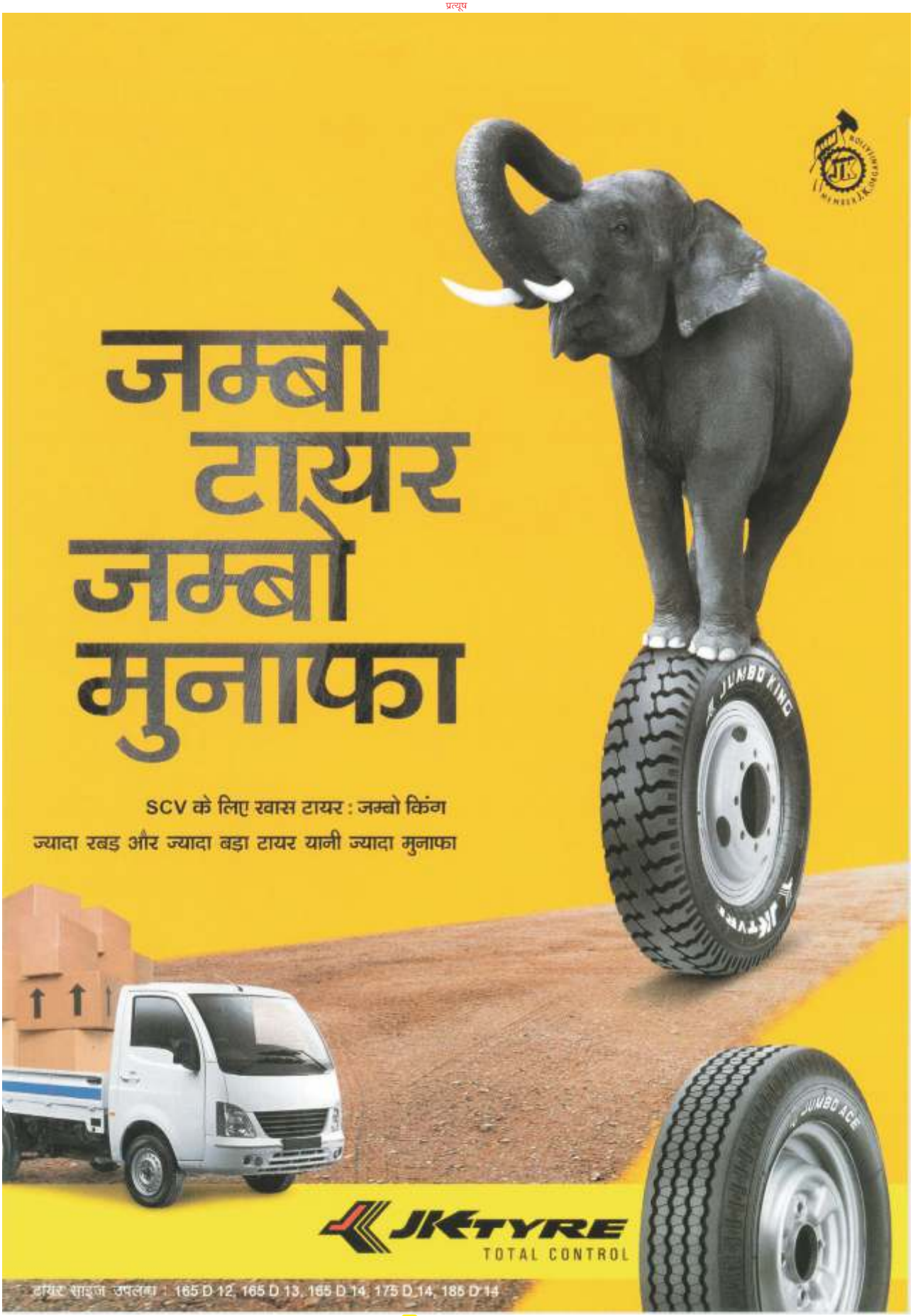
जम्बो टायर जम्बो मुनाफा
SCV के लिए खास टायर : जम्बो किंग
ज्यादा रबड़ और ज्यादा बड़ा टायर यानी ज्यादा मुनाफा
JUMBO KING
JUMBO ACE
JKTYRE
TOTAL CONTROL
टायर साइज उपलब्ध : 165 D 12, 165 D 13, 165 D 14, 175 D 14, 185 D 14

जुलाई 2023 वर्ष 21 अंक 03

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

संरक्षण

रघु जैसा खुशनसीब हो हर हाथी
पेज 08

धर्मक्षेत्रे

महादेव प्रसन्न तो सब प्रसन्न
पेज 10

झूलता पुल

अद्भुत तकनीक का गवाह हावड़ा ब्रिज
पेज 18

बालवाड़ी

बादलों का विज्ञान
पेज 24

फलसफा

आम की मोहब्बत में सब हुए शायराना
पेज 38

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

घर आंगन हो हरा-भरा

Keshav Nursery

All Type of Plants, Trees, Pots & Gardening Servises Available..

Outdoor Plants, Indoor Plants, Ornamental Plants,
Flower Plants, Trees, Fruit Plants, Bonsai, Air Plants,
Hanging Plants, Air Plants, Herbal Plants, Climbers,
Cactus and All other Trees Available.

Call- 9413317086, 9461389196 Email- keshavnursery@gmail.com
Address- Babel Sahab ki Badi, Opp. Navdeep School, Kalka Mata Road, Pahada, Udaipur
www.keshavnursery.co.in

घाटी में आतंक का नया पैंतरा

जम्मू-कश्मीर का 2019 में विशेष राज्य का दर्जा समाप्त होने के बाद लंबे समय तक घाटी में कर्फ्यू लगा रहा, तमाम संचार माध्यम ठप रहे, सेना की तैनाती बढ़ा दी गई थी, आतंकियों के खिलाफ तलाशी अभियान तेज कर दिया था, उन्हें वित्तीय मदद पहुंचाने वालों को सलाखों के पीछे डाला गया, सीमा पार से उन्हें पहुंचने वाली इमदाद रूकी हुई थी। फिर सरकार दावा करती रही कि घाटी में अब आतंकी संगठनों की कमर टूट चुकी है। मगर हकीकत यह है कि वहां दहशतगर्द अब भी सक्रिय हैं। वे गुपचुप नौजवानों की भर्तियां भी कर रहे हैं।

हाल ही में भारतीय सेना ने खुलासा किया कि घाटी में सक्रिय आतंकी संगठन संचार के पारंपरिक संसाधनों के बजाय महिलाओं, लड़कियों और किशोरों के जरिए सूचनाएं पहुंचा रहे हैं। उन्हीं के माध्यम से हथियारों और मादक पदार्थों आदि की पहुंच भी सुनिश्चित कर रहे हैं। इसमें पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ की संलिप्तता के भी प्रमाण मौजूद हैं। आतंकवादियों के संदेशवाहक के रूप में काम कर रहे ऐसे कई लोगों को पकड़ा भी जा चुका है। दरअसल, पिछले कुछ सालों से आतंकी संगठनों के संचार माध्यमों से सूचनाओं के आदान-प्रदान पर भारतीय सुरक्षा बलों और खुफिया एजेंसी की पैनी नजर थी। जिससे उनके ठिकानों पर हमला या उनकी घेराबंदी कर उन्हें पकड़ने या मार गिराने में काफी कामयाबी मिली है। ऐसे में स्वाभाविक ही, आतंकियों ने पारंपरिक संचार माध्यमों का रास्ता छोड़ सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए नया रास्ता अख्तियार किया है।

आतंकवादियों के इस तरह महिलाओं, किशोरों और बच्चियों के इस्तेमाल से कई गंभीर सवाल उठते हैं। यह तो स्पष्ट है कि स्थानीय स्तर पर आतंकवादियों का समर्थन पहले से बढ़ा है। कट्टरपंथ को रोकने के जितने भी उपाय आजमाए गए, वे कारगर साबित नहीं हुए हैं। यही वजह है कि कट्टरपंथी मासूम लोगों को बरगलाने में कामयाब हो रहे हैं और फिर उनका इस्तेमाल आतंकवादी अपनी साजिशों के लिए कर रहे हैं। जब तक स्थानीय लोगों का आतंकियों को समर्थन बंद नहीं होता, तब तक आतंकवाद की जड़ें समाप्त करना चुनौती ही बना रहेगा। पिछले साल स्वयं केंद्रीय गृहमंत्रालय ने स्वीकार किया था कि जिन दिनों जम्मू-कश्मीर में संचार सेवाएं ठप थीं, पूरी घाटी में कर्फ्यू का आलम था, उस दौरान भी आतंकी संगठनों में कश्मीरी युवाओं की भर्ती पहले की तुलना में कुछ अधिक हुई। अब अगर महिलाएं भी उनके सहयोग में शामिल दिखने लगी हैं, तो निश्चित रूप से यह गंभीर चिंता का विषय है।,

कश्मीर घाटी में आतंकी संगठनों को विभाजन के बाद से ही पाकिस्तान की तरफ से प्रश्रय मिलता रहा है। सीमा पार चल रहे आतंकी प्रशिक्षण शिविरों पर भारतीय सेना की लगातार दृष्टि रहती है। फिर भी सवाल है कि कैसे हथियारों, नकदी, मादक पदार्थों आदि की पहुंच उधर से इधर हो पा रही है। सड़क मार्ग से तिजारत बंद है, सीमा पर चौकसी चुस्त है, फिर भी अगर आइएसआइ और पाकिस्तान में जड़ें जमाए आतंकी संगठन घाटी में अपनी साजिशों को अंजाम देने में कामयाब हो पा रहे हैं, तो यह केवल मासूमों को संदेशवाहक के रूप में इस्तेमाल करके संभव नहीं हो सकता। पिछले कुछ महीनों से सेना के काफिले या उनके ठिकानों पर जिस तरह के आतंकी हमले हुए हैं, उनमें जिस तरह के साजो-सामान का उपयोग किया गया है, कैसे दहशतगर्दों तक पहुंचा और इसकी भनक तक खुफिया एजेंसियों को नहीं मिल पाई, यह बड़ी चुनौती है। मादक पदार्थों की खेप भी ड्रोन के ज़रिए भारतीय सीमा में फेंके जाने की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं हालांकि सीमा पार कट्टरपंथियों की इस करतूत को सीमा सुरक्षा बल नाकाम करने में सफल रहा है। इसलिए सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए मासूमों के इस्तेमाल पर नजर रखने के साथ-साथ आतंकवादियों की बदलती रणनीति को भी बारीकी से समझने की जरूरत है।

इस वक्त जम्मू-कश्मीर की शासन-व्यवस्था केंद्र के हाथ में है। वह वहां बढ़ रही दहशतगर्दी का ठीकरा दूसरे के सिर फोड़ कर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला नहीं झाड़ सकती। उसे नए सिरे से विचार करने की जरूरत है कि क्या वजह है कि तमाम चौकसी और कड़ाई के बावजूद घाटी में आतंकी मंसूबे बढ़ते ही जा रहे हैं। आखिर कैसे तमाम शिकंजों के बावजूद आतंकियों के पास सूचनाएं, हथियार और नगदी पहुंच रही है। सरकार को रणनीति तो बदलनी होगी।

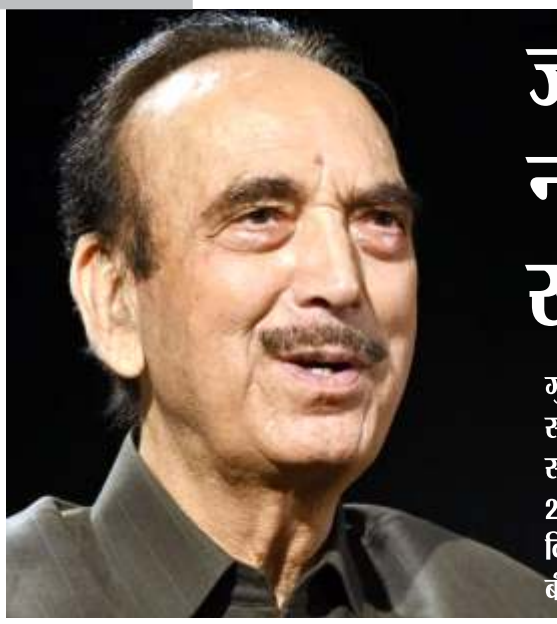

जम्मू कश्मीरः क्या गुलाम नबी के हाथ होगी सत्ता की चाबी?

गुलाम नबी आजाद जम्मू-कश्मीर के उन विरले नेताओं में हैं, जिनकी स्वीकार्यता घाटी से लेकर दिल्ली तक है। उनके तमाम पक्षों से सकारात्मक संबंध रहे हैं। अलगाव विरोधी मुस्लिमों की पहली पसंद रहे हैं। कांग्रेस ने 2005 में जम्मू-कश्मीर आखिरी बार बेहतर प्रदर्शन किया था और विधानसभा चुनावों में 25 सीटों पर जीत हासिल की थी। 2005 से 2008 के बीच बतौर सीएम उनके कार्यकाल में अमूमन शांति थी।

क्या कांग्रेस छोड़ने के बाद गुलाम नबी आजाद जम्मू कश्मीर की राजनीति में नई धुरी बन सकते हैं? क्या नई पार्टी बनाने से घाटी का पूरा परिदृश्य बदल जाएगा? क्या उनकी नई पार्टी भाजपा के लिए उम्मीद की किरण बन सकती है? क्या परिसीमन के बाद इस बार सत्ता की चाबी गुलाम नबी आजाद के हाथ में रहेगी? ये तमाम सवाल गुलाम नबी आजाद के कांग्रेस से इस्तीफा देकर जम्मू कश्मीर में नई पार्टी बनाने के ऐलान से उठ रहे हैं।

क्यों टाइमिंग है अहमः गुलाम नबी आजाद की जम्मू कश्मीर में नई पार्टी बनाने की टाइमिंग अहम है। 2019 में अनुच्छेद 370 हटाने के बाद पहली बार विधानसभा चुनाव कुछ महीने बाद होने वाले हैं। सालों बाद परिसीमन भी हुआ है। वोटर लिस्ट भी लगभग तैयार है। पिछले तीन-चार साल में राज्य में तमाम पुरानी पार्टियां संघर्ष के दौर से गुजर रही हैं।

क्या है आजाद के पक्ष मेंः गुलाम नबी आजाद जम्मू कश्मीर के उन विरले नेताओं में हैं, जिनकी स्वीकार्यता घाटी से लेकर दिल्ली तक है। उनके तमाम पक्षों से सकारात्मक संबंध रहे हैं। अलगाव विरोधी मुस्लिमों की पहली पसंद रहे हैं। वे जम्मू में भी विस्तार कर सकते हैं। हिंदू समुदाय भी उन्हें वोट देता है। आजाद चुनाव के बाद भाजपा या किसी दूसरे दल से गठबंधन का विकल्प खुला रख सकते हैं। उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने 2005 में आखिरी बार बेहतर प्रदर्शन किया था और विधानसभा चुनावों में 25 सीटों पर जीत हासिल की थी। 2005 से 2008 के बीच बतौर सीएम उनके कार्यकाल में अमूमन शांति थी।

क्या है कमजोरीः सारे समीकरण गुलाम नबी ही पक्ष में हों, ऐसा भी नहीं है। अने गृह क्षेत्र डोडा और उससे सटे जम्मू के इलाके के अलावा उनका बड़ा जनाधार नहीं रहा है। सालों से चुनावी राजनीति से दूर रहे हैं। उनके स्वास्थ्य को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। अगर, भाजपा से नजदीकी की बात सामने आती हैं तो कश्मीर में उन्हें परेशानी हो सकती है। इतने कम समय में व्यापक संगठन खड़ा करना भी एक चुनौती हैं।

क्यों दिखी संभावनाः अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू कश्मीर की राजनीति खासकर घाटी में अस्थिर रही है। हालांकि, इस मुद्दे पर नेशनल कांफ्रेंस, पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी जैसे दल गुपकार गठबंधन बनाकर एक मंच पर आए। नेतृत्व से लेकर कई ऐसे मसले हैं, जो खासकर दोनों दलों के लिए मुश्किल खड़ी करते हैं। हालांकि गुपकार गठबंधन ने स्थानीय निकाय चुनाव जरूर साथ लड़ा और बेहतर प्रदर्शन भी किया था। उस वक्त भी छोटे दलों और निर्दलीय उम्मीदवारों के बेहतर प्रदर्शन से इस गठबंधन पर सवाल खड़ा हुआ था। पिछले कुछ सालों से कांग्रेस घाटी में लगातार कमजोर हुई है। ऐसे में नई पार्टी की संभावना बन रही थी। ऐसी पार्टी और नेता जो श्रीनगर से दिल्ली के बीच सेतु बन सके। इस सेतु के रूप में गुलाम नबी आजाद देखे जा सकते हैं।

मोदी की भी पसंदः ऐसा माना जाता है कि गुलाम नबी आजाद प्रधानमंत्री नरेन्द मोदी की शुरू से पसंद रहे हैं। 2014 में एनडीए सरकार बनने के बाद अगले साल उन्हें सर्वश्रेष्ठ सांसद का पुरस्कार दिया गया था। इसके अलावा, राज्यसभा से रिटायर होने के बाद केन्द्र सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया थ। उनकी विदाई के समय संसद में मोदी ने बतौर मुख्यमंत्री उनके कार्यकाल की बहुत प्रशंसा की थी।

नया गठबंधनः जम्मू-कश्मीर से लद्दाख को पृथक कर केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया गया है। पिछले वर्ष जिला विकास परिषद के चुनाव में इसका साफ असर दिखा। जम्मू में भाजपा ने लगभग पूरी जीत हासिल की तो कश्मीर में गुपकार गठबंधन ने बाजी मारी। ऐसे में भाजपा को लगता है कि अगर जम्मू में सीट बढ़ने के बाद उसने बेहतर प्रदर्शन किया और आजाद कुछ कम सीटें भी कश्मीर में, तो नए गठबंधन का विकल्प खुला रहेगा।

परिसीमन का भी प्रभाव

गुलाम नबी आजाद ऐसे समय जम्मू कश्मीर की राजनीति में अपनी पार्टी बनाकर उतर रहे हैं, जब परिसीमन के बाद पूरी तस्वीर बदल गई है। परिसीमन के बाद जम्मू कश्मीर में विधानसभा सीटों में इजाफा हुआ है। वहां अब 83 की बजाय 90 विधानसभा सीटें हैं। जम्मू में 6 सीटें बढ़कर अब 37 की जगह 43 और कश्मीर घाटी में 1 सीट बढ़कर 46 की जगह 47 हो गई हैं। दोनों डिविजनों में सीटों का अंतर अब 9 से घटकर 4 रह गया है। पाकिस्तान में अवैध कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) के लिए आरक्षित 24 सीटें पहले की तरह खाली रहेंगी। यानी तकनीकी तौर पर विधानसभा की कुल सीटें 90 नहीं 114 रहेंगी। जहां तक लोकसभा सीटों का सवाल है उनकी संख्या पूर्ववत 5 (बारामूला, श्रीनगर, अनंतनाग-राजौरी, ऊधमपुर और जम्मू) ही रहेंगी। जम्मू क्षेत्र में भाजपा ने हमेशा राजनीतिक तौर पर बेहतर प्रदर्शन किया है। मौजूदा परिदृश्य में चुनावों में जो कश्मीर में बेहतर प्रदर्शन करता है वह लाभ में रहता है। नए परिसीमन के बाद अगर जम्मू के पक्ष में आंकड़े हो गए तो इसका असर पूरे इलाके की सियासत पर पड़ सकता है।

With Best Compliments

Rahul R. Choudhary
Mob. : 96944 46002

Rajesh B. Choudhary
Mob. : 98872 42220

Sharda Medical Store

शारदा मेडिकल स्टोर

Ph.: 0294-2429289, 2413372 (S)

शॉप नं. 1-2, श्रीनाथ प्लाजा, हॉस्पीटल रोड, उदयपुर (राज.)

रघु जैसा खुशनसीब हो हर हाथी

पिछले दस साल में बिजली के करंट से देश में 630 हाथियों को अपने प्राण गंवाने पड़े। राष्ट्रीय विरासत के इस जीव की रक्षा के लिए सम्बंधित विभागों में समन्वय बेहद ज़रूरी है। हाथी जैसे बड़े स्तनधारी जीवों के संरक्षण के लिए 'वन कनेक्टिविटी' काफी अहम है।

आनंद बनर्जी

जानवरों के छोटे-छोटे बच्चे मन को खूब लुभाते हैं। हाथी के बच्चे तो पूजनीय होते हैं। और, कोई अनाथ बाल जीव आप में भावनाओं का ज्वार ला सकता है। कार्तिकी गोंजाल्वेस द्वारा निर्देशित ऑस्कर अवार्ड प्राप्त पहली फिल्म द एलीफेंट व्हिस्परर्स को इसी रूप में देखना चाहिए। यह दिल को छू लेने वाली डॉक्यूमेंट्री है, जो हाथी के एक अनाथ बच्चे और उसकी देखभाल करने वाले एक वृद्ध जोड़े के बीच अपनत्व की डोर से बंधी है। तमिलनाडु के धर्मपुरी जिले में तीन हाथियों के करंट लगने के एक सप्ताह के बाद इस वृत्तचित्र ने ऑस्कर जीता है। सोशल मीडिया पर साझा उस घटना के वीडियो में हाथी के दो बच्चों को मृत मां और अन्य हथिनी के बगल में खड़े देखा जा सकता है, जो हादसे की जगह को छोड़ना नहीं चाहते।

हाथियों के साथ दिल को तार-तार कर देने वाले ऐसे दृश्य अब तेजी से आम होते जा रहे हैं। धर्मपुरी की घटना एक किसान के कारण हुई थी, जिसने अपनी फसल को जंगली सूअरों से बचाने के लिए बिजली के बाड़ लगा दिए थे। हालांकि, हाथी भी रात में इंसानी बस्ती की तरफ आते हैं, जिसका परिणाम उस दिन काफी खौफनाक निकला था। द एलीफेंट व्हिस्परर्स में शिशु हाथी रघु भी इसी तरह अपने माता-पिता को खो देता है, पर वह खुशनसीब साबित हुआ, क्योंकि तमिलनाडु का वन विभाग उसकी जान बचा लेता है और उसे एक पालक को सौंप देता है। मगर हाथी के कई बच्चे रघु की तरह भाग्यशाली नहीं होते।

फरवरी में 'स्ट्राइप्स ऐंड ग्रीन अर्थ' फाउंडेशन के सह-संस्थापक सग्निक सेनगुप्ता द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब से पता चला कि वर्ष 2012-13 से 2022- 123 के बीच बिजली के करंट लगने से 630 हाथियों की जान गई है। इस मामले में असम (120 मौत) शीर्ष पर था, जबकि ओडिशा (106 मौत) और तमिलनाडु (89 मौत) क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर थे। विशेषज्ञों का अनुमान है कि असली संख्या इससे कहीं ज्यादा होगी, क्योंकि हर साल 50 से अधिक हाथियों की मौत सिर्फ करंट लगने से होती है। करीब दो-तीन माह पूर्व ही राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड के पूर्व सदस्य विश्वजीत मोहंती ने ओडिशा के ढेंकानाल जिले के एक गांव में मृत हाथी की तस्वीर पोस्ट की थी। इस राज्य में अवैध शिकार व बिजली के करंट से हाथी अपनी जान गंवाते हैं। मोहंती बताते हैं कि हाथियों की सर्वाधिक मृत्यु-दर के साथ यह सूबा भारत के हाथियों के लिए कब्रिस्तान है। ओडिशा के वन और पर्यावरण मंत्री पी के अमात के राज्य विधानसभा में दिए वक्तव्य के मुताबिक, साल 2019 और 2022 के बीच यहां 245 हाथी मारे गए हैं।

एक दशक पहले की तुलना में भारत आज कहीं अधिक रोशन रहता है। नासा का 'नाइट टाइम लूमिनोसिटी मैप' (रात के समय की चमक संबंधी नक्शा) अब आर्थिक सर्वेक्षण (2021-22) का हिस्सा है। इसके 11वें अध्याय में उपग्रह से हासिल चित्रों व मानचित्र के जरिये विकास की जानकारी दी जाती है, यानी रात के समय रोशनी के जरिये आर्थिक प्रगति दिखाने का यह एक नया मापक है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले एक दशक में विद्युतीकरण में 40 फीसदी से अधिक इजाफा हुआ है और भारत पहले से कहीं अधिक रात में जगमग रहता है। हालांकि, सुदूर इलाकों में बिजली या विकास के पहुंचने की कीमत प्राकृतिक विरासत चुका रहे हैं। इसके अलावा, बिजली की तारों का गिरना वन्यजीवों के लिए गंभीर खतरा है। 2019 में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड ने इसका उपाय सुझाते हुए कहा था कि बिजली मंत्रालय को प्राथमिकता के आधार पर इन तारों को भूमिगत करना चाहिए।

बहरहाल, हाथियों को राष्ट्रीय उद्यानों व वन्यजीव अभयारण्यों तक सीमित नहीं किया जा सकता। वे खानाबदोश होते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही रास्ते से आना-जाना करते रहते हैं। इनमें से कई रास्तों पर अब हम इंसानों ने कब्जा कर लिया है, जिस कारण आवाजाही के लिए उनको कम जगह मिलती है। हाथी जैसे बड़े स्तनधारी जीवों के संरक्षण के लिए 'वन कनेक्टिविटी' काफी अहम है, लेकिन विकास संबंधी हमारी जरूरतों के कारण जंगल सिमटते जा रहे हैं।

भारत में एशियाई हाथियों की संख्या 27,000 से 30,000 के बीच होने का अनुमान है। मगर कई

लोग इस बात से अनजान होंगे कि ज्यादातर हाथी राष्ट्रीय उद्यानों व वन्यजीव अभयारण्यों के बाहर रहते हैं। हाथियों की करीब 70-80 प्रतिशत आबादी संरक्षित क्षेत्र से बाहर है। नतीजतन, मानव-हाथी संघर्ष को लेकर देश भर में चिंता बढ़ती जा रही है। पश्चिम बंगाल, केरल, असम, ओडिशा और तमिलनाडु में संरक्षण के हालात काफी नाजुक हैं। यहां बंदी हाथियों को तो पसंद किया जाता है, लेकिन जंगली हाथियों को नहीं, जबकि हाथी के सिर वाले देवता गणेश की यहां पूजा की जाती है। कोई भी जिला प्रशासन जंगली हाथियों का प्रबंधन नहीं करना चाहता, जबकि वे अब फसलों के आदी हो गए हैं, क्योंकि जलवायु संकट के कारण जंगली चारा कम हो गया है।

इंसानों की तरह हाथी भी परिवार पसंद जीव होते हैं। वे संवेदनशील और बुद्धिमान होते हैं। ऐसे में, आप उस बच्चे की मनोदशा, तनाव या आतंक की कल्पना कीजिए, जो अपने माता-पिता को खो देता है या मौत व हिंसा (मानव-हाथी संघर्ष) के बीच जीवन गुजार रहा होता है। यह भी सोचिए कि इस शत्रुतापूर्ण माहौल में हाथियों की किस तरह की नई पीढ़ी आकार ले रही है। दुखद है, एलीफेंट टास्क फोर्स की रिपोर्ट

'गज: सिक्योरिंग द फ्यूचर फॉर एलीफेंट्स इन इंडिया (2010)' की सिफारिशें भी कागजों पर ही हैं। महज एक सलाह पर काम हुआ कि एशियाई हाथी को भारत के राष्ट्रीय विरासत पशु के रूप में नामित किया गया।

द एलीफेंट व्हिस्परर्स का संदेश स्पष्ट है। राष्ट्रीय विरासत के इस जीव की रक्षा के लिए सरकारी विभागों में तालमेल की सख्त जरूरत है, साथ ही टास्क फोर्स के विशेषज्ञ के सुझावों पर भी गंभीरता दिखाई जाए। हाथियों को बचाने के लिए हमें अपने तंत्र को बेहतर बनाना होगा।

(लेखक वन्यजीव विशेषज्ञ हैं)

Dr. Sunil Goyal
M.S. (Surgery)

Tel. : 0294-2640852 (Hosp.)
2640251, 3291459 (R)

RAJASTHAN HOSPITAL & RESEARCH CENTRE

● MEDICAL ● SURGICAL ● MATERNITY

69, I-Block, Sector-14, Goverdhan Villas, UDAIPUR (Raj.)

Res. : 54, I-Block, Sector-14, Goverdhan Villas, UDAIPUR (Raj.)

E-mail : Karunagoyal@hotmail.com, rajhospital20@yahoo.com

सावन में शिवाराधना

महादेव प्रसन्न तो सब प्रसन्न

भगवान प्रसाद गौड़

भगवान शिव ही आदि और अनंत हैं, जो पूरे ब्रह्माण्ड के कण-कण में विद्यमान हैं। सावन के महीन में शिवाराधना का विशेष महत्व है। शिवार्चना के समय पंचाक्षरी मंत्र ॐ नमः शिवाय और महामृत्युंजय आदि मंत्र जप बहुत खास है। इनके जपानुष्ठान से सभी प्रकार के दुःख, भय, रोग, मृत्यु भय आदि समाप्त होकर दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

पुराणकारों के अनुसार संसार में सर्वाधिक भक्त भगवान शिव के ही हैं; क्योंकि असुर भी शिवजी की उपासना करते हैं। यहां तक कि भूत-प्रेतादि भी शिवजी के परिवार से माने जाते हैं अर्थात् शिवजी की उपासना में सभी शामिल है। क्यों न हो। भगवान शिव कल्याणकारी जो ठहरे। यह चराचर-स्थावर-जंगम जगत जो भी देखने में आता है, वह सारा शिव का ही रूप है-

'अंतस्तमो बहिः सत्वस्त्रिजगत्पालको हरिः। अंतः
सत्त्वस्तमोबाह्यस्त्रिंजगल्लयकृद्धरः।।'
अन्तर्बहीरजश्चेव त्रिजगत्सृष्टिकृद्धिधिः।
एवं गुणास्त्रिदेवेषु गुणभिन्नः
शिवः स्मृतः।।

अर्थात तीनों लोकों का पालन करने वाले भगवान हरि भीतर से तमोगुणी हैं और बाहर से सतोगुणी। भगवान ब्रह्मदेव, जो तीनों लोकों को उत्पन्न करते हैं, भीतर और बाहर उभय रूप में रजोगुणी हैं और भगवान पर ब्रह्म शिव तीनों गुणों से परे हैं। इसका रहस्य यह है कि सुख का रूप सतोगुण है, दुख का रूप तमोगुण और क्रिया का रूप रजोगुण है। भगवान विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं, इसलिए देखने में तो सृष्टि सुखरूप प्रतीत होती है, परंतु भीतर से अर्थात वास्तव में दुखरूप होने से विष्णु भगवान का कार्य बाहर से सतोगुणी होने पर भी तत्त्वतः तमोगुणी ही है। इसलिए भगवान विष्णु के वस्त्राभूषण सुंदर और सात्विक होने पर भी श्यामवर्ण हैं।

भगवान शिव सृष्टि का संहार करते हैं। वे देखने में तो दुखरूप हैं, पर वास्तव में संसार को मिटा कर परमात्मा में एकीभाव कराना उनका सुख रूप है। इसीलिए भगवान शिव का बाहरी शृंगार तमोगुणी होने पर भी स्वरूप सतोगुणी है और उनका शीघ्र प्रसन्न होना भी, जिसके कारण वे आशुतोष कहलाते हैं, सतोगुण का ही स्वभाव है।

भगवान ब्रह्मदेव सृष्टि का निर्माण करते हैं, इसीलिए वे रक्तवर्ण हैं, क्योंकि क्रियात्मक स्वरूप को शास्त्रों ने रक्तवर्ण ही बतलाया है। अतः शिवजी की उपासना के अंतर्गत भगवान ब्रह्मा एवं विष्णु की उपासना स्वतः ही आ जाती है। शिवपुराण में भगवान शिव के परात्पर निर्गुण स्वरूप को सदाशिव, सगुण स्वरूप को महेश्वर, विश्व का

भोलेनाथ का अभिषेक

- सावन मास भगवान शिव का अत्यंत प्रिय महीना है इस महीने में भगवान शिव का पूजन करने से वे अत्यंत प्रसन्न होते हैं और यदि पूजा में बेलपत्र का प्रयोग किया जाए तो शंकरजी और भी प्रसन्न हो जाते हैं।
- मान्यता है कि बेलपत्र चढ़ाने से शिवजी का मस्तक शीतल रहता है। तीन पत्तियों वाला बेलपत्र सर्वोत्तम माना जाता है। इसके अलावा पत्तियां खराब नहीं होनी चाहिए। बेलपत्र चढ़ाते समय जल की धारा साथ में अर्पित करने से इसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।
- सोमवार, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा और संक्रांति को बेलपत्र नहीं तोड़ना चाहिए। सावन माह में इन दिनों की पूजा के लिए इन्हें पहले तोड़कर रख लें। बेलपत्र कभी भी खरीदकर लाया गया हो शिवजी पर चढ़ाया जा सकता है। इतना ही नहीं एक बेलपत्र को कई बार धोकर भी चढ़ा सकते हैं।
- कहते हैं जिन घरों में बेलवृक्ष होता है वहां शिवकृपा बरसती है। बेलवृक्ष को घर के उत्तर पश्चिम में लगाने से यश कीर्ति की प्राप्ति होती है। उत्तर-दक्षिण में होने पर सुख शांति और मध्य में लगे होने से घर में धन और खुशियां आती हैं।

सृजन करने वाले स्वरूप को ब्रह्मा,पालन करने वाले स्वरूप को विष्णु और संहार करने वाले स्वरूप को रुद्र कहा गया है। रुद्र का दूसरा अर्थ यह भी है कि जो संपूर्ण दुखों से मुक्त करा दे - रूजं दुखं द्रावयतीति रुद्रः।

समुद्र मंथन में प्रयासरत देवताओं और असुरों ने अमृत की अभिलाषा से जो अथक परिश्रम किया, उसमें दैवयोग से अमृत के पूर्व हलाहल विष निकल आया। परिणामस्वरूप उस विष ने देवताओं और असुरों को ही नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि को ही भस्म करना प्रारंभ कर दिया। समस्त ब्रह्मांड त्राहि-त्राहि कर क्रंदन करने लगा। भगवान शंकर ने समस्त जीवों के त्राण के लिए भयंकर विष को लोगों के देखते-देखते अपने कंठ में धारण कर लिया।

गणपति-वाहन-मूषक और शिव भूषण सर्प बैरी होने पर भी समन्वय शक्ति से साथ-साथ रहते हैं। शिव भूषण सर्प और सेनापति वाहन मयूर का भी बैर, नीलकंठ के विष और चंद्रमौलि के अमृत में भी बैर, भवानी वाहन सिंह और शिव वाहन बैल में भी बैर, काम को भस्म करके भी स्त्री रखने में परस्पर विरोध, शिव के तीसरे नेत्र में प्रलय की आग और सिर निरंतर धारामयी गंगा से ठंडा, यह भी परस्पर विरोधाभास ऐसे दक्ष-जमाता राजनीतिज्ञ होने पर भी भोले-भाले। परंतु इस सहज परस्पर विरोधाभास में भी नित्य समन्वय। यह देवाधिदेव महादेव की समन्वय शक्ति का ही परिचायक है।

ऐसे भगवान सदाशिव के जिस संहारक स्वरूप को रूद्र कहा गया है। उसकी उपाधियां अनंत हैं। एकादश रुद्रों-शंभू, पिनाकी, गिरीश, स्थाणु, भर्ग, सदाशिव, शिव, हर शर्व, कपाली तथा भव की कथाएं न केवल महाभारत व पुराणादि में हैं, बल्कि उनका उल्लेख ऋग्वेदादि में भी है।

विश्व में वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर, गाणपत्य आदि जो सम्प्रदाय हैं, उनमें शैव अधिक हैं। क्योंकि पंच देवों में शिव, शक्ति, गणेश तो शिव परिवार से ही हैं। शिव पुराण के अनुसार भगवान विष्णु और ब्रह्मा भी देवाधिदेव शिव के रूप हैं।

With Best Compliments

Hitesh Gandhi
Managing Partner

GMS Since 1976

GUJARAT MACHINERY STORES

Auth. Distributors For:

DUTRON® Kanaflex
DUPLON NYLON BRADED FLEXIBLE PVC PIPE
DUTRON H.D.P.E. R. PVC. C. P.V.C. PLUMBING & SWR Pipes
वासल P.V.C. TUBING
Ventura Pumps
Pluga Franklin Electric
PRAKASH SURYA GI PIPE
TUFROPES DESIGNED TO OUTPERFORM
neoseal Seal of Trust

21, Ashwini Bazar, Udaipur (Raj.) Ph.: 0294-2526784, 2422446
gmsudp@yahoo.in sachinsaleco@yahoo.com
Godown: E-42, M.I.A., Road No. 4, Opp. Adarsh Automobiles, Udaipur (Raj.) Ph.: 0294-2493839

सरेराह मौत का मंजर

देखते रहे लोग, सोती रही सरकार

समाज और देश में बढ़ रहे सवाल, किसके पास जवाब

राजवीर

कभी-कभी हिंसा के ऐसे दृश्य सामने आते हैं कि निंदा के लिए शब्द कम पड़ने लगते हैं। दिल्ली के शाहबाद डेयरी इलाके में लड़की की जिस तरह सरेआम हत्या की गई, उसे भुलाना मुश्किल है। मुम्बई में युवती की हत्या कर शव के टुकड़े कुत्तों को खिलाने का एक और जघन्य अपराध सामने आया है। निर्ममता हमेशा से हमारे समाज के किसी कोने-अंधेरे में रहती आई है, पर इस मामले में जिस तरह से सरेराह हिंसा उसके प्रति लोगों में जो शर्मनाक उदासीनता देखी गई है, वह अपने आप में किसी अपराध से कम नहीं है।

दिल्ली के शाहबाद डेरी इलाके में 28 मई की शाम सनसनीखेज वारदात हुई। दोस्ती तोड़ने और बातचीत न करने से नाराज एक युवक ने किशोरी की बर्बरता से हत्या कर दी। सरेराह हुई इस घटना में आरोपी युवक ने पहले चाकू के ताबड़तोड़ 20 से अधिक वार किए। इसके बाद पत्थर से कुचल दिया। पुलिस ने आरोपी युवक को अगले दिन बुलंदशहर से गिरफ्तार कर लिया। सोलह वर्षीय साक्षी परिवार सहित जेजे कॉलोनी में रहती थी। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि साक्षी की साहिल खान से दोस्ती थी, लेकिन कुछ समय से दोनों के बीच बातचीत बंद थी। 27 मई को भी दोनों के बीच झगड़ा हुआ था। पुलिस के अनुसार साक्षी 28 मई को अपनी सहेली के घर जा रही थी। तभी रास्ते में साहिल ने उसे रोक लिया। पहले उससे बात की और फिर कमर से चाकू निकालकर ताबड़तोड़ वार करना शुरू कर दिया। साक्षी ने खुद को बचाने की कोशिश की, लेकिन घायल होने के बाद वह जमीन पर गिर पड़ी। साहिल चाकू और पत्थर से हमले के बाद साक्षी को मरा समझकर मौके से फरार हो गया। साक्षी को अस्पताल में चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। वह हत्यारा एक नाबालिग लड़की को मारता रहा, लोक आसपास से अपनी ही धुन में गुजरते रहे। हत्यारे ने चाकू से वार पर वार किए और लड़की का सिर तक कुचल दिया, तब भी लोग बचाव के लिए सामने नहीं आए। कोई एक तमाशबीन भी शोर तक मचाने के लिए कुछ पल खड़ा न हुआ। एक व्यक्ति ने हत्यारे का हाथ पकड़ने की कोशिश की पर झटके जाने के बाद वह भी हिम्मत न जुटा सका। साक्षी अकेली जूझती रही और अंतत: समाज की उदासीनता देख वह भी हार गई। उस लड़की के माता-पिता बिलख रहे हैं और हत्यारे के लिए कड़ी से कड़ी समाज की मांग कर रहे हैं। यह अच्छी बात है कि काफी कम समय में पुलिस अपराधी तक पहुंच गई। अब इस मामले में पूरी तेजी के साथ न्याय सुनिश्चित किया जाना चाहिए। ऐसे मामलों में त्वरित सजा से ही समाज में सही संदेश दिया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, अपराधी लड़के को कथित रूप से यह शिकायत थी कि लड़की उससे दोस्ती रखना नहीं चाहती थी। क्या वह यह मानता था कि किसी लड़की की मर्जी का कोई अर्थ नहीं है? क्या कोई लड़की अपनी मर्जी से दोस्त भी नहीं चुन

पहले भी हुई हैं ऐसी घटनाएं

जनवरी 2023

आदर्श नगर इलाके में बात करने से मना करने पर युवती को चाकू से गोदा था

मई 2022

महरौली इलाके में आफताब अमीन पूनावाला ने लिव इन पार्टनर श्रद्धा वाकर की हत्या के बाद उसके 35 टुकड़े कर जंगल में फेंक दिए थे

सितंबर 2021

उत्तमनगर इलाके में अंकित ने 22 साल की युवती पर चाकू से कई हमले कर उसकी हत्या कर दी थी

सितंबर 2016

बुराड़ी में सुरेंद्र ने सरेआम पूर्व प्रेमिका पर कैंची से 22 बार हमला कर हत्या की थी

जुलाई 2015

आनंद पर्वत में छेड़छाड़ के विरोध पर दो भाइयों ने 11वीं की छात्रा की हत्या की थी

(नोट: सभी घटनाओं में आरोप हैं)

उदयपुर में भी मारपीट का मामला

उदयपुर (राज.) के अंबामाता थाना क्षेत्र की युवती पर एक युवक व उसके पिता व भाई द्वारा धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने और मारपीट का ऐसा ही मामला सामने आया है। आरोप है कि धर्म परिवर्तन और शादी नहीं करने पर युवक ने उसके टुकड़े-टुकड़े करने की धमकी दी। पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर लिया है। युवती ने 31 मई को मामला दर्ज करवाया कि उसकी दोस्ती आयड़ निवासी मोहम्मद आसिफ से थी। उसने आरोपी से संबंध विच्छेद करने को कहा तो आरोपी ने उसके साथ मारपीट की और धर्म परिवर्तन कर शादी करने का दबाव बनाया। इनकार करने पर उसने मारपीट की। पीड़िता ने आरोपी के पिता अब्दुल रज्जाक और भाई खालिद बरकती को भी इस बारे में बताया तो उन्होंने भी उससे कहा कि वह धर्म परिवर्तन कर लें, अन्यथा आसिफ उसे मार देगा। पुलिस ने मामले में लिप्त आरोपी पिता व दोनों पुत्रों को 1 जून को अदालत में पेश किया तो वहां मौजूद लोगों ने तीनों की जमकर धुनाई कर दी। मामले की गंभीरता पर मौके पर पुलिस अधीक्ष विकास कुमार भी पहुंचे। बाद में बंद कमरे में पीठासीन अधिकारी ने मामले की सुनवाई की। पुलिस आगे की कार्रवाई कर ही है।

सकती ? क्या जबरन दोस्ती मुमकिन है ? क्या कोई दोस्ती नहीं करेगा, तो उसकी हत्या हो जाएगी ? यह दुस्साहस कहां से आ रहा है ? समाज और देश में ऐसे सवाल बढ़ते जा रहे हैं, जिनका जवाब सभी लोगों को सोचना चाहिए।

शव के टुकड़ों को उबाला: लिव इन पार्टनर की हत्या के बाद शव के टुकड़े करने का जून के पहले सप्ताह में मुम्बई में एक और मामला सामने आया है। मीरा रोड इलाके में 56 साल के आरोपी मनोज ने 32 साल की अपनी लिव-इन-पार्टनर सरस्वती वैद्य की हत्या कर शव को आरी से काट कर टुकड़े कर दिए। उसे पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। 7 जून को सामने आई घटना के अनुसार आरोपी तीन-चार दिन से कुत्तों को कुछ खिला रहा था। जिसकी पड़ोसियों द्वारा पुलिस से शिकायत के बाद दिल दहलाने वाला घटनाक्रम साामने आया। आरोपी ने कुकर में शव के टुकड़ों को उबाला और दो-तीन दिन तक कुत्तों को खिलाता रहा। उदयपुर जिले के मावली कस्बे में भी पिछले दिनों एक बच्ची के साथ दुष्कर्म कर हत्या कर दी गई थी और बाद शव के टुकड़े कर जंगल में फेंक दिए गए।

समीक्षा

यूं ही बस चुप रहो

'यूं ही बस चुप रहो' डॉ. जयप्रकाश भाटी नीरव की गंभीर, वैचारिक एवं दार्शनिक कविताओं का संग्रह है। भावुकता और संवेदना की गंभीर पहचान के साथ उनका अपना काव्य संसार है। यह उनकी भाव समृद्धि के लिए अतिरिक्त ऊर्जा है। इस संकलन में कवि की मानस अनुभूतियों के मंथन की अभिव्यक्ति है। उनके जीवन की अनुभूतियों के भाव चित्र और जीवन का संगीत है इस संग्रह में। अनन्त यात्रा की ध्वनियां भी इन कविताओं में सुनाई देती है। मौत की आहट और उसकी पदचापों को भोगने वाला ही अनुभव कर सकता है। मृत्यु-शैया पर पड़े अपने प्रिय की छटपटाहट व अनन्त की ओर उसके प्रस्थान का बोध बहुत ही मारक होता है। वह कुछ नहीं कर पाता सिर्फ असहाय नेत्रों में अश्रु भरकर देखते रहना उसकी नियती है। वह आशा-निराशा के बोध से दूर एक अलग ही भाव जगत में पहुंच जाता है। कविता एक बैचेनी ही तो है। कवि अपने परिवेश में जीता और संघर्ष करता है। 'यूं ही बस चुप रहो' की कविताएं स्पष्ट करती हैं कि कवि अंतर संघर्ष में जी रहा है। उसका यही अंतर-संघर्ष कविताओं के रूप में प्रकट है। चुप रहना शक्ति देता है। मौन की मारक क्षमता बहुत गहरी होती है। यह कमजोर व्यक्ति की नहीं अपितु शक्तिशाली व प्रबल जिजीविषा व्यक्ति की पहचान है। मेवाड़ की महान संत और आध्यात्मिक शख्यिसत भूरी बाई ने मौन को प्रबल ताकत बताया है। आशा है 'यूं ही बस चुप रहो' को सहृदय पाठक दिल से स्वीकार करेंगे।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना

(समीक्षक राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव हैं)

Mahendra Singhvi
Director

GSTIN : 08AFBPS9355Q1ZH

KANAK
CORPORATION

General Merchant & Commission Agent

337, 338, 3rd Floor, Samridhi Complex,
Opp. Main Gate Krishi Upaj Mandi, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294 2482911 to 16 Mo.: 93528 55555
Email: vpsinghvi@gmail.com

तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग जरा

वेदव्यास

यह राजस्थान का दुर्भाग्य है कि यहां जो भी मान्य और पुरस्कृत हो जाता है वह ऋषि बनकर अपने घर में बैठ जाता है। वह अपने को ही साहित्य और समय की परम्परा समझने लगता है तथा नए रचनाकार को एक साथी संवादी बनाने की जगह उसे अपना चेला बनाने की कोशिश अधिक करता है। यहां महावीर प्रसाद द्विवेदी की तरह नई साहित्यिक प्रतिभाओं के साथ कोई मेहनत नहीं करता लेकिन अपनी पालकी उठवाने का दम्भ अवश्यक पाले रहता है। कई लेखक अपवाद भी हैं लेकिन कुल मिलाकर राजस्थान में साहित्यकार को समाज और समय के स्तर पर समझने का कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। यहां बाहर की पत्र-पत्रिकाओं में छपने वालों को सभी मान्यता देते हैं लेकिन अपने आसपास उसके सृजन और सरोकार का कोई नोटिस नहीं लेते।

राजस्थान में साहित्य जगत की तो महिमा ही न्यारी है। यहां लेखक, समाज की जगह अपने घर की चिंता करता है। यहां लेखक मनुष्य मात्र के लिए नहीं केवल अपने लिए प्राण न्योछावर करता है। साहित्य पढ़ने की उसे आदत नहीं है। समकालीन साहित्य की लघुपत्रिकाएं मंगवाकर पढ़ने का उसका उत्साह नहीं है। आजकल वह महानगर में प्रेस क्लब में अपनी कविता के नायक को ढूंढ़ रहा है। बहुत बेचैन है लेखक। उसे अब किसी पर भरोसा नहीं है। कोई बाहर का लेखक कभी किसी सभा–व्याख्यान में आता है तो वह भी भागता–भागता मुंह दिखाई कर जाता है। अब लेखक का आधा समय दफ्तर की नौकरी में और बाकी का समय तेरी–मेरी विवेचना में बीत जाता है। उसकी दिन में एक बार किसी अखबार के संपादक से मिलने की इच्छा जरूर होती है लेकिन अपने किसी लेखक साथी से मिलने का मन बहुत कम करता है। इस लेखक को दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखना अच्छा लगता है। उसे आकाशवाणी के निमंत्रण से भी खुशी होती है। वह सारे काम करता है पर पढ़ने को पुस्तकें नहीं खरीदता। यदि कोई साथी प्रेम से अपनी पुस्तक उसे भेंट कर दे तो वह उसे पढ़ता नहीं है। वह हमेशा प्रदेश के बाहर जो कुछ घटित हो रहा है उसे ही साहित्य मानता है। उसे आत्मप्रचार में बहुत मजा आता है। उसे व्यंग्य और विनोद की भाषा अच्छी नहीं लगती। वह हमेशा यारों के यार की तरह अपने हम प्याले और हम नवाले की कविता/कहानी को ही उल्लेखनीय मानता है। उसकी दुनिया भी कुएं के मेंढक की तरह है और उसे अच्छी रचना पढ़कर किसी लेखक को कोई पत्र लिखने की कोई इच्छा ही नहीं करती। वह लेखक परिवार के शादी–ब्याह में भी नहीं जाता और किसी लेखक के लिए किराया–भाड़ा खर्च करके अपना शहर नहीं छोड़ता। अब यहां लेखक या तो किसी सभा/सम्मेलन में मिलते हैं या फिर रेडियो और दूरदर्शन की साझा रिकॉर्डिंग में दिखाई देते हैं। यहां करीब सभी लेखकों के घर पर दफ्तर में फोन लगे हुए हैं लेकिन आपस में बातचीत को सामाजिक अपराध मानते जाता हैं। और क्या हाल है? इससे आगे उनका कोई संवाद ही नहीं बढ़ता। यहां लेखक की अकड़ भी इतनी है कि उसे आलोचना–समालोचना बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होती। वह किसी लेखक की मौत पर नहीं जाकर उसके तीये की बैठक में जाना पसंद करता है। वह प्रकाशक की दुकान पर तो रोज चक्कर लगाएगा लेकिन किसी दूसरे लेखक के घर कभी नहीं जाएगा। इस लेखक को विचारधारा से बंधन महसूस होता है। इसे विचार में सुविधा के रास्ते बंद हो जाने का खतरा दिखता है। यह सरकार और व्यवस्था के चरित्र पर बहस और निर्णय नहीं करता। लेखक की यह दुनिया इतनी छोटी है कि पुस्तक का लोकार्पण करवाने का भी इसका एक नुस्खा है। एक मंत्री, एक संपादक और एक आयोजकीय प्रकाशक। आप कभी किसी लोकार्पण में जाकर देखें तो पता चलेगा कि जिस पुस्तक को लेकर जलसा है उस पुस्तक का लेखक ही मंच पर सबसे बाद में बुलाया जाता है और माला भी सबसे बाद में उसे पहनाई जाती है।

मेरा आग्रह है कि दीवार पर लिखे सत्य को पढ़िए, मनुष्य के भीतर गुजरते हुए समय को जानिए और अपने कथित अहंकार और श्रेष्ठता के दायरों से बाहर आइए। शब्द को उसके भविष्य की तलाश है। साहित्य शब्दों की एक ईमानदार दुनिया का नाम है तथा आप उसे किसी बाजार में ढूंढ़ने मत जाइए और आज ही अपने भीतर ढूंढ़िए।

वह लेखक अखबार में अपने नाम छापने को ही आज का सबसे बड़ा सुख मानता है। संपादक और पत्रकार इसीलिए उसे एक लेखक से ज्यादा प्रिय है। यह लेखक परिवार भी भारत की तरह विविधता में एकता का आदर्श उदाहरण है। यहां कविवर किसी कहानीकार को नहीं पढ़ते। निबंधकार किसी उपन्यास में हाथ नहीं डालते। लघुकथाकार और बाल साहित्य के लेखक को तो यहां चिराग लेकर ढूंढ़ने पर ही मिलते हैं। महिला–लेखिकाओं यहां अपनी अलग ही चौपाल जुड़ती है। यदा–कदा में सभी का सृजन और साक्षात्कार सिमटा हुआ है और रही सही कसर दैनिक अखबारों के रंगीन परिशिष्टों ने पूरी कर दी है। मांग और पूर्ति का जबरर्दस्त माहौल चल रहा है। अब कविता से अधिक कहानी के और कहानी से अधिक किसी खरबूजे–तरबूजे के फीचर पर लिखकर अधिक कमाया जा सकता है।

लेखक की पवित्रता अब इसके बावजूद भी खंडित होने को तैयार है कि अधिकांश समाचार पत्रों में साहित्य का विशेष महत्व नहीं है तथा रेडियो–दूरदर्शन पर गिरोहबंदी के बिना माल की खपत नहीं है। लघुपत्रिकाओं में व्यापक प्रचार–प्रसार और पारिश्रमिक नहीं मिलता इसलिए भी लेखक इनसे कतराता है। बहरहाल लेखकों का एक बहुत बड़ा वर्ग अब दैनिक समाचार पत्रों के परिशिष्टों की उपभोक्ता सामग्री बन गया है। गीतकार नई कविता के अखाड़ों से परेशान रहे हैं। अब छंद और मुक्तछंद में भी कवि बंटे हुए हैं। इसी तरह लेखकों के अन्य भी कई विभाजन है। जिसकी दाल जिस पानी में अच्छी गलती है वह उस रसोईघर का बखान करता

है। किसी को दूरदर्शन वाले, किसी को आकाशवाणी वाले, किसी को अकादमी वाले तो किसी को अखबारी संपादक मार्गदर्शन देते हैं। विचारधारा वाले संगठनों के पास अब कोई नहीं जाता क्योंकि उनके पास पत्रिका/ प्रकाशन/ पुरस्कार/ आयोजन और एकल कार्यक्रमों की सुविधाएं नहीं हैं। राजस्थान की तो एक विशेषता यह भी है कि यहां संस्था गतिविधियों का भारी अकाल है। जो बड़ी-बड़ी संस्थाएं हैं तो वे भी किसी न किसी की उपग्रह बनी हुई है।

यहां कविता में तो जाति और धर्म की कोई लड़ाई नहीं है लेकिन कवियों के भीतर की दुनिया यहां संस्थानों/प्रतिष्ठानों के धर्म-ईमान के साथ बंटी हुई है। यहां साहित्यजगत में किसी को किसी के मरने-जीने की खबर नहीं है। यहां प्रकाशित पुस्तकों में से पांच प्रतिशत पुस्तकें ही समीक्षा तक पहुंच पाती हैं। महानगर का लेखक फायदे में है क्योंकि यहां राजनीति और गठबंधन की पूरी सुविधाएं हैं। यहां गांव और अंचल के लेखक की कहीं कोई गिनती नहीं है तथा उनके अच्छे लिखे को भी शहर का मीडिया और प्रबंधक जब तक मान्यता नहीं देता, तबतक उनका किया-कराया ही सब बेकार है। यहां 99 प्रतिशत लेखक सरकारी सेवा में हैं इसलिए यहां के लेखक में व्यवस्था और राजनीति से बचकर चलने की आदत है। यहां बड़े-बड़े पुराने लेखक नए और उभरते रचनाकार को नहीं पढ़ते और उनके साहित्य सृजन पर कभी कोई दो शब्द नहीं लिखते। यहां वरिष्ठ लेखकों की यह इच्छा तो रहती है कि नई पीढ़ी और समय का साम्राज्य उनके प्रभाव में रहे लेकिन वे खुद कभी दूसरे लेखकों के लिए अपने घर के बाहर नहीं निकलते। लेखकों में रचना के स्तर पर और व्यक्तिगत स्तर पर एक जीवंत संवाद का अभाव है। यहां कोई लेखक अंचल के छोटे-छोटे समाचार-पत्रों में कभी कुछ नहीं लिखना चाहता। यह अकादमी की पत्रिका को आसानी से घास नहीं डालता यह उसकी विशेषता है।

यहां का लेखक, प्रकाशकों का भी बहुत सताया हुआ है। बिना दस चक्कर लगवाए कोई प्रकाशक किसी लेखक से कभी बात ही नहीं करता। प्रकाशक की सारी गणित यहां पाठ्यक्रम समितियों के सदस्य, केंद्रीय पुस्तक खरीद समिति के सदस्य, बड़े प्रोफेसर, बड़े अफसर और जो पुस्तकें बिकवा सकें उनके चारों तरफ ही घूमती रहती है। यह प्रकाशक केवल चमत्कार करता है तथा पूरा अकादमी अनुदान लेखक से वसूल करके ही लेखक की पांडुलिपि की तरफ देखता है। लेखक के पास प्रकाशक की शरण में जाने के अलावा कोई रास्ता ही नहीं है और रॉयल्टी और कॉपीराइट जैसी बातें तो यहां इने-गिने रुतबेवाले-सम्पर्कशील लेखकों को ही नसीब हैं। यहां साहित्य का भूत, भविष्य और वर्तमान हिंदी के व्याख्याता ही तय करते हैं तथा आयोजन, प्रायोजन, मान्यता और स्थापना के सारी चौपड़ यही लोग बिछाते हैं।

यहां एक छोटे से अखबार का या किसी लघुपत्रिका का संपादक ही एक बड़े और प्रतिभाशाली लेखक पर भारी पड़ता है। यहां साहित्य की अनेक लघुपत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं लेकिन इनमें कोई आपसी संवाद और साझादारी नहीं है। सभी तरफ 'वन मैन शो' चल रहा है। क्योंकि सामूहिकता, संगठन, विचारधारा और सामाजिक प्रतिबद्धताओं से सबको घाटे का अंदेशा रहता है।

बहरहाल यहां का साहित्य और समाज जिस विसंगतियों से जूझ रहा है उसके बावजूद भी यहां के रचनाकार की मुख्यधारा साम्प्रदायिकता और सामंतवाद विरोधी है। यदि साहित्य के स्वस्थ आयोजन, प्रकाशन और मूल्यांकन के विकल्प तैयार किए जाएं तो यही अपेक्षित और एकान्तवादी लेखक एक सार्थक संघर्षशील साझीदार भी बन सकता है। राज्य में लेखक की पिछले दो हजार साल की लड़ाई सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मोर्चों पर 'ठकुराई' के खिलाफ रही है।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार हैं)

Suyog Mattha
Director

With Best Compliments

Shree Matta Fabrication Works

Automation System For
Rolling Shutter, Gates,
Doors and Barriers

17, B Surbhi Vihar I/s Keshav Nagar, Udaipur (Raj.)
Mobile : 9414158875, 9414168935
E-mail : smatthafabrications@gmail.com

कई बीमारियों से रक्षा करता है जामुन

जामुन कम समय के लिए आने वाला बेहद लाभदायक फल है। इसके सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। यह कई गंभीर बीमारियों से भी बचाने में कारगर है। इसके फायदों के बारे में जानकारी दे रही हैं- श्रुति गोयल

जामुन गर्मियों का खास फल है, जो कई स्वास्थ्य लाभों से भरपूर है। इसमें आयरन और फॉस्फोरस जैसे जरूरी तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। कोलीन और फोलिक एसिड भी होता है। जामुन में भरपूर मात्रा में ग्लूकोज और फ्रूक्टोज पाया जाता है। इसमें लगभग वे सभी जरूरी लवण पाए जाते हैं, जिनकी शरीर को आवश्यकता होती है। जामुन दस्त को रोकता है। कैंसर, हृदय रोग, डायबिटीज, अस्थमा, जिगर की समस्याओं और गठिया से भी यह बचाव करता है।

फायदे हैं अनेक

डायबिटीज को रखे नियंत्रित

डायबिटीज के रोगियों के लिए जामुन एक रामबाण उपाय है। जामुन का फल, पत्ते और बीज डायबिटीज रोगी के लिए काफी फायदेमंद हैं। जामुन में एंटीडायबिटिक विशेषताएं हैं। यह स्टार्च को ऊर्जा में बदलने और रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित रखने में मदद करता है। जामुन के बीज डायबिटीज में खूब फायदेमंद हैं। इन्हें सुखाकर पीस लें। इस पाउडर को नियमित रूप से खाने से डायबिटीज नियंत्रित रहती है।

स्मरणशक्ति करे तेज: मस्तिष्क की कोशिकाओं की क्षमता घटने से स्मरणशक्ति कमजोरी हो जाती है। जामुन में एंटी ऑक्सिडेंट खासकर फ्लेवोनायड पाए जाते हैं, जो स्मरण शक्ति ठीक रखने में सहायक हैं।

हृदय को रखे स्वस्थ: पोटैशियम से भरपूर होने के कारण हृदय को स्वस्थ रखने में बहुत सहायक होता है। 100 ग्राम जामुन में लगभग 55 मिलीग्राम पोटैशियम पाया जाता है, जो उच्च रक्तचाप और स्ट्रोक सहित कई तरह के हृदय रोगों से हमारा बचाव करता है।

हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ाए: जामुन में विटामिन सी और आयरन भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जिसकी वजह से जामुन खाने से हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ता है। शरीर में हीमोग्लोबिन बढ़ने से शरीर के विभिन्न हिस्सों में अधिक ऑक्सीजन का प्रवाह होता है, जिससे स्वास्थ्य ठीक रहता है। जामुन में पाया जाने वाला आयरन रक्त को शुद्ध करने का काम भी करता है।

त्वचा और आंखों के लिए लाभदायक: विटामिन ए आंखों के लिए लाभकारी होता है और यह जामुन में बहुत ज्यादा पाया जाता है। इसके अलावा जामुन में खनिज और विटामिन सी भी पाया जाता है, जिसे त्वचा के लिए अच्छा माना जाता है।

कैंसर में लाभयदायक: जामुन में कैंसररोधी गुण होते हैं। रेडिएशन थेरेपी और कीमोथेरेपी के बाद जामुन खाने से कैंसर के मरीज को काफी लाभ होता है, लेकिन ऐसे लोग अपने डॉक्टर की सलाह के बाद ही जामुन खाएं।

मुहांसे करे दूर: जामुन खाने से चेहरे के मुहांसे मिट जाते हैं। इसकी गुठलियों के पाउडर घोल से चेहरे पर लेप करके आधे घंटे बाद धोएं।

पाचन तंत्र को रखे दुरुस्त: पाचन क्रिया के लिए जामुन बहुत फायदेमंद है। पेट से जुड़ी कई तरह की समस्या दूर हो जाती है।

दस्त की समस्या से राहत: दस्त की समस्या से पीड़ितों को जामुन को सेंधा नमक के साथ खाना चाहिए। खूनी दस्त होने पर भी जामुन के बीज बहुत फायदेमंद साबित होते हैं।

एसिडिटी करे दूर: यदि एसिडिटी की समस्या है, तो काले नमक में भुना जीरा मिलाकर पीस लें। फिर इसके साथ जामुन का सेवन करें। एसिडिटी की समस्या दूर हो जाएगी।

संक्रमण से बचाव में कारगर: जामुन में जीवाणुरोधी, संक्रमणरोधी और मलेरियारोधी गुण पाए जाते हैं। जामुन का फल सामान्य संक्रमण से बचाने में मदद करता है। इसलिए संक्रमण से बचाव के लिए जामुन का सेवन किया जाता है।

दांत बनाए स्वस्थ: दांत और मसूढ़ों से जुड़ी कई समस्याओं के समाधान में जामुन विशेष तौर पर फायदेमंद है। इसके बीज के पाउडर से मंजन करने से दांत और मसूढ़े स्वस्थ रहते हैं।

स्वाद भी है खास

- जामुन को कई नामों से जाना जाता है। इसे जमाली, ब्लैकबैरी, काला जामुन, ब्लैक प्लम, राजमन आदि भी कहा जाता है।
- इसका स्वाद थोड़ा सा कसैला और अम्लीय होता है, लेकिन खाने के बाद अपने आप यह मीठा लगने लगता है।
- यह जून–जुलाई के महीने में पक जाता है और ग्रामीण, शहरी सभी बाजारों में उपलब्ध होता है।

इन बातों पर ध्यान दें

- एक दिन में 150 ग्राम से ज्यादा न खाएं। ज्यादा जामुन खाने से शरीर में दर्द, बुखार, गले या छाती में परेशानी हो सकती है।
- जामुन खाने के बाद कभी भी दूध का सेवन न करें।
- सर्जरी से 15 दिन पहले और 15 दिन बाद तक जामुन का सेवन नहीं करना चाहिए, अन्यथा शरीर में ब्लड शुगर का स्तर घट सकता है।
- जामुन का सेवन खाली पेट करने से कब्ज की परेशानी हो सकती है।

With Best Compliments

परतानी

नाक कान गला अस्पताल

ISO 9001 2008 CERTIFIED

- डायोड लेजर
- माइक्राडिब्राइडर
- साइलोएंडोस्कोप (लार की ग्रंथी)
- कोबलेटर एवं अन्य अत्याधुनिक उपकरणों द्वारा सर्जरी व जांच सुविधा
- VERTIGO CLINIC चक्कर आने की जांच
- स्पीच थैरेपी एवं डिजिटल हियरिंग एड

डॉ. लोकेश परतानी
एम.एस. (ई.एन.टी.)

डॉ. गरिमा गुप्ता
डी.एन.बी. (ई.एन.टी.)

डॉ. पूजा शर्मा
एम.एस. (ई.एन.टी.)

रीटा
ऑडियोलोजिस्ट एंड स्पीच थैरेपिस्ट

14, नाकोड़ा कॉम्पलेक्स, हंसा पेलेस के पास, सेक्टर 4, हिरणमगरी, उदयपुर
फोन : 0294-2462150 मो. : 9982362150

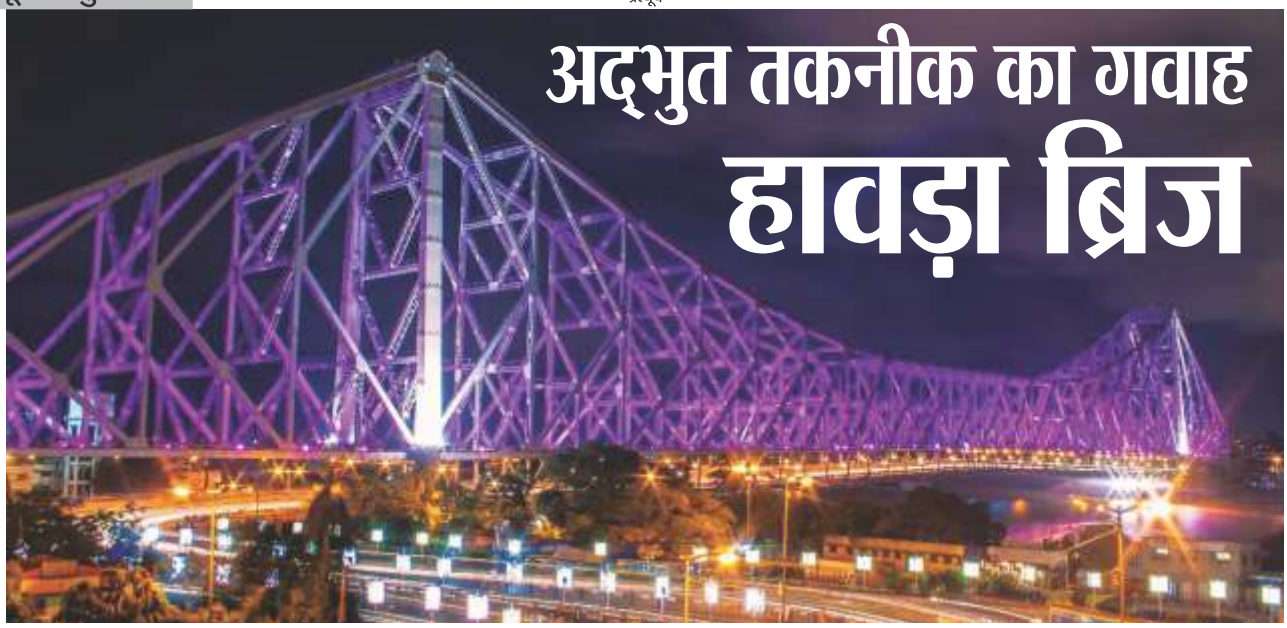

अद्भुत तकनीक का गवाह हावड़ा ब्रिज

दिव्यज्योति नंदन

कोलकाता स्थित हावड़ा ब्रिज के बारे में सैकड़ों कहानियां हैं। सबकी सब परी कथाओं जैसी हैरान करने वाली। मसलन एक बार एक बड़ा जहाज आया, जिसे इसके नीचे से आगे बढ़ना था, लेकिन वैसा उसके लिए संभव नहीं था। नतीजतन पुल में चाबी लगाकर इसे खोल दिया गया, यह दो हिस्सों में होकर किसी तोरण द्वार की तरह का बन गया और इसके बाद जहाज आगे बढ़ गया। बाद में चाबी लगाकर इसे पुनः अपने वास्तविक स्वरूप में ले आया गया।

यह कहानी हावड़ा ब्रिज की है, जो जितनी अपनी खूबसूरती, उतनी ही अपनी इंजीनियरिंग के चमत्कार के चलते दुनियाभर में मशहूर है। यह अपने पर बनी अनेक मिथकीय कहानियों के कारण भी बहुत लोकप्रिय है। एक कहानी यह भी है कि जब महात्मा गांधी की अस्थियों का विसर्जन इस पुल के पास हुगली नदी में किया गया तो कहते हैं पुल पर इतने लोग इकट्ठा हो गये कि पुल लचककर पानी छूने लगा था और फिर जैसे ही लोग पुल से बाहर आए तो वह पहले की तरह हो गया। कुछ लोगों का मानना है कि पुल झुककर महात्मा गांधी की अस्थियों का स्पर्श कर रहा है। 1965 के बाद से हावड़ा ब्रिज का सरकारी कागजों में नाम भले ही रवींद्रनाथ टैगोर सेतु कर दिया गया हो लेकिन लोग इसे आज भी हावड़ा ब्रिज के नाम से ही जानते हैं। वे न तो अंग्रेजों के दिये गये नाम कैंटीलीवर ब्रिज के नाम से और न ही बंगाल सरकार द्वारा दिये गये रवींद्रनाथ टैगोर सेतु से।

हावड़ा ब्रिज दुनिया के गिने चुने उन विख्यात पुलों में है जिसके आकर्षण से तमाम रचनाकार खासकर फिल्मकार भी बंधे हुए हैं। यह भारत का अकेला ऐसा पुल है जिस पर न सिर्फ दर्जनों बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग हुई है बल्कि कई हॉलीवुड फिल्मों की भी यहां शूटिंग हुई है। हावड़ा ब्रिज पर साल 1958 में इसी के नाम से फिल्म बनी थी। जिसमें गीता दत्त का एक गीत मेरा नाम

चिन चिन चू....बड़ा ही लोकप्रिय हुआ था। इसके बाद इस ब्रिज को फिल्म 'चाइना टाउन' में भी फिल्माया गया था जो 1962 में बनी थी। 1971 में राजेश खन्ना की मशहूर फिल्म 'अमर प्रेम' का भी एक गाना इस पुल के ऊपर शूट हुआ था। 1969 में 'खामोशी' के भी एक गाने की शूटिंग इस पुल पर हुई थीं। इसके अलावा भी देवानंद की 'तीन देवियां', राजकपूर की 'राम तेरी गंगा मैली', मणिरत्नम की 'युवा'और इम्तियाज अली की 'लव आजकल' तथा अनुराग बासु की फिल्म बर्फ की शूटिंग भी हावड़ा ब्रिज में हुई थी।

दुनिया के कुछ फिल्मकार तो इस पुल के दीवाने रहे हैं। उनका बस चलता तो वे अपनी हर फिल्म में इसे फिल्माते। ऐसे फिल्मकारों में सत्यजित रे का नाम सबसे ऊपर है और यह स्वभाविक भी है क्योंकि कोलकाता उनकी क्लासिक कमजोरी थी। सत्यजित रे के अलावा, रिचर्ड एटनबरो और मणिरत्नम भी इस फिल्म के भव्य विजुअल प्रॉपर्टी से हमेशा अभिभूत रहे हैं। शायद इस पुल की यह मिथकीय गाथा ही है कि जब ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरून भारत आये थे, तो वह भी इसे देखने का लोभ संवरण नहीं कर सके। सचमुच हावड़ा ब्रिज ब्रिटिश कालीन तकनीक का सबसे खूबसूरत नगीना है। यह पुल अपनी लोकप्रियता और खूबसूरती के लिए ही नहीं जाना जाता। इसकी ऐसी ही हैरतअंग्रेज करने वाली इंजीनियरिंग भी है। इस पुल का निर्माण 1939 में शुरू हुआ और 1943 में बनकर तैयार

हुआ। हालांकि इसके बनने की कोशिशों की शुरूआत 1930 से शुरू कर दी गई थी, फिर भी बनने की शुरूआत के बाद यह महज साढ़े पांच साल में बनकर तैयार हो गया जो उस समय के हिसाब से एक चमत्कार ही था, क्योंकि इस पुल के निर्माण में उन दिनों 26,500 टन स्टील का इस्तेमाल हुआ था और पूरे पुल में कहीं पर भी एक भी नट बोल्ट नहीं लगा। नट बोल्ट की जगह इस पुल में स्टील की प्लेटों को जोड़ने के लिए धातु की बनी कीलों, का इस्तेमाल किया गया है, जो उस समय एक बड़ी चमत्कारिक तकनीक थी।

एक तरह से झूलता हुआ यह पुल महज नदी के दो किनारों पर बने 280 फीट ऊंचे दो पायों पर टिका है। बाकी 1528 फीट लंबे और 62 फीट चौड़े पुल में कहीं एक भी खंभा या पिलर नहीं है। उस दौरान, यानी 1930 के दशक में इसके निर्माण में 333 करोड़ रुपये का खर्च आया था और इस पुल के बनाने में जो 26,500 टन स्टील का इस्तेमाल हुआ था, उसमें 23,500 टन स्टील की सप्लायी टाटा स्टील ने की थी। उन दिनों टाटा स्टील, को स्थापित करने वाले प्रोजेक्ट में से यह एक था। आज की तारीख में इस पुल से हर दिन से डेढ़ लाख से अधिक वाहन गुजरते हैं और तीन से पांच लाख लोग पैदल गुजरते हैं। यह तादाद उस अनुमान से 1000 प्रतिशत से भी ज्यादा है जो अनुमान इसके निर्माण के समय लगाया गया था। बावजूद इसके इस पुल में अभी तक तो जरा सी भी कोई खरोंच नहीं आयी जबकि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इस पुल पर जापान ने जमकर बमबारी भी की थी। लेकिन पुल सलामत रहा और उम्मीद से 10 गुना ज्यादा भार भी ढो रहा है।

झरोखा

रिश्तों का बदलता स्वरूप

गीता तिवारी

पता नहीं कब निकल गया समय?
मैं कब मां से बेटी बन गईऔर बेटी मेरी मां बन गई।
पर उसके और मेरे समझने के तरीके में बहुत अंतर है।
जब वह छोटी थी तो मैं उसे डांट कर हर बात समझाती थी। नहीं सुनने
पर उसकी शिकायतों का पुलिंदा पापा के सामने खोलती थी,
ताकि उस पर सीखने का दबाव बना रहे।
आज वह मेरे लिए पापा से लड़ बैठती है,
उनकी शिकायतों का पुलिंदा खोल।
हर उस चीज को वह मुझे प्यार से सिखाती है।
उसे मैं आईना देखने से रोकती थी।
आज वो मुझे कहती है आईने में अपने आप को निहारा करो मां।
मैं उसे छोटे कपड़े पहनने पर टोकती–रोकती थी।
वह मुझे जींस टॉप पहना कर खुश होती है।
मैं उसे बालों में तेल लगाकर चोटियां बनाने के लिए कहती थी।
वह मुझे खुले बाल रखने और हेयर स्टाइल बनाने को कहती है।
मैं उसे जिंदगी जीना सिखाती थी।
वह मुझे जिंदगी कैसे जी जाए सिखाती है।
मैं उसे बाहर जाने पर रोकती थी, दोस्तों के घर जाने पर पाबंदी
लगाती थी, कहती थी घर में ही सब कुछ है।
बाहर जाने की क्या जरूरत है।
और वो मुझे कहती है मां घर से बाहर निकलो, दोस्तों से मिलो, दुनिया
को देखो अभी तुमने जिंदगी जी ही कहां है।
उसकी इस सोच पर सोचती हूं, क्या सच में यह मेरी मां है या बेटी।
पर हां.... मेरे और उसके सोच के दरमियान।
रिश्ते की कड़ी और मजबूत होती गई।
और पता ही नहीं चला वह मेरी बेटी से कब मेरी मां बन गई?

जानवर के लिवर को इंसान जैसा बनाने की कोशिश

2023
में इंसानों पर परीक्षण करने की तैयारी में जुटे हुए हैं वैज्ञानिक

25-30
हजार लिवर प्रत्यारोपण की जरूरत भारत में हर साल होती है

01
लाख से ज्यादा लोग अमेरिका में अंग प्रत्यारोपण के इंतजार में इस समय

वाशिंगटन. एजेंसी। सूअर का दिल इंसान में लगाने की खबर तो पहले आ चुकी है, लेकिन अब अमेरिकी शोधकर्ता सूअर के लिवर को इस लायक बनाने का प्रयास कर रहे हैं, कि उसे इंसानों में प्रत्यारोपित किया जा सके।

सूअर के लिवर को इंसानों में प्रत्यारोपित करने के लिए पहला कदम अमेरिका के मिनीपोलिस की एक प्रयोगशाला में उठाया गया है। इसके तहत सबसे पहले सूअर के लिवर से उन कोशिकाओं को साफ किया जाता है, जिनके जरिए यह अपना काम करता है। जैसे-जैसे ये कोशिकाएं तरल में घुलती जाती हैं, इसका रंग बदलने लगता है, तब जो बचता है वह रबर जैसा लिवर का एक ढांचा होता है। इसकी रक्त कोशिकाएं खाली हो जाती हैं।

इस तरह होगा परीक्षण

मीरोमैट्रिक्स प्रयोगशाला के सीईओ जेफ रॉस के अनुसार यूं समझिए कि अंग को उगाया जा रहा है। 2023 में किसी भी समय इस लिवर का मानव परीक्षण किया जा सकता है, जो अपनी तरह का इतिहास में पहला परीक्षण होगा। अगर अमेरिकी एजेंसी फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन से सहमति मिलती है, तो शुरुआती परीक्षण मरीज के शरीर के भीतर नहीं बल्कि बाहर होगा। सूअर से इंसानी रूप में तब्दील किए गए लिवर को मरीज के बिस्तर के बगल में रखा जाएगा और वहीं से शरीर में जोड़ दिया जाएगा। बाहर से ही यह लिवर रक्तशोधन का काम करेगा।

प्रत्यारोपण की दिशा में बड़ा कदम

अगर यह नया लिवर काम कर जाता है, तो प्रत्यारोपण की दिशा में यह एक बड़ा कदम होगा। आगे चलकर यह किडनी प्रत्यारोपण का रूप भी ले सकता है।

न्यूयॉर्क के माउंट सिनाई अस्पताल में प्रत्यारोपण विभाग के प्रमुख डॉ. सैंडर फ्लोरमान ने बताया कि उनका अस्पताल इस प्रयोग में शामिल होने वाले चंद अस्पतालों में से है। डॉ. फ्लोरमान ने कहा, यह सुनने में साइंस फिक्शन जैसा लगता है, लेकिन कहीं तो इसकी शुरुआत होनी है। ऐसा भविष्य में जल्द होगा। दुनियाभर में मानवीय अंगों की भारी कमी है, जिसके कारण काफी संख्या में मौत होती है।

ऐसा पहले भी हुआ

पिट्सबर्ग यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर के सर्जन डॉ. अमित तेवर के अनुसार हमारे पास जितने अंग उपलब्ध है, उनसे मांग कभी पूरा नहीं होगी। वैज्ञानिक जानवरों को अंगों के स्रोतों के रूप में देख रहे हैं। इस तरह के कुछ प्रयोग पहले हो भी चुके हैं। बायोइंजिनियरिंग में सूअर के अंग को इंसानों जैसा बनाने की प्रक्रिया में किसी खास तरह के सूअर की जरूरत नहीं होती।

इंसान को लगाया गया था सूअर का दिल

अमेरिका में चिकित्सकों की एक टीम ने जनवरी 2022 में 57 वर्षीय मैरीलैंड निवासी डेविड बेनेट के शरीर में सूअर का दिल प्रत्यारोपित करने में सफलता हासिल की थी, लेकिन 2 महीने बाद ही डेबिड बेनेट की मौत हो गई थी। वैज्ञानिकों ने उस समय बेनेट की मौत की सही वजह नहीं बताई थी, उन्होंने केवल इतना कहा था कि डेविड की हालत कई दिन पहले ही बिगड़नी शुरु हो गई थी। बता दें कि सात जनवरी 2022 को यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलेंड मेडिसिन के चिकित्सकों ने यह सर्जरी की थी। व्यक्ति की मौत के बाद शोधकर्ता यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि उनकी मौत आखिर कैसे हुई?

प्रयोग शुरुआती चरण में

यह प्रयोग कुछ ऐसा है जो भविष्य में अंगों को इंसानों के लिए तैयार करने में काम आ सकता है। लेकिन अभी यह प्रयोग बहुत शुरुआती चरण में है। वैसे इस बारे में पहले भी शोध हो चुका है। अब मीरोमैट्रिक्स उसी कामयाबी के आधार पर तकनीक को आगे बढ़ाने में जुटी है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Purohit Cafe

A South Indian Food Joint

N. K. Purohit

आपका विश्वास ही हमारी पहचान

वर्ष 1970 से 1980 तक दुबई में तथा 1981 से 1986 तक लंदन-अमेरिका में सफल सेवाओं के बाद अब 1987 से उदयपुर शहर में

(तीन दशक से आपके विश्वास पर खरा सिद्ध)

❊ कैफे में पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें। ❊ आप व आपके परिवार की जायकेदार और लाजवाब पसंद, शुद्ध और स्वादिष्ट इडली, डोसा, मसाला और अन्य व्यंजन। ❊ सपरिवार बैठने की व्यवस्था। ❊ पूर्ण रूप से वातानुकूलित, शान्त एवं आरामदायक। ❊ सेवकों द्वारा विनम्र आवभगत।

"Anand Plaza" Nr. Ayad Bridge, University Road,
Udaipur (Raj.) 313 001 Ph. : 0294-2429635
Visit us : www.purohitcafe.com

राजस्थानी कहावतों में बारिश

अमित शर्मा

मौसम में परिवर्तन हो अथवा बारिश या संभावित प्राकृतिक आपदा आने वाली हो। कीट-पतंगे और पशु-पक्षी नाना प्रकार से प्रारंभिक संकेत दे देते हैं। मनुष्य आज भले ही वैज्ञानिक स्तर पर अध्ययन और उपकरणों के माध्यम से मौसम और प्राकृतिक आपदाओं के बारे में पूर्वानुमान या भविष्यवाणी करते हों, किन्तु जब प्राचीन काल में ये उपकरण और अध्ययन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी तब लोग, पक्षियों, जानवरों की गतिविधियों को देखकर मौसम के बदलते मिजाज को सटीक भांपने में देर नहीं लगाते थे। सिर्फ अनुमान तक ही यह बात सीमित नहीं थीं, बल्कि इन्हें याद रखने के लिए बकायदा हिंदी और राजस्थानी भाषा में कहावतें, मुहावरे और कवित भी रचे गए।

राजस्थानी कहावतों में वर्षा विज्ञान की विशद विवेचना की गई है।

'चिड़ी ज न्हावे धूल में, मेहा आवणहार।
जल में न्हावे चिड़कली, मेह विदातिण वार।'

अर्थात्

जब चिड़िया धूल में नहाए तो वर्षा आई समझो और यदि वे जल में नहाए तो उस दिन से वर्षा गई समझो।

'पपैयो पिऊ पिऊ करै, मोरा धणी अजग्म।
छत्र करै मोरयौ सिरै, नदियां बेह अथग्ग।'

अर्थात्

यदि पपीहा पिऊ-पिऊ करने लगे और मोर बार-बार बोलने लगे और पंखे का छत्र बनाए तो वर्षा इतनी ज्यादा होगी कि नदियां बहने लगेंगी।

'सांप, गोयरा, डेडरा, कीड़ी-मकोड़ी जाय।
दूर छोड़े बाहर भमे, नहीं मेहण की हाण।'

अर्थ

सांप, गोयरा, मेंढ़क, चींटी, मकोड़ी अपने-अपने स्थान छोड़कर इधर-उधर फिरने लगें तो समझो वर्षा आने वाली है।

'गिरगिट रंग बिरंग हौ, मक्खी चटकै देह।
मांकडिया चह-चह करै, जद अत जो मेह।'

अर्थात्

गिरगिट बार-बार रंग बदले, मक्खी मनुष्यों के शरीर पर चिपक जाए तो वर्षा अधिक होगी।

'मक्खी मच्छर डांस हौ, भाग जमानौ जांण।
उपजे जहरी जानवर, काल तथा सहिनांगण।'

यानी

लोगों का विश्वास है कि यदि मक्खी, मच्छर और डांस अधिक उत्पन्न हो, तो अच्छी बरसात होगी और यदि विषैले जन्तु अधिक पैदा हों तो अकाल पड़ेगा। हवा को लेकर भी राजस्थानी में कई तरह की कहावतें हैं,

'वजनस पवन सूरिया बाजे।
घड़ी पलक माहि मेंहे गाजे।'

अर्थ

यदि उत्तर-पश्चिमी हवा चले तो घड़ी, दो घड़ी में वर्षा होगी।

'जोर चले पुरवाई।
बादल काट लगाई'

अर्थात्

जब पूर्व की ओर की हवा बड़ी तेज चल रही हो, तो समझो कि बादल झूम-झूम कर बरसेंगे।

'कारे बादर डरावने
घोरे बरसन हार'

अर्थात्

यदि काले, डरावने बादल आसमान में दिखाई दें तो समझो घनघोर वर्षा आएगी।

'बादल रहे रात का वासी
तो जाणो चोकस मेह आसी'

अर्थात्

पिछली रात के बादल सवेरे तक छाए रहें तो अवश्य वर्षा होगी।

डॉ. अजय सिंह चुण्डावत
M.B.B.S., M.D.
एनेस्थिसियोलोजिस्ट
डायरेक्टर

डॉ. (श्रीमती) कौशल चुण्डावत
M.B.B.S., DGO
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
गायनिक, सोनोलोजिस्ट
डायरेक्टर

संजीवनी हॉस्पीटल

50 बेड का मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल आधुनिक मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर एवं सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रसूति कक्ष

साधारण, हाई रिस्क डिलीवरी, गर्भाशय का ऑपरेशन, सिजेरियन डिलीवरी, निसंतानता का निवारण, गर्भवती एवं समस्त प्रकार की स्त्री रोगों की नियमित जांच व इलाज

पाठों की मगरी, सेवाश्रम चौराहा, उदयपुर (राजस्थान)

मोबाइल नं :- 9829934770

अपोईन्मेन्ट एवं पूछताछ के लिए सम्पर्क करें हेल्पलाइन :- 9829934770

Email:sanjivanihospitaludaipur@gmail.com
admin@sanjivanihospitaludaipur.org
Website : www.sanjivanihospitaludaipur.org

बादलों का विज्ञान

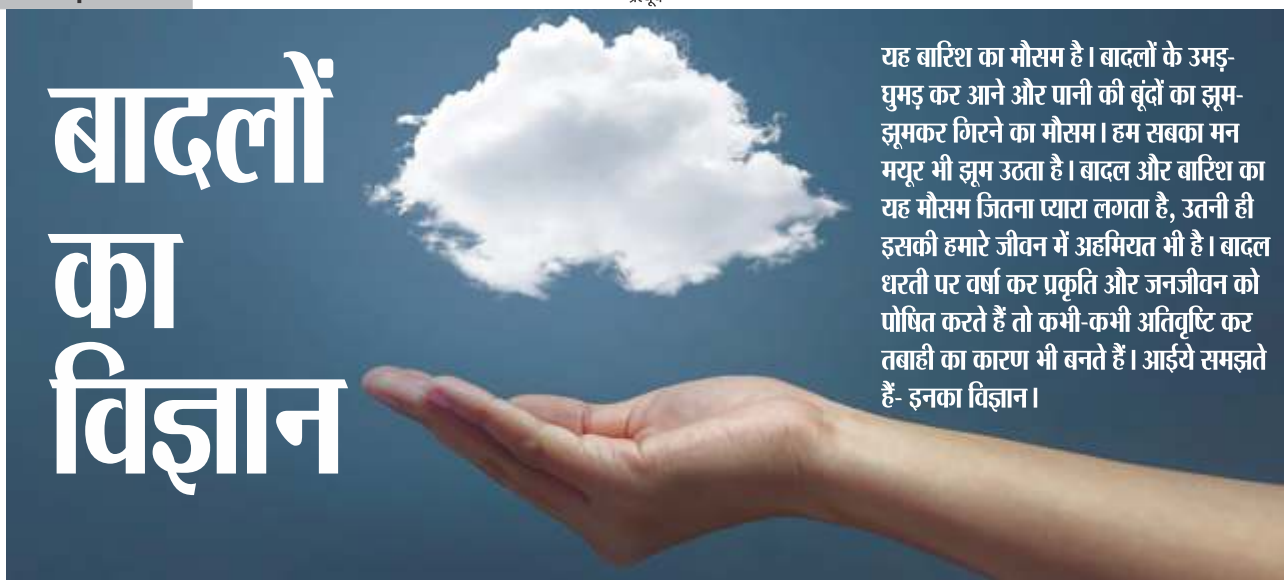

यह बारिश का मौसम है। बादलों के उमड़-घुमड़ कर आने और पानी की बूंदों का झूम-झूमकर गिरने का मौसम। हम सबका मन मयूर भी झूम उठता है। बादल और बारिश का यह मौसम जितना प्यारा लगता है, उतनी ही इसकी हमारे जीवन में अहमियत भी है। बादल धरती पर वर्षा कर प्रकृति और जनजीवन को पोषित करते हैं तो कभी-कभी अतिवृष्टि कर तबाही का कारण भी बनते हैं। आईये समझते हैं- इनका विज्ञान।

प्रिशा शर्मा

बादल वायुमंडल की सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक हैं। सामान्य तौर पर भूगोल की भाषा में बादल का अर्थ है वह विशाल राशि जो वायुमंडल में मौजूद जलकणों या हिमकणों से बनती है, जलकण और हिमकण इतने हल्के होते हैं कि हवा में आसानी से तैरने लगते हैं। जब बादल में मौजूद जलवाष्प के कण संघनित होकर पानी की बूंदों के रूप में नीचे गिरते हैं तो यह क्रिया बारिश कहलाती है। संघनन की प्रक्रिया तभी होती है जब गर्म हवा ऊपर उठती है और ठंडी हो जाती है। बादल ध्रुवों से लेकर विषुवतीय क्षेत्रों तक बनते हैं। सबसे अधिक बादल मानसूनी और विषुवतीय क्षेत्रों के ऊपर बनते हैं।

भारत का सौभाग्य है कि दुनिया में सर्वाधिक बारिश वाला क्षेत्र चेरापूंजी उसकी अपनी धरती पर स्थित है। बारिश की राजधानी के रूप में मशहूर चेरापूंजी समुद्र से लगभग 1300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जो मेघालय की राजधानी शिलांग से 60 किलोमीटर की दूरी पर हैं। चेरापूंजी को सोहरा के नाम से भी जाना जाता है। यहां औसत वर्ष 10,000 मिलीमीटर होती है। मेघालय के ही मासिनराम में कभी-कभार चेरापूंजी से भी ज्यादा बारिश दर्ज की जाती है। लेकिन विडंबना है कि सबसे ज्यादा बारिश होने की ख्याति पाने वाले इन इलाकों के लोगों को हर साल कुछ महीनों के लिए पानी की भारी किल्लत का सामना भी करना पड़ता है।

कैसे-कैसे बादल

अधिक ऊंचाई वाले बादलः इन्हें सिरस या पक्षाभ बादल के नाम से जाना जाता है। ये 16 से 20 हजार फीट यानी करीब 5000 से 6000 मीटर की ऊंचाई पर पाए जाते हैं। सिरस का अर्थ होता है गोलाकार। इन्हें प्रायः रोज आसमान में देख सकते हैं। ये हल्के और फुसफसे होते हैं और बर्फ के कणों से बनते है। गर्मी के मौसम में भी जो सिरस बादल दिखते हैं वे बर्फ के कणों के बने होते हैं, क्योंकि इतनी ऊंचाई पर काफी ठंड होती है। जनवरी हो या जून ऐसे बादलों के जरिये बारिश नहीं होती और मौसम प्रायः साफ रहता है। मध्यम ऊंचाई वाले बादलः ये साढ़े 6 से 16 हजार फीट यानी 2000 से 5000 मीटर की ऊंचाईपर पाए जाते हैं। इनका सामान्य नाम क्युमुलस यानी कपासी बादल है। अमूमन ऐसे बादलों के दौरान भी मौसम साफ रहता है। क्युमुलस का अर्थ होता है ढेर। अपने नाम के अनुरूप ये बादल रुई के ढेर की तरह दिखते हैं। कभी-कभार ये बादल गहरे रंग के होते हैं और तब इनसे पानी और ओले की बारिश होती है।

निम्न ऊंचाई के बादलः ये साढ़े 6 हजार फीट यानी 2000 मीटर से नीचे पाए जाते हैं। इन्हें स्ट्रेटस यानी स्तरी बादल भी कहा जाता है। अपने नाम के अनुरूप ये बादल काफी नीचे होते हैं और पूरे आकाश को घेर लेते हैं। ये बादल घने, काले और गहरे होते हैं और इनसे काफी वर्षा होती है। ये बादल कई बार कपास की तरह सफेद दिखते हैं। ऐसा तभी होता है जब आकाश पूरी तरह खुला होता है। ऐसे में आकाश का रंग नीला होता है।

क्यों सफेद होते है बादल

सामान्य तौर पर बादल का रंग सफेद होता है। यह सूर्य की किरणों के परावर्तन के कारण है। दरअसल, बादल में मौजूद जल की बूंदे ज्यादातर सूर्य प्रकाश को परावर्तित कर देती है। परावर्तित हुए इस प्रकाश में सातों रंग होते हैं जो मिलकर सफेद रंग बनाते हैं। बादलों का रंग काला या भूरा भी होता है। ऐसा सूर्य की किरणों के परावर्तन में बाधा होने के कारण होता है। दरअसल बादलों मे मौजूद जलकण बेहद सघन होते हैं तो ये सारे प्रकाश को परावर्तित नहीं कर पाते। ऐसे में कुछ प्रकाश रूक जाता है और बादल काले-भूरे दिखते हैं। वर्षा काल में ज्यादातर ऐसी ही स्थिति रहती है।

जब फट पड़ते हैं बादल

बादलों का फटना बारिश का चरम रूप है। इस दौरान कभी-कभी गर्जना भी होती है। ओले भी पड़ते हैं। बादल फटने के समय अमूमन कुछ ही मिनटों की बारिश होती है, लेकिन यह इतनी मूसलाधार होती है कि घर तक बह जाते हैं। कुछ ही मिनटों में दो सेंटीमीटर तक बारिश हो जाती है और भारी तबाही मचती है। हिमालय क्षेत्र में बादलों के फटने के मामले में सबसे बदनाम है। सबसे ज्यादा बाद फटने की घटना हिमाचल प्रदेश में होती है। 2010 में लेह में इसने भीषण तबाही मचाई थी, जिसमें 113 लोग मारे गए थे। बादलों के फटने के पीछे उसका बड़ी मात्रा का एकाएक संघनित होना है। ऐसा क्यों होता है इस बारे में स्थिति साफ नहीं है। सन 2013 और उसके बाद उत्तराखंड क्षेत्र में बादल फटने से हुई क्षति को याद करते ही कंपकपी छूटती है।

LAKECITY
DRY FRUITS PVT. LTD.

Whole sale dealers of all types of dry fruits and kirana items.

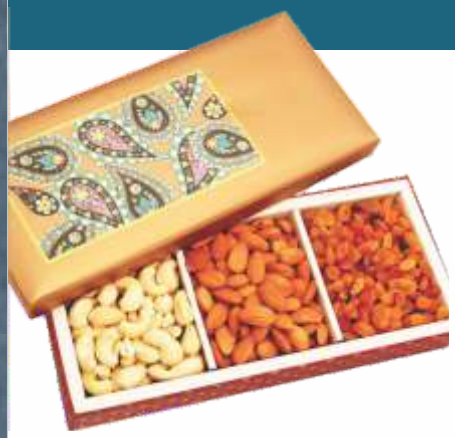

Our Branches

16, Krishi Upaj Mandi Yard, udaipur
Contact: 9414165711, 9829044611

W-12-13, Mandore Krishi Mandi, Jodhpur
Contact: 9950050362

576-Gultakdi Market, Pune (MH)
Contact: 8888876753

544-A, Katra Ishwar Bhawan, Delhi-6
Contact: 9001862222

LCDF Impex Pvt. Ltd, E-46, APMC Market, Vashi (New Mumbai)
Contact: 7725996110

20-20® DRY FRUITS

OUR BRAND

20-20 Dry Fruits Offers Packing

Contact Person

Anil Jain +91-9414165711
Nikhil Jain +91-7725996110

Ashok Jain +91-9829044611
Vishal Jain +91-9829499519

Lalit Jain - +91-9001862222
Himanshu Jain +91-9950050362

CITRON WORLD
www.citronworld.in

Our new online retail dry fruit store has complete variety and quality.

CASHEW/ALMONDS/KISHMISH/MAMRA/ PISTA DODI/ANJEER/PISTA/POSTA/ PISTA CUTTING/BADAM CUTTING

FREE DELIVERY

FAST DELIVERY

लोकतंत्र के नये मंदिर का लोकार्पण

नया संसद भवन बनेगा आत्मनिर्भर भारत के सूर्योदय का साक्षी : प्रधानमंत्री

मनीष उपाध्याय

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 28 मई को एक भव्यातिभव्य समारोह में देश के नए संसद भवन का लोकार्पण करते हुए कहा कि 'कुछ तारीखें समय के ललाट पर इतिहास के अमिट हस्ताक्षर बन जाती हैं।' आज का दिन ऐसा ही शुभ अवसर है। यह सिर्फ भवन नहीं है। यह 140 करोड़ भारतवासियों की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिबिम्ब है। यह आत्मनिर्भर भारत के सूर्योदय का साक्षी बनेगा। नए भारत के सृजन का आधार और हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने का साधन बनेगा। प्रधानमंत्री ने धोती-कुर्ता और सदरी की भारतीय पारम्परिक वेशभूषा में सबसे पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा को नमन करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की और बाद में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के साथ वैदिक मंत्रोच्चार के बीच हवन-पूजन में भाग लिया। इसके बाद दक्षिण भारत के संतों के अधिनम से सेंगोल ग्रहण कर उसे स्पीकर के आसन के पास स्थापित कर दण्डवत प्रणाम किया। नए संसद भवन का डिजाइन जितना बाहर से भव्य हैं, उतनी ही आकर्षक इसकी आंतरिक सज्जा है। इस मौके पर इसके निर्माण में लगे श्रमिकों को भी प्रधानमंत्री ने सम्मानित किया और आजादी के अमृत महोत्सव के संदर्भ में 75 रुपए का सिक्का जारी किया। कांग्रेस सहित 20 दलों ने नकारात्मकता का परिचय देते हुए समारोह का बहिष्कार किया। उनकी मांग थी कि उद्घाटन राष्ट्रपति करे। यह घटना बताती है कि भारत की राजनीति अत्यंत निचले स्तर तक पहुंच चुकी है। नये भवन की लोकसभा में अब 543 की जगह 888 तो राज्यसभा में 250 की जगह 384 सांसद बैठ सकेंगे।

अखंड भारत

नए संसद भवन के भित्ति चित्र अतीत के महत्वपूर्ण साम्राज्यों और शहरों को चिह्नित करने के साथ ही तत्कालीन तक्षशिला में प्राचीन भारत के प्रभाव को दर्शाते हैं। आचार्य चाणक्य के अलावा दक्षिण भारत के साम्राज्यों जैसे चोल, पाण्ड्य, द्रविड़ और धर्मग्रंथों को दर्शाया गया है। संसद भवन में लगे सरदार वल्लभभाई पटेल और डॉ. बीआर आंबेडकर के म्यूरल भी आकर्षक हैं। पटेल जहां आजाद भारत के पहले गृहमंत्री थे, वहीं डॉ. आंबेडकर को भारतीय संविधान की रचना का श्रेय है। संसद की कला दीर्घा में ओडिशा के कोणार्क स्थित प्रसिद्ध सूर्य मंदिर के चिह्न को दर्शाया गया है। 13वीं शताब्दी की इस ऐतिहासिक धरोहर को यूनेस्को ने विश्व विरासत घोषित कर रखा है। सूर्य भगवान के रथ के आकार में बनाया गया यह मंदिर मध्यकालीनभारत की वास्तुकला और शिल्पकला की अनोखी मिसाल है। देश की सांस्कृतिक विविधता को भी चित्रों में बखूबी दर्शाया गया है। समुद्र मंथन सहित अन्य म्यूरल्स को मूर्तिकार नरेश कुमावत ने तैयार किया है।

नई संसद निर्माण पर एक नजर

64,500	26,045	63,807	9,689
वर्गमीटर में 3 मंजिला	मीट्रिक टन स्टील	मीट्रिक टन सीमेंट	क्यूबिक मीटर प्लाई ऐश

23,00,000	950	1272
रोजगार सृजित (मानव दिवस)	करोड़ रुपए से अधिक खर्च	सांसदों के बैठने की व्यवस्था संयुक्त सत्र लोकसभा सदन में
तीन प्रवेश द्वार	भूकंप का असर नहीं होगा	

परिसर में प्रधानमंत्री कार्यालय, मंत्रालय, सांसद के कक्ष आदि अभी बनने हैं, जिसमें थोड़ा वक्त लगेगा। आजादी के बाद करीब 30 वर्ष पूर्व नब्बे के दशक में नए संसद भवन की चर्चाएं भी खूब हुई और योजनाएं भी बनीं, लेकिन इसे मूर्त रूप दिया 25 साल बाद प्रधामंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने। उन्होंने 10 दिसम्बर 2020 को आधारशिला रखी और करीब ढाई साल में यह अद्वितीय भवन भारत की अनेक विरासतों को अपने में समाहित करते हुए बनकर तैयार हो गया। निवर्तमान संसद भवन का निर्माण 1927 में हुआ था।

भारत समाहित

नए संसद भवन के निर्माण में पूरा भारत समाहित है। राजस्थान, यूपी से लेकर त्रिपुरा तक के सामान का इस्तेमाल किया गया है। इसमें उत्तरप्रदेश के भदोही की प्रसिद्ध कालीन बिछी है। त्रिपुरा के बांस से बना फर्श और राजस्थान के पत्थरों पर की गई नक्काशी विविधतापूर्ण भारत की तस्वीर पेश कर रही है। सागौन की लकड़ी महाराष्ट्र के नागपुर से मंगाई गई और राजस्थान के सरमथुरा से सफेद और बलुआ पत्थर लगाए गए हैं। उदयपुर से केसरिया और हरा पत्थर, अजमेर के करीब लाखा से लाल ग्रेनाइट और अंबाजी से सफेद संगमरमर लाया गया है। लोकसभा व राज्यसभा की फॉल्स सीलिंग के लिए स्टील फ्रेम दमन और दीव में तो फर्नीचर, मुंबई में तैयार किए गए हैं। इमारत में लगी पत्थर की जाली, राजस्थान के राजनगर और यूपी के नोएडा की है। अशोक चिह्न की सामग्री महाराष्ट्र, औरंगाबाद और राजस्थान के जयपुर से मंगाई है। संसद के बाहरी हिस्सों में लगी सामग्री मध्यप्रदेश के इंदौर से खरीदी गई है। पत्थरों पर क्काशी का काम आबू रोड और उदयपुर के शिल्पकारों ने किया। पत्थरों को राजस्थान के कोटपुतली से लाया गया। निर्माण कार्य में इस्तेमाल ठोस मिश्रण बनाने के लिए हरियाणा के चरणी दादरी में निर्मित एम-रेत (कृत्रिम रेत) का इस्तेमाल हुआ। फ्लाइ ऐश की ईंटें हरियाणा और यूपी से मंगाई गई। पीतल के काम की सामग्री और सांचे गुजरात के अहमदाबाद से लाए गए।

गौरव और आनंद का अवसर

राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने नए संसद भवन के उद्घाटन पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का संदेश पढ़ा। इसमें कहा गया नए भवन के उद्घाटन का अवसर इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज रहेगा। यह सभी देशवासियों के लिए गौरव आनंद का अवसर है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने संदेश में कहा, भारतीय लोकतंत्र की अपूर्व विकास यात्रा की इस ऐतिहासिक घड़ी और गौरव क्षण में मुझे पूरे देश को बधाई देते हुए बहुत खुशी हो रही है। मुझे यकीन है कि अमृतकाल में बना नया संसद भवन हमारे विकास का साक्षी रहेगा।

राहुल गांधी ने किया तंज

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने समारोह को राज्याभिषेक बताकर तंज कसा। उन्होंने कहा संसद लोगों की आवाज है। पीएम संसद भवन के उद्घाटन को राज्याभिषेक समझ रहे हैं। कांग्रेस उन 20 पार्टियों शामिल हैं, जिन्होंने समारोह का बहिष्कार किया। एनसीपी प्रमुख शरद पंवाद ने कहा, वहां जो कुछ हुआ, उसे देखकर चिंतित हूं। क्या हम देश को पीछे ले जा रहे हैं? वहीं राजद ने ट्वीट कर नए संसद भवन की तुलना ताबूत से की है।

समारोह के बहिष्कार का ऐलान करने वाले दल

1. कांग्रेस (81 सांसद)
2. द्रमुख (34 सांसद)
3. शिवसेना-यूबीटी (7 सांसद)
4. आम आदमी पार्टी (11 सांसद)
5. समाजवादी पार्टी (6 सांसद)
6. भाकपा (4 सांसद)
7. झामुको (2 सांसद)
8. केरल कांग्रेस-मणि (2 सांसद)
9. विदुथलाई चिरूभिगल काची (1 सांसद)
10. राष्ट्रीय लोकदल (1 सांसद)
11. तृणमूल कांग्रेस (35 सांसद)
12. जनता दल (यूनाइटेड) (21 सांसद)
13. राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (9 सांसद)
14. सीपीआई-एम (8 सांसद)
15. राजद (6 सांसद)
16. आईयूएमएल (4 सांसद)
17. नेशनल कांफ्रेंस (3 सांसद)
18. आरएसपी (1 सांसद)
19. एमडीएमके (1 सांसद)
20. एआईएमआईएम (2 सांसद)

संग्रहालय में प्रतिरूप

सात दशक तक इलाहाबाद संग्रहालय की शोभा बढ़ाने वाले ऐतिहासिक सेंगोल (राजदंड) को नए संसद भवन में स्थापित किए जाने पर इलाहाबाद संग्रहालय के अधिकारियों ने इसे गर्व का विषय बताया है। उनके अनुसार जल्द ही इस सेंगोल का एक प्रतिरूप इलाहाबाद संग्रहालय में रखा जाएगा।

चोल वंश के समय का यह सेंगोल चांदी से बना और इस पर सोने की परत चढ़ी है। यह 1947 में अंग्रेजों से सत्ता हस्तांतरण का प्रतीक है। आम भाषा में इसे राजदंड कहा जाता है, जबकि संग्रहालय के रिकॉर्ड में इसका उल्लेख सुनहरी छड़ी के रूप में किया गया है। इलाहाबाद संग्रहालय के सहायक क्यूरेटर वमन वानखेड़े के अनुसार इस संग्रहालय की नींव 14 दिसम्बर, 1947 को पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा चन्द्रशेखर आजाद पार्क में रखी गई थी और संग्रहालय को आम जनता के लिए 1954 में खोला गया था। उन्होंने कहा कि नेहरू जी अपने सभी उपहार इलाहाबाद संग्रहालय को देना चाहते थे और तब उन्होंने तत्कालीन क्यूरटर एससी काला को इस सेंगोल के बारे में बताया था।

सेंगोल की लम्बाई करीब 138 सेंटीमीटर है। इसे चार नवम्बर 2022 को राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली को स्थानांतरित किया गया था। उस समय संग्रहालय का अतिरिक्त प्रभार संभाल रहे राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) ने कहा था कि यह ऐतिहासिक छड़ी फिर से इतिहास का हिस्सा बनने जा रही है। इस संबंध में केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय से उनके पास एक फोन आया था जिसमें कहा गया कि इस सेंगोल को दिल्ली स्थानांतरित किया जाए। इस प्रक्रिया को पूरा करने में दो से तीन महीने लगे। जब स्थानांतरण प्रक्रिया जारी थी, तब राज्यपाल (आनंदबेन पटेल) ने कहा कि इस सेंगोल का एक प्रतिरूप इलाहाबाद संग्रहालय में रखा जाना चाहिए।

अधिकाधिक लोगों को मिले लाभ : मसीह

प्रतापगढ़। राजस्थान सरकार के स्वैच्छिक क्षेत्र विकास केंद्र के तत्वावधान में स्थानीय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ऑडिटोरियम में दो दिवसीय संवाद कार्यक्रम का आयोजन मई के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि सहकारिता मंत्री उदयलाल आंजना थे। अध्यक्षता राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त स्वैच्छिक क्षेत्र विकास केंद्र के अध्यक्ष मुमताज मसीह ने की। प्रथम दिन संवाद कार्यक्रम की रूपरेखा का प्रस्तुतीकरण किया गया। सहकारिता मंत्री ने कहा कि पीड़ित मानव की सेवा से बड़ी कोई सेवा नहीं है। एनजीओ समाज का दर्पण सामने रखते हैं। वे जनकल्याण के सपने को साकार करने की महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो सकते हैं। उन्होंने महंगाई राहत कैंपों की चर्चा करते हुए कहा कि राज्य सरकार हर पात्र तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना चाहती है। मुमताज मसीह ने कहा कि राज्य सरकार ने हर योजना व कार्य में गरीब के कल्याण को ध्यान में रखा है और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हर जगह राजस्थान का डंका बज रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न विभागीय अधिकारियों द्वारा योजनाओं का प्रस्तुतिकरण दिया गया। कार्यक्रम में कलक्टर डॉ. इंद्रजीत यादव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भागचंद मीणा, स्वेच्छिक क्षेत्र विकास केंद्र के विशेष सलाहकार संजय गौड़, जयपुर के स्टेट कॉर्डिनेटर अजय गौड़, पंकज दाधीच, पंकज शर्मा, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के सहायक निदेशक जगदीश शर्मा, सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक डॉ. टीआर आमेटा, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रहलाद पारीख, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. वीडी मीणा, एसीपी अशोक मीणा आदि उपस्थित रहे।

पण्ड्या को बेस्ट सोश्यल वर्कर अवार्ड

उदयपुर। दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के ऑल मीडिया काउंसिल अवार्ड में बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए प्रयासरत राजस्थान बाल आयोग के पूर्व सदस्य उदयपुर के डॉ. शैलेंद्र पण्ड्या को बेस्ट सोश्यल वर्कर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

सिंघल यूसीसीआई के पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की गत दिनों सम्पन्न वार्षिक साधारण सभा की बैठक में संजय सिंघल सत्र 2023-24 के लिए फिर से अध्यक्ष चुने गए। कार्यकारिणी समिति के गठन के लिए ऑनलाइन चुनाव हुए। चुनाव अधिकारी बी.आर.भाटी ने अध्यक्ष पद के लिए संजय सिंघल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर डॉ. अंशु कोठारी एवं उपाध्यक्ष पद के लिए दिलीप तलेसरा के निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा की। निर्वाचित अध्यक्ष संजय सिंघल ने कहा कि संभाग के उद्यमियों एवं व्यवसायिकों की समस्याओं का निराकरण उनकी प्राथमिकता रहेगी। विभिन्न श्रेणियों में ये चुने गए: बड़े एवं मध्यम उपक्रम श्रेणी में अनिल मिश्रा, कृष्ण गोपाल गुप्ता, पुनीत तलेसरा, संदीप बापना तथा के वी.जयरामन, लघु एवं माइक्रो उपक्रम श्रेणी से अभिनंदन कारवा, अचल अग्रवाल, नरेन्द्र जैन, प्रदीप गांधी, प्रदीप लुणावत, प्रखर बाबेल, राजेन्द्र कुमार चण्डालिया, राजेश खमेसरा, सोनल राठी, सर्विस एन्टरप्राइज श्रेणी में डॉ. अनिल कोठारी, परीक्षित तलेसरा, सिद्धार्थ चतुर, श्रद्धा गट्टानी, ट्रेडर्स (व्यापारी) वर्ग में अब्बास अली बन्दूकवाला, गजेन्द्र कुमार जोधावत, प्रकाश बोलिया, प्रतीक नाहर, प्रोफेशनल्स तथा शैक्षणिक संस्थान वर्ग के पवन तलेसरा, महिला सदस्य वर्ग में मंजीत कौर बंसल, श्वेता दुबे, मेम्बर बॉडिज एंव एसोसिएशन वर्ग में कपिल सुराणा, केजार अली, रवि शर्मा, भूतपूर्व अध्यक्ष श्रेणी से रमेश कुमार सिंघवी, विनोद कुमट के निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा की। कोमल कोठारी निवर्तमान अध्यक्ष की हैसियत से कार्यकारिणी के सदस्य रहेंगे। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में वरिष्ठ पूर्णाध्यक्ष बी.एच. बापना को संरक्षक एवं मनीष गलूंडिया तथा आशीष छाबड़ा को कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत किया गया।

यादव ने संभाला कार्यभार

उदयपुर। जिले के नए एसपी भुवन भूषण यादव ने कहा कि मुख्यालय की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए कार्य किया जाएगा। अपराध और कानून व्यवस्थाओं को लेकर उन्होंने स्थानीय स्तर पर पांच प्राथमिकताओं यातायात प्रबंधन, जमीनों से जुड़े अपराध, हार्डकोर अपराधियों पर लगाम, आदिवासी अंचल से जुड़ी कुप्रथाओं से जुड़े अपराध पर रोक और साइबर क्राइम पर लगाम कसने की बात कही। निवर्तमान एसपी विकास शर्मा को पुलिस लाइन में समारोह पूर्वक विदाई दी गई।

होंडा की ऑल न्यू शाइन-100 उदयपुर में लॉन्च

उदयपुर। होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने उदयपुर में नई 100 सीसी मोटरसाइकिल होण्डा शाइन लॉन्च की। रीजनल मैनेजर सेल्स नॉर्थ अनुराग सक्सेना ने बताया कि इसकी एक्स शोरूम कीमत 62900 रूपए रखी गई है। होण्डा शाइन-100 पांच आकर्षक रंगों व दमदार माइलेज, शानदार स्टाइल, मजेदार कम्फर्ट व किफायती दाम के साथ उपलब्ध है। समारोह में 51 ग्राहकों को गाड़ी की चाबी प्रदान की गई। कार्यक्रम में स्थानीय अधिकृत विक्रेता लेकसिटी होण्डा के निदेशक वरूण मुर्डिया, दक्ष होण्डा के निदेशक विकास श्रीमाली व रतनदीप होण्डा के निदेशक धर्मेन्द्र सिंह राव उपस्थित थे।

जिला कलक्टर को वृक्षम् मित्र पुरस्कार

उदयपुर। जिला कलक्टर तारा चंद मीणा को उत्कृष्ट प्रशासनिक सेवा कार्य पर वृक्षम् अमृतम् सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा वृक्षम मित्र अलंकरण पुरस्कार प्रदान किया गया। अध्यक्ष गोपेश शर्मा ने बताया कि संस्थान की ओर से उदयपुर ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में 65 सरकारी संस्थाओं में करीब 4000 पेड़ लगाए जा चुके हैं। इस अवसर पर रहाड़ा फाउंडेशन की संस्थापिका अर्चना सिंह, डॉ. मनीषा लोढ़ा, रिषिता सिंह, वृक्षम् अमृतम् के संरक्षक मनोहर लाल व्यास, अनिल पारीक मौजूद रहे।

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन

उदयपुर। औद्योगिक संस्थाओं एवं निवेशकों से निरंतर संवाद जरूरी है। उनसे मिलने वाला फीडबैक और भी महत्वपूर्ण है। राज्य में नवीन औद्योगिक क्षेत्र खोलने के लिए सरकार ने बड़े कदम उठाए है। ये बात अतिरिक्त मुख्य सचिव वीनू गुप्ता ने कही। वे राजस्थान सरकार, सीआईआई तथा यूसीसीआई के तत्वावधान में राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना- 2022 (रिप्स) को लेकर आयोजित कार्यशाला को संबोधित कर रही थी। कार्यशाला में निवेश संवर्धन ब्यूरो आयुक्त ओमप्रकाश कसेरा, खान एवं भू विज्ञान विभाग निदेशक संदेश नायक, रीको एमडी सुधीर कुमार शर्मा, जिला कलक्टर ताराचंद मीणा, कुणाल बागले, नितिन गुप्ता, सुनील लुणावत, संजय सिंघल आदि उपस्थित रहे।

पायल बाई को उभयलिंगी प्रमाण पत्र

उदयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने किन्नर पायल बाई को उभयलिंगी पहचान प्रमाण पत्र दिया। उप निदेशक मांधाता सिंह ने बताया कि नेशनल पोर्टल फॉर ट्रांसजेंडर पर्सन पर ऑनलाइन आवेदन के जरिये यह प्रमाण पत्र दिलाया गया। वे अब उभयलिंगी समुदाय के लिए संचालित योजनाओं का लाभ ले सकेंगी।

MEWAR UNIVERSITY

Mewar University
Knowledge to Wisdom

A University u/s 2 (f) & 12(B) of the UGC Act 1956, established by Govt. of Rajasthan Act. 4 of 2009 with the right to confer degrees u/s 22 (1) of the UGC Act (NAAC Accredited)

RECOGNITIONS & APPROVALS

AIU | AICTE | PCI | BCI | UGC | NAAC | NCTE | NSS | NCC | IAP

ADMISSION ANNOUNCEMENT 2023-24

COURSES OFFERED

DIPLOMA PROGRAMMES	Polytechnic Diploma - (Civil | Mech. | EE | CSE ECE | MINING | CHEMICAL) | D.Pharma D.EL.ED | Astrology | Yoga & Naturopathy
UNDER GRADUATE PROGRAMMES	B.Tech | B.Sc. | BBA | LL.B. | BCA | B.Com BA | B.Pharma | BHM | BTTM | BPT | BVA BPES | B.P.Ed | B.Ed. | B.Sc.(Agri.) | BJMC
POST GRADUATE PROGRAMMES	M.Tech | M.Sc. | MBA | LL.M. | MCA | M.Com MA | M.Pharma | MHM | MTTM | MPT | MVA M.Sc.(Agri.) | MJMC | PGDCA

RECRUITERS

vedanta | wipro | Mankind Serving Life | TATA CONSULTANCY SERVICES | apollo TYRES | BYJU'S | Microsoft | AgroStar | UltraTech CEMENT The Engineer's Choice | Lipi | AXIS BANK | KRISHNA | WONDER CEMENT EK PERFECT SHURUAAT | SECURE | CEAT | genpact

INFRASTRUCTURE

UNIVERSITY CAMPUS: NH-48, Gangrar, Chittorgarh, (Raj.)-312901

Email: admission@mewaruniversity.org, directoradmission@mewaruniversity.co.in

Contact Us: 9694618009, 9414109080, 9828268996, 7976277308, 9928819531, 9782559399, 7014375624

याद उन्हें भी कर लो जो लौट के घर न आए

26 जुलाई उन शहीदों को नमन करने का दिन जिन्होंने हमारे बेहतर कल के लिए 1999 के करगिल युद्ध में अपना वर्तमान और भविष्य समर्पित कर दिया। मातृभूमि की रक्षा के खातिर दुश्मन के दांत खट्टे करते हुए वे वीर गति को प्राप्त हुए।

रेणु शर्मा

कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच 1999 के मई महीने में कश्मीर के कारगिल जिले में हुआ था। युद्ध का कारण था बड़ी संख्या में पाकिस्तानी सैनिकों व पाक समर्थित आतंकवादियों का लाइन ऑफ कंट्रोल यानी भारत पाकिस्तान की वास्तविक नियंत्रण रेखा के भीतर प्रवेश कर कई महत्वपूर्ण पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लेह-लद्दाख को भारत से जोड़ने वाली सड़क का नियंत्रण हासिल कर सियाचीन ग्लेशियर पर भारत की स्थिति को कमजोर कर राष्ट्रीय अस्मिता के लिए खतरा पैदा करना। पूरे दो महीने से ज्यादा चले इस युद्ध को विदेशी मीडिया ने सीमा संघर्ष प्रचारित किया। भारतीय थल सेना व वायुसेना ने लाइन ऑफ कंट्रोल पार कर अपनी मातृभूमि में घुसे इन आक्रमणकारियों को 26 जुलाई के दिन को मार भगाया था। स्वतंत्रता का अपना ही मूल्य होता है, जिसे वीर अपने रक्त से चुकाते हैं।

हिमालय से ऊंचा साहस

इस युद्ध में भारत के लगभग 527 से अधिक वीर योद्धा शहीद व 1300 से ज्यादा घायल हुए, जिनमें से अधिकांश अपने जीवन के 30 वसंत भी नहीं देख पाए थे। इन शहीदों ने भारतीय सेना की शौर्य

व बलिदान की उच्च सर्वोच्च परम्परा का निर्वाह किया, जिसकी सौगंध हर सिपाही तिरंगे के समक्ष लेता है। इन रणबांकुरों ने भी अपने परिजनों से वापस लौटकर आने का वादा किया था, जो उन्होंने निभाया भी मगर उनके आने का अंदाज निराला ही था। वे तिरंगे में लिपटे हुए थे, जिसकी रक्षा की सौंगध उन्होंने उठाई थी। जिस राष्ट्रध्वज के आगे कभी उनका माथा सम्मान से झुका होता था, वहीं तिरंगा मातृभूमि के इन बलिदानी जांबाजों से लिपटकर उनकी गौरवगाथा का बखान कर रहा था।

वीरता और बलिदान की यह फेहरिस्त यहीं खत्म नहीं होती। भारतीय सेना के विभिन्न रेंकों के लगभग तीस हजार अधिकारी व जवानों ने ऑपरेशन विजय में भाग लिया। युद्ध के पश्चात पाकिस्तान ने इस युद्ध के लिए कश्मीरी आतंकवादियों को जिम्मेदार ठहराया था, जबकि यह बात किसी से छिपी नहीं थी कि पाकिस्तान इस पूरी लड़ाई में लिप्त था। बाद में नवाज शरीफ और शीर्ष सैन्य अधिकारियों ने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से पाक सेना की भूमिका को स्वीकार किया था। यह युद्ध ऊंचाई पर लड़े जाने वाले विश्व के प्रमुख युद्धों में से एक है। सबसे बड़ी बात यह रही कि दोनों ही देश परमाणु हथियारों से संपन्न हैं। पर कोई भी युद्ध हथियारों के बल पर नहीं लड़ा जाता। युद्ध लड़े जाते हैं साहस, बलिदान, राष्ट्रप्रेम व कर्तव्य की भावना से और भारत में इस जज्बे से भरे युवाओं की कोई कमी नहीं है।

मातृभूमि पर सर्वस्व न्योछावर करने वाले अमर बलिदानी भले ही अब हमारे बीच नहीं है, मगर इनकी यादें हमारे दिलों में हमेशा-हमेशा के लिए बसी रहेगी। उनकी अमर शहादत को विजय दिवस के रूप में भारत सदा रखेगा।

With Best Compliments

Khiv Singh Rajpurohit
(Managing Director)
94141-04766

BKMGPL

All Kinds of Marble and Granite Block, Slabs & Tiles

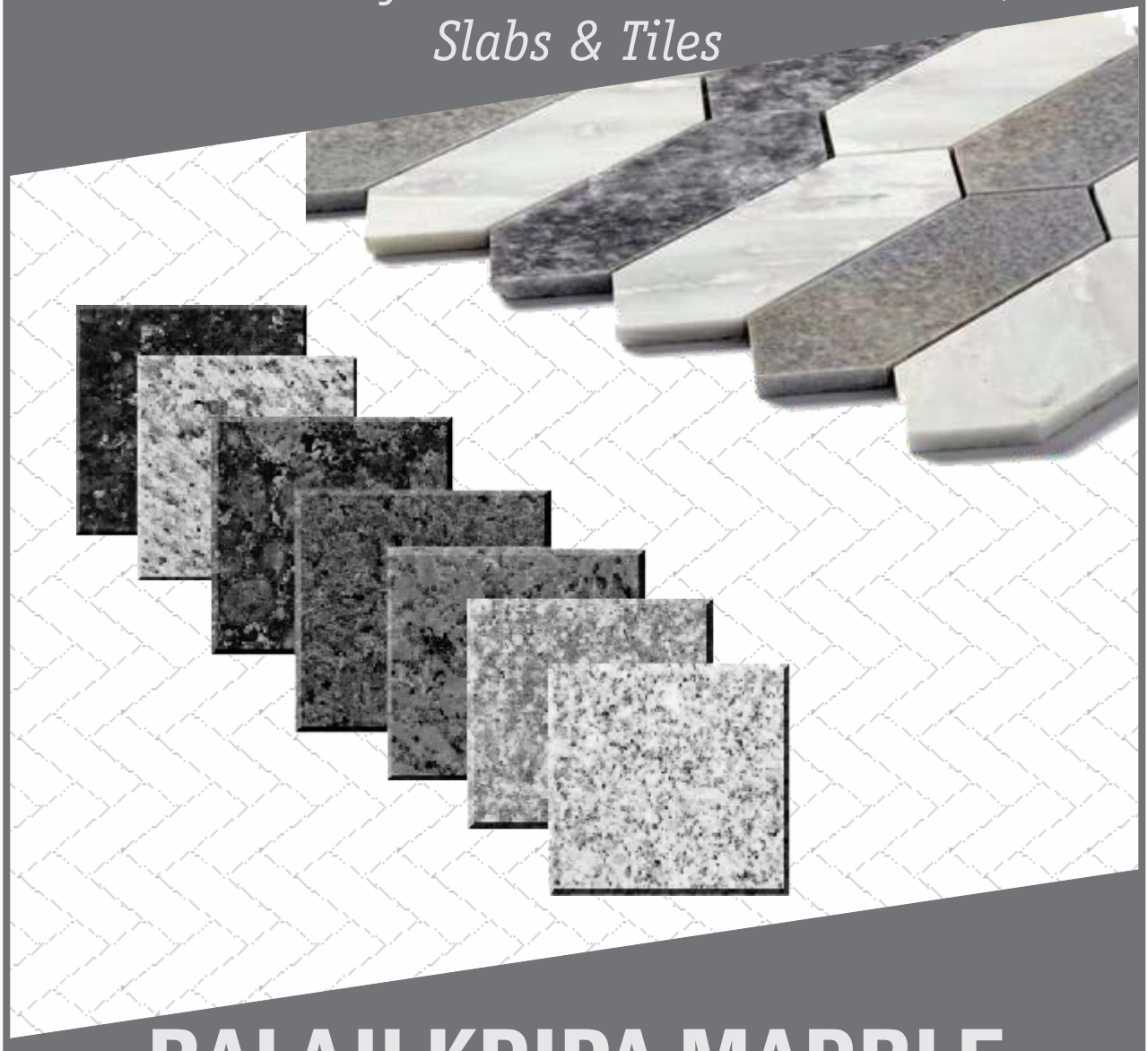

BALAJI KRIPA MARBLE & GRANITE PVT. LTD.

398-399, Sukher Industrial Area, Sukher, Udaipur (Rajasthan) India
Phone : +91-294-2442370, Fax : +91-294-2441773
e-mail: balajikripa.udr@gmail.com

छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ी चुनौती चेहरा

बघेल से कैसे निपटेगी भाजपा?

गोपाल जाट

छत्तीसगढ़ में भी चार माह बाद विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। यह ऐसा राज्य हैं जहां भाजपा सबसे कमजोर नजर आती है। इसके साथ ही राज्य में भाजपा के लिए चेहरा भी एक चुनौती बनता जा रहा है। राज्य में डेढ़ दशक रमनसिंह के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी का राज रहा, मगर पिछले 2018 के चुनाव में पार्टी का पूरी तरह सूपड़ा साफ हो गया। अब सत्ता में वापसी कैसे की जाए, इसके लिए पार्टी हर रणनीति पर काम कर रही है। एक तरफ संगठन में बड़े बदलाव किए गए हैं तो वहीं जमीनी स्तर पर भी जमावट को मजबूत किया जा रहा है। साथ ही कांग्रेस की अंदरखाने चल रही खींचतान पर भी नजर है।

राज्य में भाजपा सत्तारूढ़ कांग्रेस के खिलाफ वैसे आंदोलन खड़े करने में नाकाम रही है, जो कभी पार्टी की पहचान रहे हैं। जिला स्तर पर तो आंदोलन, विरोध प्रदर्शनों का दौर चलता रहता है, मगर प्रदेश स्तर पर ऐसा कोई आंदोलन खड़ा करने में पार्टी सफल नहीं हो पा रही है। जिसके चलते जनमानस में कांग्रेस के खिलाफ माहौल बनाया जा सके।

किस वर्ग को साधेगी भाजपा

भाजपा किसी आदिवासी को या गैर आदिवासी को मुख्यमंत्री बनाएगी यह भी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। वहीं कांग्रेस भूपेश बघेल के जरिए पिछड़े वर्ग का कार्ड तो खेल ही चुकी है। साथ ही जनजाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग को भी लुभाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। इन स्थितियों में भाजपा को मुकाबले के लिए कारगर रणनीति के साथ चेहरा भी चुनौती बनता जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि छत्तीसगढ़ में भाजपा के लिए सत्ता का रास्ता आसान नहीं है। इसकी वजह भी है क्योंकि संगठन इतना मजबूत नहीं है जो कांग्रेस और बघेल सरकार को चुनौती देने की स्थिति में हो।

चेहरे का चयन चुनौती

राज्य के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने न केवल समय-समय पर हर वर्ग के लिए कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा ही की बल्कि उन्हें अमलीजामा भी पहनाते रहे हैं। कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद किसान कर्ज माफी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की मुहिम और अब चुनावी साल में बेरोजगारी भत्ता देने का ऐलान कर अपनी स्थिति को और मजबूत करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। राज्य में भाजपा के लिए सबसे बड़ी चुनौती चेहरे का चयन भी बन चुका है। यह बात अलग है कि राज्य में डेढ़ दशक तक भाजपा की सरकार डॉ. रमनसिंह के नेतृत्व में रही है, मगर अगला मुख्यमंत्री कौन होगा यह तस्वीर अब भी धुंधली है।

दिग्गज नेता सक्रिय नहीं

इसके साथ ही भाजपा का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा यह भी स्पष्ट नहीं है। इसी का नतीजा है कि पार्टी के दिग्गज नेता जमीन पर सक्रिय नजर नहीं आते। दूसरी ओर कांग्रेस वह सारे दाव-पेंच अपनाने में पीछे नहीं है जिसके चलते जनता में पैठ बनाई जाए और उसका दिल भी जीता जाए।

राज्य में 90 विधानसभा सीटों में से कांग्रेस का 71 पर कब्जा है, वहीं भाजपा के 14 विधायक हैं। तीन विधायक छत्तीसगढ़ कांग्रेस के और दो बहुजन समाज पार्टी के हैं। राज्य के सभी 14 नगरीय निकायों पर भी कांग्रेस काबिज है। ऐसी स्थिति में भाजपा आलाकमान के लिए छत्तीसगढ़ की सत्ता का गलियारा हाल-फिलहाल तो कदम-कदम पर अवरोधों से अटापटा ही दिखाई पड़ रहा है।

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

दवा से भी प्रभावी व्यायाम

कोरोना महामारी के बाद एक तिहाई लोग ग्रस्त हैं, इस बीमारी से

दुनिया वर्तमान में एक मानसिक स्वास्थ्य संकट से जूझ रही है, जिसमें लाखों लोग अवसाद, चिंता और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की शिकायत कर रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य विकार से पीड़ित व्यक्ति और संबद्ध समाज दोनों को बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, साथ ही अवसाद और चिंता स्वास्थ्य संबंधी बीमारी के बोझ के प्रमुख कारणों में से हैं। कोविड महामारी ने इस स्थिति को और बिगाड़ा ही है, मनोवैज्ञानिक तनाव की दरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और यह एक तिहाई लोगों को प्रभावित कर रहा है। हालांकि इसके उपचार में पारंपरिक उपचार जैसे चिकित्सा और दवा प्रभावी हो सकते हैं। ब्रिटिश जर्नल आफ स्पोर्ट्स मेडिसिन में प्रकाशित अध्ययन में अवसाद, चिंता और मनोवैज्ञानिक संकट पर शारीरिक गतिविधि के प्रभावों की जांच करने वाले 1,000 से अधिक शोध परीक्षणों की समीक्षा की। इसने दिखाया कि व्यायाम मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के इलाज का एक प्रभावी तरीका है और यह दवा या परामर्श से भी अधिक प्रभावी हो सकता है। अध्ययन में 1,039 परीक्षण और 128,119 प्रतिभागी शामिल थे। इसमें पाया गया कि हर हफ्ते 150 मिनट विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधि (जैसे तेज चलना, वजन उठाना और योग करना) सामान्य देखभाल (जैसे दवाएं)

की तुलना में अवसाद, चिंता और मनोवैज्ञानिक संकट को काफी कम कर देता है। सबसे बड़ा सुधार अवसाद, गुर्दे की बीमारी, गर्भवती और प्रसवोत्तर महिलाओं में और स्वस्थ व्यक्तियों में देखा गया, हालांकि सभी आबादी के लिए स्पष्ट लाभ देखा गया। व्यायाम की तीव्रता जितनी अधिक होती है, उतना ही अधिक लाभदायक होता है। उदाहरण के लिए, सामान्य गति से चलने के बजाय तेज गति से चलना और कम अवधि के बजाय छह से 12 सप्ताह तक व्यायाम करने से सबसे अधिक लाभ होता है। मानसिक स्वास्थ्य में सुधार बनाए रखने के लिए लंबे समय तक व्यायाम करना महत्तवपूर्ण है। व्यायाम दवा या संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी की तुलना में लगभग 1.5 गुना अधिक प्रभावी है। शोध के निष्कर्ष अवसाद, चिंता और मनोवैज्ञानिक संकट के प्रबंधन के लिए व्यायाम की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जबकि व्यायाम मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के प्रबंधन के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकता है, मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति वाले लोगों को एक व्यापक उपचार योजना विकसित करने के लिए एक स्वास्थ्य पेशेवर के साथ काम करना चाहिए। एक उपचार योजना में मनोचिकित्सा और दवा जैसे उपचारों के साथ-साथ नियमित रूप से व्यायाम करना, संतुलित आहार खाना, और सामाजिकता जैसे जीवन शैली दृष्टिकोणों का संयोजन शामिल हो सकता है। लेकिन व्यायाम को सिर्फ एक अच्छे विकल्प के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

प्रस्तुतिः डॉ. सुनील शर्मा

शकुनि के किरदार से अमर हो गए गुफी

मुझे तो केवल इतना याद है कि तीन साल का था.. अपने घर की छत पर से जलते हुए मकानों को देखता तो तोतली बोली में आद लदी-आद लदी (आग लगी)चिल्लाने लगता। मेरी बीजी मुझे सीने से लगाती और नीचे कमरे में ले आ आती।

परिवार को पता चल चुका था कि देश का विभाजन निश्चित है ,आगजनी दंगे और लूटमार के दौरान ...गली सड़कों में लाशों के बीच से निकालकर हमें फौजी ट्रकों में अमृतसर होते हुए तरणतारण ननिहाल लाया गया। अब हम रिफ्यूजी थे। बीजी की तबियत उन दिनों ठीक नहीं थी। उन्होंने छोटे भाई गुड्डे को जन्म दिया। तरनतारन से मेरे पिता और बीजी हम दोनों भाइयों को लेकर दिल्ली आये, जहाँ दादा कश्मीरा सिंह रहते थे। वे इंग्लिश और फारसी के विद्वान और मुम्बई खालसा कॉलेज के फाउंडर प्रिंसिपल थे।

मेरे डैडी दिनरात मेहनत करते पर भगवान जाने क्यूँ वो बात बन ना पाई जो लाहौर में थी ....शायद एक बार जो ऐसी परिस्थिति का शिकार हो जाता है तो उसे फिर पांव जमाने के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। मेरे डैडी सीधे-साधे भोले स्वभाव के व्यक्ति थे दुनिया की चतुराई से एकदम नावाकिफ। ये तो शुक्र है कि सर के ऊपर दादाजी की दी हुई छत थी। जिसने हमारी इज्जत पर दोशाला ओढ़ा रखा था।

सबके सब रिश्तेदार संपन्न थे। जब अपने यही लोग हमें अपने उतरे हुए कपड़े पहनने को देते तो मन को हीन भावना झकझोर देती। अंदर ही अंदर हम सैकड़ों लड़ाईयां खुद से ही लड़ते। इतने दुख और तकलीफों के बावजूद मैंने कभी अपनी बीजी के चेहरे पर दुख नहीं देखा। वे हमेशा वाहेगुरु का शुक्रिया ही अदा करती थीं।

मैं हाई स्कूल करके एयर फोर्स में पायलट बनना या फिल्मों में काम चाहता था पर बुजुर्गों की सलाह पर जमशेदपुर टाटा इंस्टीट्यूट जाना पड़ा। जहां हॉस्टल के कमरा नंबर 1 में रतन टाटा भी थे। उनके साथ मेरी अच्छी यारी हो गयी। उनकी सिल्वर रंग की

हाल ही में फिल्म और टी वी जगत ने अपने एक मशहूर सितारे को खो दिया। महाभारत सीरियल में मामा शकुनि की भूमिका से विश्व प्रसिद्ध हुए, गुफी पैंटल का 6 मई को निधन हो गया। उनका जन्म 4 अक्टूबर 1944 को मध्यम वर्गीय पंजाबी परिवार में हुआ। इनके पिता गुरुचरण सिंह पेंटल लाहौर फिल्म इंडस्ट्री में केमरामैन थे। उनका स्नेह मेरे व परिवार पर अनवरत रहा। मैं छोटा सा कवि और मामाश्री एक बड़े कवि, लेखक और व्यंगकार। महाभारत की शूटिंग को लेकर हमारी फोन पर लम्बी चर्चा हुआ करती थी। मामा अक्सर बताया करते थे कि शूटिंग कैसे होती थी ,तीर कैसे चलते थे, पितामह की बाणों की शय्या कैसे बनाई गई

थी । युद्ध संचालन की तकनीक क्या थी आदि। वे मुझे भी हमेशा प्रिय भांजे से ही संबोधित करते थे। वर्ष 2020 में मेरे जन्मदिन पर उन्होंने अपनी पुस्तक 'कुछ लकीरें टेढ़ी-मेढ़ी सी' आशीर्वाद स्वरूप भेजी। वर्ष 2021 में मेरे जन्मदिन पर ही उन्होंने चौसर के वे पासे भी मुझे भेंट स्वरूप भेजे जिनसे उन्होंने धारावाहिक महाभारत में धूम मचाई थी। इसके साथ पत्र में उन्होंने लिखा कि मैं अपनी सेना तुम्हें बुरी नजर से सदैव बचाए रखने के लिए भेज रहा हूं। मामा जी से मेरी अंतिम मुलाकात दिल्ली के कमानी ऑडिटोरियम में हुई थी जहाँ महाभारत 'द एपिक टेल शो' का मंचन होना था। मै उनके साथ उनके कमरे में ही ठहरा था। उनमें सरलपन इतना था कि किसी को भी पराया या छोटा नहीं समझते थे। आज वे बेशक इस दुनिया में नहीं है लेकिन उनका प्यार, दुलार अपनापन में नहीं भुला पाउंगा। प्रस्तुत है उनकी ही पुस्तक से उनकी ही संघर्ष पूर्ण जीवन यात्रा के कुछ अंश।

-रोहित बंसल

कन्वर्टिबल प्लेमोथ गाड़ी वो सिर्फ मुझे ही चलाने देते थे। वो साठ का दशक ...हिन्दी फिल्मों का ब्लेक एंड व्हाइट से कलर होना .... हॉस्टल के हर रूम पर एक से एक खूबसूरत हीरोइन साधना ,नूतन ,मधुबाला ,सायरा ... की खूबसूरत तस्वीरें लड़कों ने लगा रखी थीं। वो कंप्लीट बेफिक्री के दिन थे।

मेरी इंजीनियरिंग पूरी हुई डिप्लोमा मिला और हाथों हाथ टाटा से नियुक्ति भी मिल गयी। नौकरी मिलने के बाद हॉस्टल छूट गया और हम फिर से नये लोगों के बीच आ गये। हम पांच बड़े अच्छे दोस्त थे। लोग हमें पांच पांडव कहते थे। हम पांचों अलग-अलग राज्यों से थे श्याम प्रताप (नेपाल) जॉन डेविड (इलाहाबाद) अय्यर (तमिलनाडु) नवाब नियाज़ अहमद (पटना) और मैं पंजाबी।

सन 1968 में टेल्को जमशेदपुर से मेरी ट्रांसफर मुंबई हो गयी दोस्तों को छोड़ कर आगे बढ़ना बड़ा दुखी करने वाला पल था लेकिन जिंदगी तो आगे बढ़नी ही है। मेरे भाई को भी फिल्म इंडस्ट्री में काम मिल गया और हम जुहू स्कीम में आ गये। मेरा विवाह हो चुका था और हमारे घर पुत्र हेरी पेंटल ने जन्म लिया।

कुछ सालों बाद मेरे भीतर फिल्मों में प्रवेश की हूक उठने लगी और इंजीनियरिंग छोड़ दी। शो बिजनेस की तरफ रुख किया। मॉडलिंग से शुरुआत की जहां मुश्किल से 200 रुपये मेहनताना मिलता वो भी कई कई बार तो छः-छः महीनों बाद। मुझे याद है कि कभी एड फिल्मों के दफ्तरों के चक्कर तो कभी डॉक्यूमेंट्री मेकर के ....खूब स्ट्रगल किया .....जूते घिस जाते थे ...काम देने वाला चेहरे से लेकर जूते तक ताड़ता था। तब कहीं काम देता, बसों में धक्कों भरा सफ़र.. स्ट्रगल वो पसीना ...सोचिये जो शक्ल से मजदूर लगे उसे हीरो कौन बताता? ये फिल्म इंडस्ट्री भी वन वे ट्राफिक है यहां आने के तो बहुत रास्ते हैं पर निकलने का एक भी नहीं ....तो मेरे कॅरियर की शुरुआत हुई ग्लेमर और ग्लिटज की चकाचौंध कर देने वाली इस अद्भुत दुनिया में।

खड़ी स्क्रीन पर असिस्टेंस डायरेक्टर के साथ छोटे-बड़े करेक्टर भी मैं करने लगा था। बहरहाल यूं ही चलते-चलते 1978 में जब रवि चोपड़ा 'दी बर्निंग ट्रेन' बना रहे थे तो बतौर असिस्टेंट तो मैने काम किया ही साथ में उनके विज्ञापन विभाग में भी सहयोगी की नौकरी की।

मैं खुद को खुशनसीब मानता हूँ कि डॉ बी आर चोपड़ा ,पंडित नरेंद्र शर्मा ,हसन कमाल ,सतीश भटनागर ,धर्मवीर भारती और विकास कपूर के साथ काम करने का मौका मिला।

सन 1986-1990 का एक दौर था.. जब डॉ बी आर चोपड़ा महाभारत धारावाहिक बनाने की सोच रहे थे,उन्होंने मुझे बतौर कास्टिंग डायरेक्टर नियुक्त किया। तब मैनें 20000 से ज्यादा ऑडिशन लेकर एक-एक कलाकार को चुना। सुदेश बेरी ,शरत सक्सेना ,कंवरजीत पेंटल और अन्य कलाकारों को पहली बार किसी धार्मिक धारावाहिक से जुड़ने का मौका मिला ,पुनीत इस्सर जो उस समय कुली फिल्म में अमिताभ बच्चन को चोट लगने के कारण काम से वंचित थे, उन्हें दुर्योधन की भूमिका दी गयी। नीतीश भारद्वाज जो विदुर बनने आये थे पर शुद्ध हिन्दी और संस्कृत के उच्चारण के कारण कृष्ण की भूमिका में दिखे। ये सब चमकते मोती ईश्वर की दया से जुड़े। इस महानतम धारावाहिक में मुझे गांधार नरेश शकुनि की भूमिका के निर्वाह का सौभाग्य मिला।

CENTURYPLY®

Girish Maheshwari
Director
Mob.: 99280-35657
99280-35658

Century Plyboards (I) Limited

Maheshwari Brothers

Brij Bhawan, 385, I-1 Road, Bhupalpura,
Near Maharashtra Bhawan, Udaipur (Raj.)
E-mail: girishm421@gmail.com

प्रत्यूष

बिन गुरू होय न ज्ञान

भारतीय संस्कृति में गुरू को ईश्वर तुल्य माना गया है और माना भी क्यों न जाए। अगर गुरू न हो तो गोविन्द तक पहुंचने का मार्ग कौन दिखाएगा? गुरू ही तो शिष्य की जड़ता को दूर कर उसे चैतन्य बनाते हैं। गुरू पूर्णिमा (3 जुलाई) के संदर्भ में प्रस्तुत है विशेष आलेख।

कार्तिक नागदा

गुरू ज्ञान के संस्कार का केन्द्र बिंदु है। विभिन्न धर्मों में गुरू को शीर्ष स्थान प्राप्त है। गुरू के वचन का अनुसरण सनातन, बौद्ध, ईसाई, जैन और सिख धर्म की मौलिक मान्यता है। इस्लाम में भी धर्मगुरू- उलेमा अपनी तकरीरों से ज्ञान का संचार करते हैं। सिखों के दस गुरूओं द्वारा प्रसारित ज्ञान परम्परा सिख जीवन शैली का मूल आधार है। भारतीय संस्कृति में गुरू को ईश्वर तुल्य माना गया है और माना भी क्यों न जाए। अगर गुरू न हो तो गोविंद तक पहुंचाने का मार्ग कौन दिखाएगा? गुरू ही तो शिष्य की जड़ता को दूर कर उसे चैतन्य बनाते हैं। गुरू के उपदेशों को सुनने और आत्मसात करने से सद्ज्ञान प्राप्त होता है। संसार में सबसे दुर्लभ यदि कुछ है तो वह है ईश्वरानुग्रह कराने वाले सद्गुरू का सानिध्य प्राप्त होना। जिस प्रकार सूरज की किरणें सबको समान रूप से प्रकाश और गरमी देती हैं, उसी प्रकार एक आत्मवान आध्यात्मिक गुरू अपनी कृपा व करूणा सभी पर समान रूप से रखते हैं। सद्गुरूओं ने केवल अक्षर ज्ञान, गणना ज्ञान या परीक्षा पास करने का ज्ञान नहीं दिया बल्कि ज्ञान की समग्र शक्ति का शिष्य में शक्तिपात कर उन्हें आदर्श मानव बना दिया। यही गुरू की सफलता का मूल भी था। महर्षि दत्तात्रेय ने अपने 24 गुरू माने हैं, इनमें पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चंद्रमा, सूर्य, अजगर, कबूतर, सागर, शिशु, हिरण,मछली, आदि शामिल हैं। यह अनूठी गुरू परंपरा उन्होंने स्थापित की। विश्व के प्रथम विश्व विद्यालय तक्षशिला, नालंदा की शिक्षा और गुरू परंपरा आज भी आदर्श है। तक्षशिला में नि:स्वार्थ भाव से गुरूओं की उपस्थिति और समर्पण आज के शिक्षकों के लिए भी आदर्श होनी चाहिए।

गुरू-शिष्य का समन्वय सेतू के समान है। गुरू की कृपा से शिष्य का मार्ग आसान हो जाता है। स्वामी विवेकानंद ने बचपन में परमात्मा को पाने की चाह की। उनकी यह ईच्छा तभी पूर्ण हुई जब उन्हें गुरू के रूप में स्वामी रामकृष्ण परमहंस का सानिध्य और आशीर्वाद मिला। उनकी कृपा से ही वे आत्म-साक्षात्कार में समर्थ हो सके। चन्द्रगुप्त मौर्य को गुरू आचार्य चाणक्य ने अपनी विद्वता और क्षमता से इस तरह तैयार किया कि उसने इतिहास को करवट लेने पर विविश कर दिया। मनुष्य जीवन का क्या तात्पर्य है, हम कौन हैं, किसलिए आए हैं, यह सब बिना गुरू के कैसे जाना जा सकता है। स्वामी विवेकानंद ने लिखा है, 'सारी धरती की धर्म व्यवस्था रसातल में चली जाए, फिर भी जब तक धरती पर एक सद्गुरू है और एक सत् शिष्य है, तब तक धर्म फिर से उभरेगा, क्योंकि सद्गुरू के हृदय से सत्शिष्य के लिए कल्याण के लिए जो वचन निकलेंगे, वे ही धर्मग्रंथ बन जाएंगे।' आषाढ़ी पूर्णिमा (3 जुलाई) को गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाए जाने और गुरू का वंदन करने की परम्परा सदियों पुरानी है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। इसी दिन महाभारत ग्रंथ के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्म हुआ था। उन्होंने वेदों की भी रचना की थी। अतएव उन्हे वेदव्यास भी कहा जाने लगा। आईये, हम भी अपने गुरू के सानिध्य में पहुंच कर ज्ञान, शांति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त कर जीवन को धन्य करें।

आकाश गंगा: तारों की परिक्रमा करते ग्रहों पर जीवन की उम्मीद

समूची आकाशगंगा में कई ग्रह तारों की परिक्रमा कर रहे हैं। इनमें से एक तिहाई ग्रहों पर तरल अवस्था में पानी और जीवन होने की संभावना है। हाल में किए गए टेलिस्कॉप के आंकड़ों पर आधारित अध्ययन से यह जानकारी मिली। आकाशगंगा में जो सबसे आम तारे हैं वे सामान्यत: सूर्य के आकार की तुलना में छोटे और ठंडे होते हैं। अरबों ग्रह इन आम छोटे तारों की परिक्रमा करते हैं। यह विश्लेषण 'प्रोसीडिंग्स' आफ द नेशनल एकेडमी आफ सांईसेज में प्रकाशित हुआ है जो दर्शाता है कि इन छोटे तारों के चक्कर काटने वाले दो तिहाई ग्रह चरम ज्वारीय स्थिति से प्रभावित हो सकते हैं। हालांकि एक तिहाई ग्रहों (आकाशगंगा के लाखों ग्रहों) पर जीवन की संभावनाएं हो सकती हैं। अमेरिका में फ्लोरिडा विश्वविद्यालय (यूएफ) में डाक्टरेट की छात्रा शीला सगीर ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह परिणाम वास्तव में अगले दशक के अन्य तारों के ग्रहों के अनुसंधान की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा।' सगीर ने एक बयान में कहा, 'ये तारे उस छोटे ग्रहों की खोल का उत्कृष्ट जरिया हो सकते हैं, जहां पानी तरल अवस्था में मौजूद हो सकता है और इसलिए संभवत: उस ग्रह पर जीवन की संभावना हो सकती है।' सगीर और यूएफ की खगोल प्रोफेसर सारा बलार्ड ने 'एम ड्वार्फ स्टार्स' के आसपास के 150 से अधिक उन ग्रहों की कक्षीय विकेंद्रता का अध्ययन किया जो बृहस्पति के आकार के बराबर हैं। किसी खगोलीय पिंड की कक्षीय विकेंद्रिता उसकी कक्षा के एक पूर्ण वृत्त से विचलन का माप होता है। यह कक्षा जितनी अधिक अंडाकार होती है, ग्रह उतने अधिक विकेंद्रित होते हैं। ग्रह अपनी अनियमित कक्षा में बदलते गुरूत्वाकर्षण बलों से फैलते और अपना स्वरूप बदलते रहते हैं और घर्षण से ऊष्मा उत्पन्न होती है। ऐसे में चरमोत्कर्ष पर पहुंचने से ग्रह अत्यंत गर्म हो सकता है और उस पर पानी होने की हर संभावना खत्म हो सकती है। अध्ययन के लिए अनुसंधानकर्ताओं ने नासा के केपलर टेलिस्कॉप से मिले आंकड़े का इस्तेमाल किया जो अन्य तारों के बारे में सूचना एकत्र करता है। ***प्रस्तुति: अभिजय शर्मा***

आधुनिक बांसुरी के जनक पन्नालाल घोष

मारूति चटर्जी

पन्नालाल घोष आधुनिक बांसुरी के जन्मदाता माने जाते हैं। उन्होंने बांसुरी जैसे लोकवाद्य को शास्त्रीय वाद्ययंत्र के रूप में स्थापित किया। उन्हीं के प्रयास से बांसुरी का आज के फ्यूजन संगीत में भी अहम स्थान है। पन्नालाल घोष ने कई फिल्मों में बांसुरी वादन किया था जिन्हें आज भी अद्वितीय माना जाता है। 'मुगले आजम', 'बसंत बहार', 'बसंत', 'दुहाई', 'अंजान' और 'आंदोलन' जैसी कई प्रसिद्ध फिल्मों में उन्होंने संगीत दिया।

उनका जन्म बांग्लादेश के बारिसाल में 24 जुलाई 1911 को हुआ था। उनका जन्म नाम अमल ज्योति घोष था। उनके दादा हरि कुमार घोष और पिता अक्षय कुमार घोष कुशल संगीतकार थे। मां सुकुमारी देवी प्रसिद्ध गायिका थीं। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता की देखरेख में हुई, जो कि सुपरिचित सितार वादक भी थे। पन्नालाल घोष ने भी अपनी संगीत शिक्षा सितार वादन से ही शुरू की। बाद में वे बांसुरी की ओर आकर्षित हुए तथा उस्ताद अलाउद्दीन खां से बांसुरी की शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने विख्यात हारमोनियम वादक उस्ताद खुशी मोहम्मद खां से भी दो साल तक संगीत का प्रशिक्षण लिया।

अपने करिअर के दौरान पन्नालाल घोष तत्कालीन समय के महापुरुषों गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर और काजी नजरूल इस्लाम के सम्पर्क में आए। इस दौरान उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान के अलावा बंगाल के समकालीन संगीत और कविता में पुनर्जागरण का भी नेतृत्व किया।

इन्होंने बांसुरी में परिवर्तन कर उसे लोक से शास्त्रीय संगीत में भी उपयोग के अनुकूल बनाया तथा इसकी लंबाई और आकार (7 छेदों के साथ 32 इंच) पर विशेष ध्यान दिया। पन्नालाल घोष ने कुछ नए रागों की भी रचना की थी, जैसे- चंद्रमौली, दीपावली, जयंत,

कुमारी, नूपुर- ध्वनि, पंचवटी, रत्ना-पुष्पिका, शुक्लापलासी आदि।

इनके प्रमुख शिष्यों में हरिप्रसाद चौरसिया, अमीनुर्रहमान, फकीरचंद्र सामंत, सुधांशु चौधरी, पंडित रासबिहारी देसाई, बीजी कर्नाड, चंद्रकांत जोशी, मोहन नादकर्णी, निरंजन हल्दीपुर आदि हैं।

न्यू थिएटर्स लिमिटेड, कलकत्ता के साथ काम करते हुए संगीत निर्माण में सहायता करने के बाद 1940 में वे अपने संगीत करिअर को और आगे बढ़ाने के लिए मुंबई आ गए। फिल्म 'स्नेह बंधन' (1940) में एक स्वतंत्र संगीतकार के रूप में योगदान किया। फिल्म के लोकप्रिय गाने 'आबरू के कामों में' और 'स्नेह बंधन में बंधे हुए थे, जिन्हें खान मस्तान और बिब्बो ने गाया था। पन्नालाल घोष ने 1952 में उस्ताद अली अकबर खान और पंडित रविशंकर के साथ संयुक्त रूप से फिल्म 'आंधियां' के लिए पृष्ठभूमि बनाई। वे सात-छेद वाली बांसुरी की शुरुआत करने वाले पहले व्यक्ति थे। इस नए छेद को तीव्र-मध्यम होल के रूप में जाना जाता है, जो बांसुरी के नीचे, उंगली के छेद की केंद्र-रेखा से दूर रखा जाता है। छोटी उंगली को इस छेद तक पहुंचने में सक्षम बनाने के लिए पकड़ को भी बदल दिया गया था। दरबारी जैसे रागों के लिए जहां निचले सप्तक (मंद्र सप्तक) का विस्तार से पता लगाया जाता है। पन्नालाल घोष ने सिर्फ चार छेदों के साथ एक और बांस बांसुरी का आविष्कार किया, जो लगभग 40-42 इंच लंबी थी। यह अतिरिक्त छेद भारतीय बांसुरी को लगभग पश्चिमी रिकार्डर की तरह बजाने योग्य बनाता है, जिसमें केवल एक और अतिरिक्त रियर होल होता है, जो माउथपीस की ओर ऊपर रखा जाता है, जो बाएं अंगूठे के पास रहता है। उनके द्वारा तैयार की गई बांस की लम्बी बांसुरी को बाद के बांसुरीवादकों ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में उपयोग कर उसे लोकप्रिय बनाया। उनका निधन 20 अप्रेल 1960 को हुआ।

आम की मोहब्बत में हुए सब शायराना

मिर्जा गालिब का आम प्रेम किस्सागोई का सबब है। आम के लिए वह कभी बादशाह से तो कभी अपने दोस्त से नोक-झोंक पर उतर आते थे। मशहूर शायर जोश मलिहाबादी ने भी आम के लिए अपनी तड़प को एक खत में दर्ज किया था। पेश हैं इनके आम प्रेम के कुछ किस्से।

अपने देश में गर्मियों और आम की जुगलबंदी कुछ इस तरह से है कि तपती दोपहरी की आहट भर से ही घर-घर में मानो इस मीठे रसदार फल का उत्सव सा मनाया जाने लगता है। आम को लेकर किस्से-कहानियों के अपने-अपने जलवें हैं। ऐसे ही कई किस्से और वाकये उर्दू के मशहूर शायर मिर्जा गालिब के नाम से भी जुड़े हैं, जिन्हें आम दीवानगी की हद तक पसंद थे।

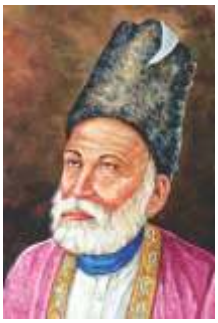

हुआ यूं कि एक बार मिर्जा गालिब मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के साथ लाल किले के मेहताब बाग में टहल रहे थे, जहां आमों से लदे ढेरों पेड़ थे। मिर्जा गालिब बड़ी शिद्दत से हर आम को निहार रहे थे। जब बादशाह ने उनसे उसका कारण पूछा तो उन्होंने हाथ जोड़कर बड़ी चतुराई से जवाब दिया- ' मैने सुना है कि दाने-दाने पर खाने वाले का नाम लिखा होता है तो मैं सिर्फ यह जांचने की काशिश कर रहा हूं कि कहीं किसी आम पर मेरा या मेरे दादा-परदादा का नाम तो नहीं लिखा।' उनकी हाजिर जवाबी से खुश होकर बादशाह ने उसी दिन आमों से भरा एक टोकरा उनके घर भिजवा दिया।

ऐसे ही एक बार गालिब अपने जिगरी दोस्त हाकिम राजी के साथ अपने घर के बरामदे में बैठे थे, तभी सामने की सड़क से एक गधा गाड़ी निकली। वहां सड़क पर आम के कुछ छिलके भी पड़े थे, जिन्हें एक गधे ने सूंघा और आगे चल दिया। हाकिम आमों के कोई खास मुरीद नहीं थे, लेकिन वह गालिब की आमों के प्रति मोहब्बत से अच्छी तरह से वाकिफ थे और इसीलिए उन्होंने फौरन इस पर चुटकी लेते हुए कहा- 'देखो मिर्जा, गधे तक आम नहीं खाते।' गालिब, हाकिम की बात का तेज समझ गये और उन्होंने तुरंत जवाब दिया- 'बेशक, गधे ही तो आम नहीं खाते।'

किस्से हैं कि उनके अनुसार, 'आम में सिर्फ दो खूबियां होनी चाहिए। पहली तो यह की आम बहुत मीठा हो और दूसरी ये कि वे बहुत सारे हों।' वे यह भी कहते थे, 'जो लोग समझदार हैं, वो जानते हैं कि सिर्फ आम ही मेरी भूख और मेरी आत्मा को तृप्त कर सकता है।

प्रस्तुतिः विशाल ठाकुर

एक खत आम के नाम

कहते हैं कि पाकिस्तान में बसने के बाद मशहूर शायर जोश मलीहाबादी ने जो सबसे पहला खत अपने भाई को लिखा, उसमें आम की सुगंध से भरे अपने शहर से बिछड़ने का दर्द लिख भेजा था। खत कुछ इस तरह था-

'आम के बागों में जो कोयलें बोलने वाली हैं, उनकी कूक से और जो बौर निकलने वाले हैं, उनकी खुशबू से, मुझ बदनसीब का सलाम कहना। और मां-बाप की कब्रों से जाकर कह देना कि बदनसीब को इस बात का बहुत कलक है कि उसकी कब्र अब उनके पांयती नहीं बन सकेगी।' जोश मलीहाबादी ने हिन्दुस्तान छोड़ते समय आम पर एक दर्दभरी नज्म भी लिखी।

आम के बागों से जब बरसात होगी पुरखरोश।
मेरी फुरकत में लहू रोएगी, चश्मे मय फरोश।।
रस की बूंदें जब उड़ा देंगी गुलिस्तानों के होश।
कुंज-ए- रंगी में पुकारेंगी हवाएं 'जोश-जोश'।।
सुन के मेरा नाम मौसम गमज़दा हो जाएगा।
एक महशर सा गुलिस्तां में बयां हो जाएगा।
ए मलिहाबाद के रंगी गुलिस्तां अलविदा।।

प्रत्यूष

आयुर्वेद की अनदेखी से भोजन बन रहा जहर

भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में खानपान के जिन सूत्रों को उपयोगी बताया गया है उनकी अनदेखी आज शरीर के लिए जहर साबित होने लगी है। नए आधुनिक अनियमित जीवनशैली ने कम उम्र में पाचन तंत्र से संबंधित कैंसर का खतरा बढ़ा दिया है। नेचर रिव्यू क्लीनिकल ऑन्कोलॉजी में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक 50 से कम उम्र वालों को यह बीमारी तेजी से जकड़ रही है।

दुनियाभर में 14 तरह के कैंसर मरीजों की संख्या में वृद्धि देखी गई है। इनमें से आठ पाचन तंत्र से संबंधित हैं। हम जो भोजन करते हैं वह हमारे आंत में सूक्ष्मजीव खाते हैं। आहार सीधे माइक्रोबायोम संरचना को प्रभावित करता है और अंततः ये परिवर्तन रोग जोखिम और परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।

गलत भोजन बीमारी की जड़

शोधकर्ताओं ने पाया कि 1950 के दशक के बाद से प्रोसेस्ड फूड, मीठा पेय, मोटापा, टाइप-2 मधुमेह, गतिहीन जीवन शैली और शराब का सेवन जैसे जोखिम कारकों ने कैंसर की बीमारी में बढ़ोतरी की है। कैंसर की वजह जानने को अध्ययन किया।

12 साल तक किए अध्ययन के बाद जानी कैंसर के पीछे की वजह

''जोखिम हर पीढ़ी के साथ बढ़ रहा है। जैसे 1950 के मुकाबले 1960 में पैदा हुए लोगों ने 50 वर्ष की आयु से पहले उच्च कैंसर जोखिम का अनुभव किया। यह जोखिम स्तर लगातार पीढ़ियों में बढ़ते रहने की आशंका है।

–शुजी ओगिनो, शोध दल के प्रमुख

50 से कम उम्र में कैंसर का जोखिम

बॉस्टन के ब्रिघम अस्पताल के शोधकर्ताओं ने पाया कि 1990 के बाद से 50 वर्ष से पहले की उम्र के लोगों में कैंसर की बीमारी में वृद्धि हुई है। इनमें किडनी, लिवर, पैंक्रियाटिक, ब्रेस्ट, कोलन, एसोफैगल और कोलन कैंसर के मामले सबसे ज्यादा सामने आ रहे हैं। वर्ष 2000 से 2012 के बीच यह अध्ययन किया गया है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति में इन पर जोर

प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति में हित भुक, मित भुक, ऋतु भुम पर जोर दिया गया है। मूलतः यह सिद्धांत आयुर्वेद विज्ञान के आचार्य वागभट्ट ने दिए थे। हित भुक यानी उम्र और शरीर का हितैषी भोजन जबकि मित भुक का अर्थ है कम खाना। इसी तरह ऋतु भुक का

पाठक पीठ

यह चिंता का विषय है कि हरिद्वार से लेकर गंगा सागर तक गंगाजल इतना दूषित हो चुका है कि पीने की तो बात छोड़िए, नहाने के लायक तक नहीं रहा। गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करने की अरबों रूपयों की परियोजना का वर्षों बाद भी कोई सार्थक परिणाम नहीं आना खतरे के बढ़ने का ही संकेत है। इसे इस नदी के किनारे बसी आबादी और उद्योगों ने ही गंदला किया है, पानी में प्रदूषण तत्व बढ़ रहे हैं और ऑक्सीजन लेवल कम हो रहा है। हमारी आस्था और अटूट श्रद्धा की इस इन नदी की पवित्रता को बनाए रखना बेहद जरूरी है। इस सम्बंध में प्रत्यूष के जून अंक में प्रकाशित आलेख सामयिक था।

शैलेन्द्रकुमार पांडेय, प्रेसिडेंट, बांसवाड़ा सिंटेक्स लिमिटेड, बांसवाड़ा

प्रत्यूष के माह जून के अंक में अमित शर्मा के आलेख 'आबादीः सबसे आगे हिन्दुस्तानी' में उम्मीद और चुनौतियों का अच्छा लेखा–जोखा है। भारत दुनिया का सबसे बड़ी आबादी वाला देश तो बन गया है लेकिन उसी अनुपात में इस बढ़ती आबादी के लिए संसाधन भी बढ़ाने होंगे। यह इतना आसान भी नहीं है, अतः बढ़ती आबादी एक अवसर है तो चुनौती भी। जनता और सरकार को इस दिशा में अभी से गंभीरता विचार करना होगा।

के.जी. गुप्ता, वाइस प्रेसिडेंट, लिपि डाटा सिस्ट्म्स, उदयपुर

प्राणवायु का जीवन में क्या महत्व है, यह दुनिया को वर्ष 1920–21 में चरम पर रही कोरोना महामारी ने बता दिया। भारतीय संस्कृति और परम्पराओं में हमने सदैव पृथ्वी को माँ का दर्जा दिया है, उसकी पूजा की है। इसलिए कि प्रकृति–पृथ्वी एक बालक की ही तरह हमारा पोषण करती है। ऐसे में इनका श्रृंगार–संरक्षण हमारी भी जिम्मेदारी है। पर्यावरण को बिगड़ने से बचाने के लिए हमें प्रकृति के सद्भाव में रहना होगा, वनों का बचाव और अधिकाधिक पेड़ों को लगाना और संरक्षण करना होगा।

मुकेश सैनी, वनअधिकारी उदयपुर

एक बेहतर समाज की रचना के लिए संस्कार युक्त शिक्षा का होना आवश्यक है। आज के बच्चे ही कल के भारत का भविष्य है। इन्हे स्कूलों में तो एक अच्छा नागरिक बनाने के प्रयास होते ही हैं, घरों पर भी इस दिशा में अभिभावकों को सचेष्ठ रहने की आवश्यकता है। बच्चों में परस्पर सद्भाव, देश भक्ति, कर्तव्य बोध दूसरों की सेवा–सहायता के साथ ही श्रम के प्रति निष्ठा के भाव जग्गृत करने के प्रयास जरूरी हैं। इस सम्बंध में मई के अंक में छपा गीता तिवारी का आलेख अच्छा लगा।

ग्लोरी फिलिप, डायरेक्टर, सेंट मैथ्यू स्कूल

शुभ दिशा ज्ञान

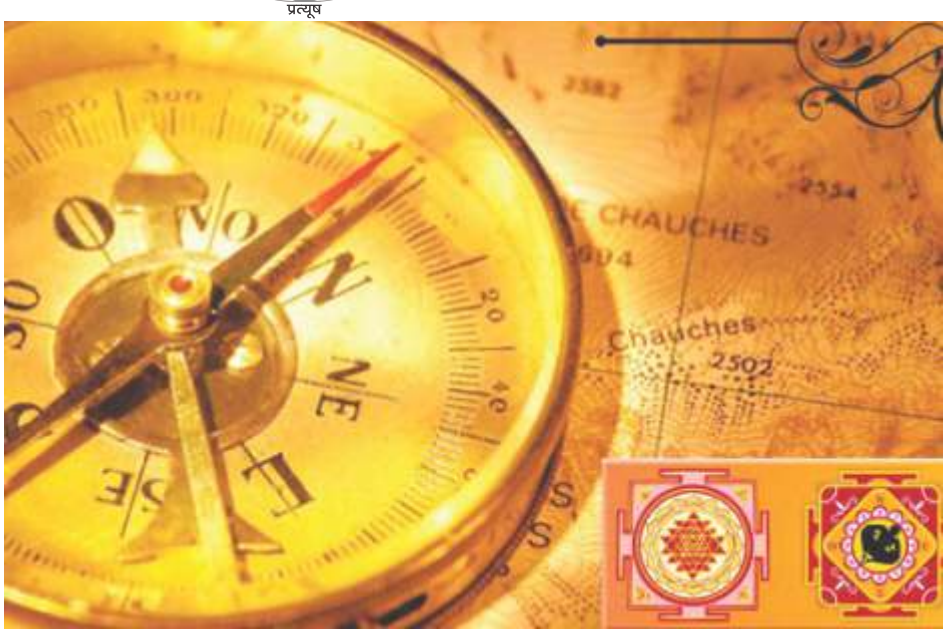

पं. दयानंद शास्त्री

वास्तु,विज्ञान की वह शाखा है जो मनुष्य व उसके चारों और व्याप्त वातावरण का अध्ययन करती है और उसे मनुष्य की शक्ति व मानसिक स्थिति के अनुकूल बनाने में सहायता करती है। आज के वैज्ञानिक समय में जबकि साधारण व्यक्ति जीवन का 90 प्रतिशत हिस्सा भवन के अंदर व्यतीत करता है (चाहे वह खाली जगह हो, घर हो या कार्यकाल) यह और भी जरूरी हो जाता है कि हम उस स्थान का चयन या निर्माण वैज्ञानिक आधार पर करें।

सुख, समृद्धि, शांति व वैभव की दिनोंदिन वृद्धि हो और जीवन आनंद से परिपूर्ण हो जाये इसके लिए वास्तु-ज्ञान और उसके अनुकूल व्यवहार जरूरी है।

घर में झाड़ू, लकड़ी, निसरनी इत्यादि खड़ी अवस्था में कमी नहीं रखनी चाहिए अन्यथा शत्रुओं का बोलबाला रहता है। इन वस्तुओं को लेटी हुई अवस्था में ही रखना चाहिए।

घर की सीमा में कांटे वाले पौधे कैक्टस, अर्जुन के लंबे वृक्ष, सहजने का वृक्ष नहीं लगाएं। इससे आकस्मिक घटनाओं को प्रोत्साहन मिलता है और परेशानियां पैदा होती हैं। तुलसी के पौधे का घर में होना लाभदायक है। इससे वातावरण शुद्ध होता है और रोगों से भी रक्षा होती है। सड़क पर मिले पैसों को धोकर पूजा स्थान पर रखकर रोजाना पूजा करनी चाहिए इससे धन की वृद्धि होती है। घर के मुख्य द्वार के दोनों ओर दूधपानी मिलाकर डालें बीच में हल्दी का स्वास्तिक बनायें उस पर गुड़ की छोटी डली रखकर चार बूंद पानी की डालकर पूजा करें। इससे भवन के अनेक दोष दूर होंगे। गणपति या अपने इष्टदेव की प्रतिमा, तस्वीर घर के मुख्य द्वार के ऊपर सड़क की ओर मुख करके नहीं लगानी चाहिए क्योंकि गणपति जी की पीठ के पीछे दरिद्रता का वास होता है। इसलिए गणपति की प्रतिमा मुख्य द्वार के ऊपर अंदर की ओर लगावें। इस से सुख-समृद्धि व शांति में वृद्धि होती है। भवन की छत साफ रखें। छत पर चौखट या फालतू सामान उल्टा मटका इत्यादि नहीं रखे इससे दरिद्रता आती है।

मुख्य द्वार के ऊपर बिजली का मीटर नहीं लगवायें। इससे शुभ कार्यों में बाधाएं आती हैं। पानी की टंकी भवन के मुख्य द्वार के ऊपर कभी नहीं रखनी चाहिए। इससे हृदय संबंधी रोग होने की संभावनाएं रहती हैं। मकान चौरस हो (लंबाई-चौड़ाई समान हो) या चौड़ाई से लंबाई दूनी होनी चाहिए। मकान हवादार, चारों ओर से खुला हुआ सूर्य की रोशनी से युक्त हो। मकान की छत ऊंची और छत से लगी हुई सीमेंट या लोहे की जालियां हों जिससे शुद्ध वायु का आवागमन बना रहें। अलमारी जिसमें कपड़े, धन इत्यादि रखते हों उत्तर दिशा में रखें। अलमारी का मुख दक्षिण दिशा में नहीं खुलना चाहिए। भोजन पकाने का स्थान पूर्व दक्षिण में होना चाहिए। इससे भोजन शरीर को लगता है। पाचन क्रिया ठीक रहती है तथा स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। सीढ़ियों के नीचे शौचालय, बिजली की मोटर या बिजली की मीटर न रखें। इससे घर में अशांति का वातावरण बना रहता है। पढ़ने-लिखने की पुस्तकें उत्तर दिशा में रखें। उत्तर दिशा के अलावा अन्य दिशाओं में पढ़ाई का सामान रखने से अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा।

परम लक्ष्य मानव

जहां हमें पूरा समय बिताना है उसका पूर्ण अध्ययन नितांत जरूरी है। भू–स्थल, भूगर्भ की स्थिति, भूमि की गुणवत्ता, नीचे बहने वाले पानी की स्थिति, आसपास का वातावरण सभी का गहन अध्ययन जरूरी है। जब सभी आयाम व्यक्ति के अनुकूल होंगे, तभी उसकी कार्यकुशलता में वृद्धि होगी, तभी उसमें रहने वाला मानसिक रूप से शांत होगा और उसकी उन्नति होगी।

वास्तु का परम लक्ष्य है मानव। यह विज्ञान मानव मन को शांति प्रदान करने वाली स्थिति का निर्माण करता है। मनुष्य का स्वास्थ्य चिकित्सा विज्ञान का भी अंतिम लक्ष्य है। इस प्रकार वास्तु को एक प्रकार की चिकित्सा पद्धति भी कहा जाता सकता है। आज प्रकृति से अलगाव एवं प्रदूषण द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों में वास्तु का ज्ञान और उसका अनुकरण हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

–डॉ. वी.के.नानेरिया

Mahesh Dhannawat, Director

With Best Compliments

Mobile
8740894999
9784804888

HOTEL GLOBAL INN

FACILITIES

- 17 Rooms
- Air Conditioner
- Wi-Fi Elevator
- In-Room Safe
- Iron
- Security Enabled Locks
- LED with Satellite Channels
- Hair Dryer
- Onsite Parking
- Plush Mattresses
- 24 Hrs Room Services

Mobile: 94133 18989

JAIN PROPERTIES

Contact For : Purchase a Sales of Property
Land, building, Plots, Banglow Etc.

7, Dhannawat Tower, Shastri Cricle, Bhopalpura Road, Udaipur (Raj.)
e-mail: dhannawat98@gmail.com

प्रत्यूष

मन हर लेंगे पकौड़े

बरसात का मौसम आरंभ हो चुका है। जब वर्षा होती है तो पूरा माहौल हरित चादर ओढ़ लेता है। ऐसे मौसम में कभी-कभी कुछ अलग खाने का मन हो जाता है। इस बार आप भी बनाएं कुछ खास। झमाझम बारिश के इस मौसम में पकोड़ ही क्यों न बनाए जाएं।

शिवलिका

पनीर ब्रेड पकोड़ा

सामग्री: 4 स्लाइस ब्रेड, 1/5 कप बेसन, 150 ग्राम पनीर, थोड़ा बारीक कटा हरा धनिया, 2 बारीक कटी हरी मिर्च, 1 छोटी चम्मच अजवायन, 1 छोटी चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 छोटी चम्मच धनिया पाउडर, 1 पिंच बेकिंग सोडा, 1 छोटी चम्मच चाट मसाला, स्वादानुसार नमक और तलने के लिए तेल।

विधि: एक बड़े प्याले में बेसन लेकर थोड़ा पानी डालकर पतला घोल बना लीजिए। अब इस घोल में अजवायन, लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर और थोड़ा सा नमक डाल दीजिए। अब बेटर में बेकिंग सोडा डालकर अच्छे से मिक्स कर लीजिए। एक प्लेट में पनीर को कद्दूकस कर लीजिए। अब इसमें थोड़ा सा नमक, हरी मिर्च और बारीक कटा हरा धनिया डाल दीजिए। पनीर में मसाले अच्छे से मिक्स कर लीजिए। एक ब्रेड प्लेट में रखिए और इस पर स्टफिंग रखिए और अच्छे से फैलाकर लगा दीजिए। इस पर दूसरी ब्रेड रखिए और अच्छे से दबा दीजिए। इसके बाद ब्रेड को चाकू से बीच में से आधा करते हुए तिकोनाकार काट दीजिए। इसी तरह से सारी ब्रेड को स्टफिंग भरकर व काटकर तैयार कर लीजिए। कड़ाही में तेल डालकर गरम कर एक–एक कर पकौड़े तल लें। आपके पनीर ब्रेड पकौड़े तैयार है। पकौड़ों को हरे धनिये की चटनी या टमेटो सॉस के साथ खाइए।

भुट्टा पकौड़ा

सामग्री: 4–5 ताजे नर्म भुट्टे, एक कप बेसन, 1 शिमला मिर्च, 1 प्याज, आधा कप पत्ता गोभी सब बारीक कटे हुए, 1 चम्मच अदरक हरी मिर्च का पेस्ट, 1 चम्मच चिली सॉस, 2 चम्मच सोया सॉस, स्वादानुसार नमक और तलने के लिए तेल।

विधि: सबसे पहले भुट्टे कद्दूकस कर लें। फिर इसमें बारीक कटी सब्जियां, दोनों तरह के सॉस, नमक, अदरक हरी मिर्च पेस्ट डालकर अच्छे से मिला लें और थोड़ा गाढ़ा घोल तैयार कर लें। अब एक कड़ाही में तेल गर्म करें। इसमें भुट्टे के मिश्रण के पकोड़े मध्यम आंच पर सुनहरे होने तक तल लें। पेपर पर अतिरिक्त तेल निकालने के लिए रखें। मनभावन भुट्टा पकौड़ों को टोमॅटो सॉस या हो चटनी के साथ गरमा– गरम परोसें।

मैगी पकोड़े

सामग्री: 300 मिली पानी, 2 पैकेट मैगी, 2 पैकेट मैगी मसाला, 70 ग्राम पत्तागोभी, 70 ग्राम प्याज, 70 ग्राम शिमला मिर्च, 25 ग्राम धनिया, 1 चम्मच नमक, 2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 45 ग्राम सूजी, 35 ग्राम बेसन, 2 चम्मच पानी।

विधि: एक पैन में पानी डालकर उबालें। अब इसमें मैगी और मैगी मसाला डालकर अच्छे से मिक्स करें और पकाएं। बाद में बाउल में निकाल लें। अब इसमें पत्तागोभी, प्याज, शिमला मिर्च, धनिया, नमक, लाल मिर्च पाउडर, सूजी, बेसन और पानी डालकर अच्छे से मिक्स कर लें। थोड़ा–सा मिक्सर लेकर छोटी–छोटी बॉल्स बना लें और साइड पर रख दें। एक पैन में तेल गर्म करके इन्हें अच्छे से फ्राई करें। इन्हें तब तक फाई करें जब तक इनका रंग हल्का गोल्डन ब्राउन न हो जाएं। मैगी पकोड़े तैयार है। इन्हें गर्मा–गर्म सर्व करें।

टेस्टी पालक पकौड़े

सामग्री: 15 से 20 पालक के पत्ते, 1 कप बेसन, 2 चम्मच चावल का आटा, स्वादानुसार नमक, 1 बारीक कटी हरी मिर्च, 1/4 छोटी चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1/4 छोटी चम्मच अजवायन, तेल तलने के लिये।

विधि: सबसे पहले पालक के पत्तों को पानी से अच्छे से धो लें और पानी सुखाकर रख लीजिए। अब बेसन को चलनी से किसी बर्तन में चान लीजिये। अब इसमें पानी डाल कर गाढ़ा घोल बनाइये। याद रहे इसमें गुठलियां न रहें। इसमें चावल का आटा भी मिला लें और बहुत अच्छे से घोल बना लीजिए। अब बेसन के इस घोल में अजवाइन, लाल मिर्च पाउडर, नमक, हरी मिर्च डाल दीजिए। अब इस घोल को 3 से 4 मिनिट तक फेंट लीजिए। अब इसे 10 मिनिट के लिये रख दीजिये। ध्यान रहे घोल एकदम पकौड़ी के घोल की तरह ही गाढ़ा हो। अब गैस पर एक तरफ कढ़ाई में तेल गर्म होने को रख दीजिये। जब तक तेल गर्म हो तब तक एक–एक साबूत पालक की पत्ती को बेसन के घोल में डुबो कर कढ़ाई में डाल कर तलें। जब एक साइड पकौड़े तल जाएं। तो दूसरी तरफ भी गोल्डन ब्राउन होने तक तल लीजिये। अब इन स्वादिष्ट पकौड़ों को टोमेटो केचप या हरी चटनी के साथ खाएं।

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

धन संबंधित मामले में पक्ष में रहेंगे, व्यापार में नए अवसर प्राप्त होंगे। अहंकार नुकसान पहुंचा सकता है। अधिकारी वर्ग संतुष्ट रहेंगे, प्रतियोगी परीक्षार्थी निराश होंगे। परिवार में वाद–विवाद, कम बोलें और संयम से काम लेंवे। स्वास्थ्य में गड़बड़, किसी विषय में मानसिक चिंता रहेगी।

वृषभ

नए समझौते से नए अवसर प्राप्त होंगे। किंतु पर्याप्त ध्यान न देने से मन मसोस कर रह जाएंगे, सजग रहें, स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम समय है। नौकरी पेशा जातकों को भी अच्छा लाभ मिलेगा। दीर्घकालीन निर्णय लाभप्रद रहेंगे। कई अवसरों में से किसी एक को चुनना दुविधाप्रद रहेगा। सहयोगियों से उचित मार्गदर्शन प्राप्त करें।

मिथुन

स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें, गले व पेट संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। परिवार में समरसता रहेगी। व्यापारिक गतिविधियां चरमरा सकती है, पुराने मित्र सहयोग करेंगे। नौकरीपेशा जातक अनमने रहेंगे। प्रतियोगी परीक्षार्थी नई ऊर्जा लेकर कार्य करेंगे। दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। शत्रु पक्ष आपके प्रति नरमी दिखा सकता है।

कर्क

आध्यात्मिकता के प्रति झुकाव, धर्म–कर्म, दान–पुण्य के कार्य परिवार में होंगे। भाई–बहिनों को खुश रखें। व्यापार में नये समझौते आएंगे, अच्छे से विचार–विमर्श करके ही कोई निर्णय लेंवे। शत्रु के प्रति मीठी वाणी कारगर साबित होगी, नौकरी पेशा जातक अड़चने महसूस करेंगे, कार्यक्षेत्र में विवाद, स्वास्थ्य उत्तम।

सिंह

अधिकतर समय परिवार के साथ, हर्षोल्लास से व्यतीत होगा, व्यापार–कारोबार में लाभ मिलेगा। परिवार की आर्थिक स्थिति बदल सकती है। कोई भी निर्णय परिवार वालों से अवश्य साझा करें। सहकर्मियों से नोक–झोक होगी। दाम्पत्य जीवन व्यवस्थित रहेगा। भटकाव ठीक नहीं, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

कन्या

परिवार में माहौल खुशनुमा रहेगा। आपसी मेलजोल बढ़ेगा। घर की बात बाहर न करें वरना परिणाम भयंकर होंगे। व्यापार में कमी का अनुभव करेंगे। व्यापार में परिवर्तन भी संभव है। राजकीय कर्मचारी भी खुशी से लबरेज रहेंगे। दाम्पत्य जीवन में उथल–पुथल संभव है। सिरदर्द, जुकाम खांसी, पीठ दर्द से परेशानी संभव।

तुला

पारिवारिक माहौल उत्तम, मां को कष्ट संभव है। परिवार में किसी सदस्य की दुर्घटना संभव है। सावधानी से व्यवहार करें। व्यापार में अपने साझेदार से धोखा मिल सकता है, धन भी अटक सकता है। आर्थिक स्थिति भी सामन्य नहीं कही जा सकती, शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। शासकीय मामले पक्ष में बनेंगे।

इस माह के पर्व/त्योहार

3 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा	गुरू पूर्णिमा
11 जुलाई	श्रावण कृष्णा नवमी	गुरू हरकिशन जयंती/ जनसंख्या दिवस
17 जुलाई	श्रावण कृष्णा अमावस्या	सोमवती (हरियाली) अमावस्या
18 जुलाई	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा	पुरूषोतम मास प्रारंभ
20 जुलाई	श्रावण शुक्ल तृतीया	मोहर्रम मास प्रारंभ (सन् 1445 हिजरी)
23 जुलाई	श्रावण शुक्ल पंचमी	बाल गंगाधर तिलक जयंती
26 जुलाई	श्रावण शुक्ल अष्टमी	कारगिल विजय दिवस
29 जुलाई	श्रावण शुक्ल एकादशी (ताजिया)	कमला एकादशी/ मोहर्रम जनसंख्या दिवस

वृश्चिक

परिवार में खटास आ सकती है, जिसके कारण रिश्तों में दूरियां बढ़ेगी, भाई–बहिनों के साथ मन–मुटाव संभव। व्यापार की दृष्टि से मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। हानि की भी संभावनाएं बनेंगी। कोई भी निर्णय अपने वरिष्ठजनों की सहमति से करें एवं शत्रु पक्ष पर पूर्ण चौकसी रखे। पेट से संबंधित परेशानियां उठ सकती है।

धनु

परिवार में सुखद आयोजन होना है। मन लगा रहेगा। अपने पिता से विवाद हो सकता है। उनके परामर्श को ध्यान से सुनें। व्यापारिक दृष्टि से मंदी का अनुभव करेंगे। आप अन्य क्षेत्रों से कमाने का यत्न करेंगे। आपके प्रतिद्वंद्वी हानि पहुंचा सकते हैं। नौकरी में वरिष्ठजनों से प्रोत्साहन मिलेगा। दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

मकर

परिवार में संपत्ति को लेकर पुरानी बात छिड़ सकती है। परिवार में किसी भी सदस्य का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिससे परेशानियों का तांता लगेगा। व्यापार में हानि की संभावना बनेगी। बाजार में नकारात्मक छवि बन सकती है। दाम्पत्य जीवन अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह कमजोर सिद्ध होगा।

कुम्भ

परिवार में हर्षोल्लास रहेगा। कुछ विशेष करने का प्रयत्न करेंगे। व्यापारी वर्ग अपने प्रतिद्वंद्वियों से सावचेत रहें। विरोधी परोक्ष रूप से हानि पहुंचा सकते हैं। कर्मचारियों को अपने सहयोगियों से भरपूर लाभ मिलेगा। दाम्पत्य जीवन आनंदमय रहे। स्वास्थ्य में पेट संबंधी बीमारियां संभव है। अस्थमा संभव।

मीन

पिता के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। घर में किसी उत्सव या धार्मिक आयोजन की संभावना है। बच्चों की चचंलता परेशानियों का सबब बन सकती है। नौकरी पेशा को चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। जीवन साथी को लेकर चिंतित रहेंगे एवं परस्पर विश्वास में कमी रहेगी।

प्रत्यूष समाचार

दिव्यांग सेवा के लिए सरकार प्रतिबद्धः गहलोत

उदयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में दिव्यांगों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। जयपुर में बाबा आम्टे दिव्यांग विश्वविद्यालय खोलने की बजट में घोषणा की गई है, जहां इन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त होगी। वे अपने भविष्य को संवार सकेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने दिव्यांगों को टैक्स में भी कई तरह की राहत दी है। गहलोत गत दिनों नारायण सेवा संस्थान के कृत्रिम अंग माप एवं वितरण समारोह में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि संस्थान में दिव्यांगों द्वारा कई विधाएं सीखी जा रही हैं। यह उनके भविष्य के लिए उपयोगी साबित होंगी। उन्होंने दिव्यांगों से

बातचीत करते हुए उनका हौसला बढ़ाया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने उनके चित्र की रंगोली बनाने वाली दिव्यांग जया महाजन को राज्य सरकार की ओर से स्कूटी देने की घोषणा की। कार्यक्रम में पोलियो ग्रस्त जगदीश पटेल ने व्हील चेयर के माध्यम से धन्यवाद जननायक अशोक गहलोत, महंगाई से राहत दिलाई राजस्थानी गीत पर नृत्य की प्रस्तुति भी दी। इस अवसर पर राजस्व मंत्री रामलाल जाट, जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री अर्जुन सिंह बामनिया, पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री व विधायक गोविंद सिंह डोटासरा, संस्थान के पदाधिकारी और दिव्यांगजन उपस्थित थे। प्रारंभ में संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए अश्वारूढ़ महाराणा प्रताप की प्रतिमा भेट की। अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, सह संस्थापिका कमला देवी व निदेशक वन्दना अग्रवाल ने शाल व उपरणा ओढ़ाकर उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

संभागीय आयुक्त द्वारा पुस्तक विमोचन

उदयपुर। राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजनान्तर्गत आयाजित मैत्री प्रशिक्षण शिविर में 'पशुपालन में कृत्रिम गर्भाधान तकनीकी से स्वरोजगार के अवसर' पुस्तक का विमोचन संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने किया। इस अवसर पर ओ.एस.डी. सलूम्बर प्रताप सिंह, कमिश्नर टी.ए.डी. मयंक मनीष, सीइओ स्मार्ट सिटी अपर्णा गुप्ता मौजूद रहे। पशुपालन विभाग के अधिकारी डॉ. लक्ष्मीनारायण, डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी एवं डॉ. सुरेश शर्मा ने पुस्तिका का विमोचन कराया।

संयमित जीवन शैली में सफलता

उदयपुर। सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता, समर्पित होकर मेहनत करने वालों के लिए सफलता के रास्ते खुलते हैं। ऐसे में विद्यार्थी संयमित और नियमित जीवन शैली से ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यह बात पूर्व सांसद रघुवीर मीणा ने कही। वे हिरणमगरी स्थित दक्ष एकेडमी में आयोजित मुख्यमंत्री अनुप्रति निशुल्क कोचिंग योजना और फ्री करियर गाइडेंस का सेमीनार के शुभारंभ कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. जितेंद्र जोशी, मोड़ीलाल सेंबारा थे। अध्यक्षता संस्था निदेशक गणपत यादव ने की।

वृद्धाश्रम का अवलोकन

उदयपुर। तारा संस्थान द्वारा संचालित श्रीमती कृष्णा शर्मा आनंद वृद्धाश्रम का राज्यमंत्री एवं कार्यकारी अध्यक्ष राजस्थान वरिष्ठ नागरिक कल्याण बोर्ड गोपाल सिंह शेखावत ने अवलोकन किया। वे वृद्धाश्रम की साफ-सफाई एवं भोजन व्यवस्था से बहुत ही प्रभावित हुए। इसके लिए वृद्धाश्रम की संस्थापक कल्पना गोयल को बधाई दी। सतीश अग्रवाल ने उन्हें संस्थान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। संचालन निदेशक (जन सम्पर्क) विजय चौहान ने किया।

मयंक जिला संयोजक नियुक्त

उदयपुर। भाजपा देहात जिलाध्यक्ष डॉ. चंद्रगुप्त सिंह चौहान ने मयंक कोठारी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक रेडियो संवाद कार्यक्रम मन की बात का जिला संयोजक नियुक्त किया है। कोठारी इससे पूर्व उदयपुर शहर भाजयुमो जिला महामंत्री रहे हैं।

वेटरन टेनिस खिलाड़ी भारतीय टीम में

उदयपुर। शहर के वेटरन प्लेयर दीपांकर चक्रवर्ती का चयन भारतीय टीम में वर्ल्ड मास्टर्स चैंपियनशिप के लिए हुआ है। उदयपुर से पहली बार भारतीय वेटरन टीम में शामिल होने वाले दीपांकर 13 अगस्त को पुर्तगाल में होने वाली प्रतियोगिता में खेलेंगे। मास्टर्स टेनिस चैंपियन के लिए दीपांकर चक्रवर्ती, पवन जैन, संजय कुमार, नागराज रेवानासिद्धाय का चयन हुआ है। दीपांकर 20 साल से टेनिस खेल रहे हैं।

अस्पतालों को सुविधाएं देने वाले दानवीर सम्मानित

उदयपुर। रवींद्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज और इसके अधीन संचालित अस्पतालों में मरीज के लिए प्राथमिकता सुविधाएं मुहैया कराने वाले 43 दानवीरों को गत दिनों कॉलेज सभागार में सम्मानित किया गया। असम के राज्यपाल गुलाबचंद्र कटारिया और राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने भामाशाहों को सम्मानित किया। उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, कॉलेज प्राचार्य डॉ. विपिन माथुर, पूर्व प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल, डॉ. डीपी सिंह व विभागाध्यक्ष मौजूद थे। समारोह में भंवरलाल तायलिया ट्रस्ट के एमके अग्रवाल, हिंदुस्तान जिंक की सीएमआर हेड अनुपम निधि, बोहरा समाज के धर्मगुरू सैयदना मुफद्दल सैफुद्दीन, मिराज ग्रुप के प्रकाश पुरोहित, स्वरूपेन्द्र सिंह छाबड़ा ट्रस्ट के महेन्द्र पाल छाबड़ा व सत्येन्द्र पाल छाबड़ा, पोरवाल ट्रस्ट के डॉ. हेमंत पोरवाल, डॉ. विनोद जसकरण, आईआईएफएफ फाउंडेशन की डायरेक्टर मधु जैन, जीआर इन्फ्रा वेलफेयर सोसायटी के देवकीनंदन अग्रवाल, शकुंतला जैन, प्रो. एसएस लोढ़ा, प्रेमलता मेहता, भगवान महावीर विकलांग सेवा समिति के राज लोढ़ा व गणेश डागलिया, महावीर इंटरनेशनल उदयपुर के सुनील गांग, वर्धमान मेहता, रणजीत सिंह सोजतिया, मानव सेवा समिति वागड़ सेवा संस्थान के संरक्षक भारत सिंह, ब्रिगेडियर विजय सक्सेना, उद्योगपति गोपीराम अग्रवाल, मेयर गोविन्द टाक, डिप्टी मेयर पारस सिंघवी, दलपत सुराना, आरके धाभाई, आरएसएमएमएल के प्रबंध निदेशक संदेश नायक, शीला बोर्डिया को मंच पर अतिथियों ने सम्मानित किया। कोविड महामारी में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिनेश प्रताप सिंह तोमर, विनोद जैन, संजय सिंघल, सीएम राठौड़, केजी गुप्ता, रोशनलाल जैन व अंजली भांगा, जेपी अग्रवाल, आशीष अग्रवाल, डॉ. जेके छापरवाल, डॉ. कीर्ति जैन, डॉ. अरविंदर सिंह, डॉ. अमित धींग को सम्मानित किया गया।

स्वावलम्बन की राह पर महिलाएं

उदयपुर। जरूरतमंद महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए ठेले के रूप में कमाई का जरिया दिया गया। प्रत्येक ठेले में करीब 50 किलो आलू एवं 50 किलो प्यास भी दिए गए, जिसे बेचकर वह अपनी आर्थिक जीविका चलाने की शुरूआत कर सकें। ये अनूठा प्रयास किया गया सूर्यांश क्लब की ओर से। मुख्य अतिथि निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने दस महिलाओं को ठेले भेंट किए। संस्थापक मधु सरीन ने बताया कि जल्द ही गरीब छात्राओं को कम्प्यूटर ट्रेनिंग, ब्यूटीशियन कोर्स, फोटोग्राफी, पाक कला सिखाने के लिए मुफ्त ट्रेनिंग पर अमल किया जाएगा। विशिष्ट अतिथि निर्मल सिंघवी, डॉ. स्वीटी छाबड़ा, डॉ. श्रद्धा गट्टानी थीं। कार्यक्रम में शकुंतला पोरवाल, सुरभि धींग, उर्वशी सिंघवी, विजयलक्ष्मी गलुंडिया, राज कुमारी गांधी, संध्या भट्ट आदि मौजूद रहीं।

व्यास को मुक्ता लक्ष्मी सम्मान

उदयपुर। युगधारा एवं मुक्ता लक्ष्मी सम्मान समिति के तत्वावधान में इस वर्ष का मुक्ता लक्ष्मी सम्मान कवि सोम शेखर व्यास को प्रदान किया गया। उन्हें श्रीफल, नकद, राशि, शाल, सम्मान पत्र प्रदान किया गया। साथ ही महिला मिलन साहित्य समिति की ओर से बी गौरी भट्ट को नारी रत्न सम्मान प्रदान किया। अध्यक्षता अशोक मंथन ने की। मुख्य अतिथि पं. नरोत्तम व्यास एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. सुषमा जोशी थे।

पगारिया बने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

उदयपुर। अखिल भारतीय पगारिया भाईपा के प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन (भीनमाल) में राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसमें पुणे के अशोक पगारिया को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। प्रथम नवगठित कार्यकारिणी में उदयपुर ओसवाल बड़े साजन सभा के महामंत्री आलोक पगारिया को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री पद पर बीड़ (महाराष्ट्र) की जोशीला पगारिया को मनोनीत किया गया।

532 ट्रक चालकों का नेत्र परीक्षण

ब्यावर (रास)। श्री सीमेन्ट लिमिटेड परिसर में श्री फाउण्डेशन ट्रस्ट, रास द्वारा गत दिनों 3 दिवसीय नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें 532 से अधिक ट्रक चालक एवं सहचालक लाभान्वित हुए। इनमें से 268 लोगों को नि:शुल्क चश्मे भी दिये गए। शिविर का उद्घाटन श्री सीमेन्ट के कलस्टर हैड (उत्तर)सतीश माहेश्वरी, विनय दुबे, बी.एल.शर्मा, आर.एस.चौहान व विशाल जायसवाल ने संयुक्त रूप से किया। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ललित व्यास थे। सतीश माहेश्वरी ने बताया कि श्री फाउण्डेशन ट्रस्ट के माध्यम से कृषि, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के विभिन्न क्षेत्रों में जन कल्याणकारी कार्य किये जा रहे हैं। ट्रक चालक एवं खलासी कम्पनी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अत: इनके स्वास्थ्य की देखभाल आवश्यक है। शिविर में जयपुर के डॉ. देवेन्द्र भादु एवं उनकी टीम ने सेवाएं प्रदान की। प्रबंध निदेशक नीरज अखोरी ने बताया कि कम्पनी की सीमेन्ट निर्माण के साथ ग्रामीण विकास में भी सक्रिय भागीदारी रहती है। संयुक्त अध्यक्ष अरविन्द खीचा ने बताया कि कम्पनी राजस्थान के ब्यावर एवं रास, छत्तसीगढ़ के रायपुर एवं कर्नाटक के कोडला प्लांट में आने-जाने वाले ट्रक चालक एवं सहचालकों के लिये नि:शुल्क नेत्र जॉच शिविर लगा रही है, जिससे कि दृष्टि दोष के कारण होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम हो एवं ड्राइवर सुरक्षित अपने गन्तव्य तक पहुंच सकें।

खान को दिल्ली में मिला अवार्ड

डूंगरपुर। नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित ऑल मीडिया कौंसिल अवार्ड में डूंगरपुर के वरिष्ठ कांग्रेसी एवं पूर्व राज्यमंत्री असरार अहमद खान को एक समारोह में समाज सेवा एवं राजनीतिक क्षेत्र में अवार्ड से नवाज़ा गया। समारोह में मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के मंत्री सोमनाथ भारती थे।

लुक्स सैलून के आउटलेट का उद्घाटन

उदयपुर। लुक्स सैलून ने अर्बन स्क्वायर मॉल, उदयपुर में अपना नया आउटलेट लॉन्च किया है। लुक्स ब्रांड की ओर से उदयपुर में यह पहली लग्जरी हेयर रेंज है, जो स्थानीय लोगों को सेगमेंट में सबसे आकर्षक सुविधाएं प्रदान करेगी। यह आउटलेट 3000 वर्ग फीट में फैला भव्य सुविधाओं और एक उत्कृष्ट इंटीरियर से सुसज्जित है। इसका उद्घाटन डॉ लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने किया। पूरा स्टाफ दिल्ली से है और अपने-अपने क्षेत्र के प्रमुख विशेषज्ञ हैं। भूमिका समूह के एमडी उद्धव पोद्दार ने कहा कि लुक्स सैलून का शुभारंभ जीवन शैली को और बेहतर करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। लुक्स सैलून की फ्रेंचाइजी ऑनर सुश्री प्रियंका शर्मा ने कहा कि उदयपुर में उनका पहला आउटलेट है और हमारा लक्ष्य इस क्षेत्र में अपने ग्राहकों को अपनी सर्वश्रेष्ठ सेवाएं प्रदान करना है। लोरियल-सर्टिफाइड लुक्स सैलून के देश भर में लगभग 194 आउटलेट है।

नेहा प्रदेश सचिव

उदयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अन्य पिछड़ा वर्ग विभाग के प्रदेश अध्यक्ष हरसहाय यादव ने वार्ड 60 की पार्षद नेहा कुमावत को प्रदेश सचिव के पद पर नियुक्ति प्रदान की।

मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना का शुभारंभ

उदयपुर। डॉ. अनुष्का मेमोरियल एजुकेशनल सोसाइटी में मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना 2023-24 का शुभारम्भ मुख्य अतिथि समाज कल्याण विभाग के उप निदेशक मांधाता सिंह व डॉ. दिव्यानी कटारा ने किया। संस्थान के संस्थापक डॉ. एस.एस. सुराणा ने विद्यार्थियों को जीवन में ईमानदारी, लगन तथा परिश्रम से आगे बढने का संदेश देते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। वही अध्यक्षा कमला सुराणा ने विद्यार्थियों को मंगलमय एवं उज्जवल भविष्य के लिए कड़ी मेहनत करने का संदेश दिया। राजीव सुराणा द्वारा सदैव जीवन में नेक रास्ते पर चलते हुए सफलता प्राप्त करने का मार्गदर्शन दिया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के अंतर्गत चयनित विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री एवं बैग प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रंजना सुराणा, डॉ. क्षेत्रपाल सिंह, मनोहर खंजांची, प्रज्ञा खंजांची, भूपेश परमार, राहुल लोढा, प्रणय जैन, राहुल सुराणा, चांदनी परमार, धनवंती सोलंकी, निर्मल मेघवाल आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन ज्योति जैन ने किया। संस्थान के संस्थापक डॉ. एस.एस. सुराणा द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

चौबीसा को डॉ. पूनम दईया फैलोशिप

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. पूनम कृष्णा दईया फैलोशिप 2023 मनीष चौबीसा को प्रदान की गई। इस अवसर पर कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत सहित साहित्य अकादमी अध्यक्ष दुलाराम सहारण, कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर, ट्रस्टी डॉ. सुनील दईया, मीता दईया और महिपाल सिंह भी उपस्थित थे। विद्यापीठ ने डॉ. पूनम-कृष्णा ट्रस्ट को एक लाख रूपए देने की घोषणा

तारा संस्थान ने मनाया स्थापना दिवस

उदयपुर। तारा संस्थान ने अपना 12वाँ स्थापना दिवस श्रीमती कृष्णा शर्मा आनंद वृद्धाश्रम में सोत्साह मनाया। संस्थान अध्यक्ष एवं संस्थापक कल्पना गोयल ने कहा कि उम्मीद नहीं थी कि आज हम एक छोटे से पौधे को इतने विशाल वृक्ष में परिवर्तित होता देखेंगे। तारा संस्थान के रहवासी श्री सतीश अग्रवाल व दीपक शर्मा ने कहा कि तारा संस्थान ध्रुव तारे की तरह हमेशा चमकता रहेगा। उल्लेखनीय है कि तारा संस्थान मुम्बई, दिल्ली, फरीदाबाद, लोनी तथा उदयपुर में ऑई हॉस्पीटल खोलने में सफल रहा है। सभी हॉस्पीटल में 1,35,000 से भी अधिक ऑई ऑपरेशन नि:शुल्क किए जा चुके हैं। इसके अलावा उदयपुर के साथ ही प्रयागराज में भी वृद्धाश्रम है। संस्थान द्वारा बच्चों के लिए स्कूल व विधवा महिलाओं के लिए राशन सामग्री का भी वितरण प्रतिमाह किया जा रहा है। दीपा दुबे, डॉ. संध्या त्यागी, हेमराज पौद्दार ने भी विचार प्रकट किए। तारा संस्थान के वरिष्ठ साधक विजय चौहान, संजय कुमावत, मुकेश शर्मा व देविका शर्मा ने भी विचार प्रकट किये। गीतों व भजनों की प्रस्तुति, रामचन्द्र कुमावत, राजकुमार मेघवाल, पुष्पा गुप्ता, दीपा दुबे, विजय सिंघानिया ने दी। संचालन संगीता देवड़ा ने किया।

डॉ. व्यास की आत्मकथा का लोकार्पण

उदयपुर। शिक्षाविद् एवं साहित्यकार डॉ. श्याम मनोहर व्यास की 108वीं पुस्तक 'दुनिया जैसी मैंने देखी' आत्मकथा का नगर निगम के सुखाड़िया रंगमंच पर पिछले दिनों लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर निगम के वरिष्ठ अधिकारी व साहित्यकार उपस्थित थे।

देवेंद्र साहू कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष

उदयपुर। जिला तैलिक साहू महासभा के अध्यक्ष पिंटू साहू ने पार्षद एवं समाजसेवी देवेंद्र साहू को महासभा का कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया है।

युवा उद्यमी सुथार को बेस्ट यंग एंटरप्रन्योर अवार्ड

उदयपुर। उदयपुर के युवा उद्यमी एवं फोर्टी ब्रांच कमेटी के चेयरमैन प्रवीण सुथार को दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर ऑल मीडिया काउंसिल ने बेस्ट यंग एंटरप्रन्योर अवार्ड 2023 से सम्मानित किया। कान्सटीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. जितेंद्र सिंह शंटी एवं दिल्ली सरकार के मंत्री सोमनाथ भारती थे। जिन्होंने सुथार को लोटस टेक इंडस्ट्रीज को प्री इंजीनियर्स बिल्डिंग निर्माण क्षेत्र में बेहतरीन कार्य के लिए सम्मानित किया।

उत्कृष्ट विद्यार्थियों का सम्मान

उदयपुर। अभिनव स्कूल, आदर्श नगर और रकमपुरा शाखा में प्रतिभावन छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। कक्षा 12 विज्ञान वर्ग से यशवंत कुंवर 97 प्रतिशत, रितिका पूर्बिया 96.80 प्रतिशत, गौरव साहू, 93.80 प्रतिशत, प्रेरणा पालीवाल 90.20 प्रतिशत तथा कक्षा 10 में ऋषिका कुंवर 94.6 प्रतिशत वंशिका वर्मा 93.33 प्रतिशत, विशेष रावल 93 प्रतिशत, दीया चौधरी 90.33 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। इस मौके पर संस्थान के डायरेक्टर सुरेंद्र कुमार रावल, सरोज नागर, दिलीप चौबीसा, अनिल नागर, चंद्र प्रकाश चौबीसा, जिनेंद्र भट्ट, सोनू आमेरा आदि शिक्षक उपस्थित थे।

सेवा लाइफ अभियान वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज

उदयपुर। जिला प्रशासन, पुलिस और इकॉन ग्रुप का अभियान सेवा लाइफ अभियान वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में शामिल हुआ है। इकॉन ग्रुप के चेयरमैन डॉ. जितेन्द्र कुमार तायलिया ने संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा जारी प्रमाण पत्र सौंपा। इस मौके पर संभागीय आयुक्त ने कहा कि पर्यटन एवं लेक सिटी होने के कारण देश-दुनिया से पर्यटकों का आवागमन होता है। ऐसे में यदि हम दुर्घटना मुक्त सड़क परिवहन सुविधा दे पाएं तो पर्यटकों को हमारी सबसे बड़ी सौगात होगी। डॉ. तायलिया ने बताया कि देश में पहली बार जन सुरक्षा अभियान में सक्रिय सहभागिता के कारण स्थानीय प्रशासन को वर्ल्ड रिकॉर्ड मिला है।

सेम्बारा समन्वयक नियुक्त

उदयपुर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी नई दिल्ली के ऑल इंडिया आदिवासी कांग्रेस के चेयरमैन शिवाजी राव मोगे ने पीसीसी अध्यक्ष गोविंद डोटासरा की अनुशंसा पर एसटी, एससी, ओबीसी एवं अल्पसंख्यक वर्ग में लीडरशीप डवलपमेंट मिशन के तहत उदयपुर जिले के उदयपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र में मोडीलाल सेम्बारा को समन्वयक नियुक्त किया है।

कला व कलाकारों को संबल जरूरी: मुर्डिया

उदयपुर। कश्ती फाउंडेशन की संस्थापिका श्रद्धा मुर्डिया ने कहा है कि संचार प्रौद्योगिकी व प्रतिस्पर्धा के इस युग में इस कला व कलाकारों को संबल देना बेहद जरूरी है। केमलिन और एन एफर्ट संस्थापक के संयुक्त तत्वावधान में सूचना केंद्र में आयोजित एक दिवसीय कला कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रही थी। कार्यशाला के आरंभ में केमलिन के क्षेत्रीय प्रबंधक कमल सेठ और प्रवीण कपूर ने केमल के एचडी एक्रेलिक कलर्स की श्रंखृला के बारे में बताया। इस दौरान चित्रकार सुनील लड्ठा, अहमदाबाद के कलाकार उमेश रावल, दुबई की आर्टिस्ट विनीता जैन, शिल्पकार हेमंत जोशी, संयुक्त निदेशक डॉ. चित्रसेन आदि बतौर अतिथि उपस्थित थे।

डॉ. कोठारी को प्रताप गौरव सम्मान

उदयपुर। महाराज शत्रु दमन सिंह शिवरती विद्यापीठ संस्थान के तत्वावधान में महाराणा प्रताप की 484 जयंती के अवसर पर प्रतिष्ठित 'प्रताप गौरव सम्मान' इस वर्ष मेवाड़ के वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. देव कोठारी को दिया गया। निदेशक, शिवरती शोध संस्थान व इतिहासकार डॉ आजात शत्रु सिंह शिवरती ने बताया कि डॉ देव कोठारी को सम्मान स्वरूप पगड़ी, उपरना, शॉल व सम्मान पत्र दिया गया।

प्रदेश कांग्रेस में सचिव बने

उदयपुर। राजस्थान कांग्रेस ने कांग्रेस नेता हनुमंत सिंह बोहेड़ा (बड़ी सादड़ी) एवं भीमसिंह चूंडावत, गोपाल शर्मा व दिनेश श्रीमाली उदयपुर को प्रदेश सचिव मनोनीत किया है। इसके आदेश प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने जारी किए। कालाजी गोराजी निवासी कांग्रेस नेता हनुमंत सिंह बड़ीसादड़ी विधानसभा क्षेत्र में पिछले 30 वर्षों से सक्रिय हैं। भीम सिंह चूंडावत, दिनेश श्रीमाली और गोपाल शर्मा उदयपुर जिले में पार्टी को मज़बूत बनाने में सक्रिय रहे है।

चौधरी अध्यक्ष, सुहालका महासचिव

उदयपुर। सर्व ओबीसी समाज महापंचायत की बैठक कबीर कुटीर में हुई। मीडिया प्रभारी नरेश पूर्बिया ने बताया कि अध्यक्षता संरक्षक दिनेश माली ने की। बैठक में सर्व ओबीसी समाज महापंचायत के संविधान निर्माण पर चर्चा की गई। महापंचायत के संचालन हेतु सर्वसम्मति से अध्यक्ष लोकेश चौधरी, महासचिव सूर्य प्रकाश सुहालका, कोषाध्यक्ष बाल किशन सुहालका को बनाया गया। संरक्षक दिनेश माली ने बताया शीघ्र महापंचायत का रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा।

प्री. पीजी (एग्रीकल्चर) में हर्षिता को प्रथम रैंक

उदयपुर। जोधपुर कृषि विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित प्री-पीजी एक्जामिनेशन-2023 में राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर की छात्रा हर्षिता नागदा ने सम्पूर्ण राजस्थान में (सामान्य वर्ग) प्रथम रैंक प्राप्त की है। यह जानकारी डॉ. ग्रीन एग्रो क्लासेस, उदयपुर के प्रवक्ता ने दी। हर्षिता ने इस सफलता का श्रेय अपने गुरूजनों व मम्मी-पापा, चंदा-चन्द्र शेखर नागदा को दिया है।

मालीवाल अध्यक्ष, ईनानी उपाध्यक्ष

उदयपुर। महेश सेवा समिति के हाल ही में सम्पन्न चुनाव में देवेन्द्र मालीवाल अध्यक्ष, जितेन्द्र ईनानी (पूर्व संगठन मंत्री व संयुक्त सचिव) उपाध्यक्ष, शरद हेड़ा सचिव, महेश असावा संयुक्त सचिव, लक्ष्मीशंकर गांधी कोषाध्यक्ष, महावीरप्रसाद चांडक संगठन मंत्री विनोद सारडा, प्रचार-प्रसार मंत्री नगेन्द्र लावटी क्रीड़ा मंत्री तथा श्री श्याम देवपुरा को सांस्कृतिक मंत्री निर्वाचित घोषित किया गया।

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्री हमेन्द्रसिंह जी राठौड़ (डायरेक्टर प्लांट, एसीसी सीमेंट) सुपुत्र प्रो. रघुवीरसिंह जी राठौड़ का 23 मई को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया है। वे अपने पीछे शोक विह्वल पिताश्री, पुत्र तपेन्द्र सिंह, भ्राता ठाकुर रामेन्द्रसिंह, संतोष कुमार सिंह सहित भरापूरा छोड़ गए हैं। वे 58 वर्ष के थे।

उदयपुर। श्री संतकुमार जी ब्रिजवानी पुत्र श्री स्व. बाबा द्वारकादास जी महाराज 28 मई को निरंकार की ज्योत में लीन हो गए। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती सरला देवी, पुत्र शैलेश, पुत्रियां श्रीमती दीपा गखरेजा व जाग्रति लालवानी तथा बहिन, दोहित्र-दोहित्रियों व पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। राजस्थान महिला विद्यालय के पूर्व सचिव एवं समाजवादी विचारक स्व. भाई भगवान जी की पुत्री उषा किरण जी दशोरा का 6 जून को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे भाई सुशील जी दशोरा सहित भाई-भतीजों, बहिनों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। वे राजस्थान महिला विद्यालय में शिक्षिका भी रहीं।

उदयपुर। डॉ. अंजु जी हिंगड़ (धर्मपत्नी डॉ. नीरव जी हिंगड़) का 4 जून को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, सासू मां श्रीमती राजकुमार जी, पुत्र डॉ. ईशान हिंगड़, पुत्री श्रीमती ईशानी अग्रवाल सहित ससुर व पीहर पक्ष में भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। आदर्श व्यापार मंडल एवं जांगिड़ समाज के पूर्व महामंत्री श्री भैरूलाल राजोतिया की माताजी श्रीमती सुंदर बाई धर्मपत्नी स्व. श्री नारायण जी शर्मा का 21 मई को देहावसान हो गया। वे 93 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे पौत्र-पौत्रियों का संपन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। श्री रणधीर सिंह जी चौहान (रेणुका मिनरल्स) का 9 जून को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती रेणुका चौहान, पुत्र कृष्णवीर सिंह, रोहित सिंह, पुत्री श्रीमती नीलम सिंह व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री लवेश कपूर सुपुत्र श्री राजकुमार जी कपूर का 25 मई को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल सुनील कपूर, ऋषि कपूर, कुणाल कपूर, अक्षय कपूर, करण कपूर सहित संपन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री अरविंद जी बाबेल का 11 जून को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती चंदा देवी, पुत्र अपूर्व, पुत्री अदिती एवं भाई-भतीजों-भतीजियों का समृद्ध एवं संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री विश्वनाथ जी शर्मा का 29 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र रवि, जवाहर, पुत्री श्रीमती रजनी, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। धर्मपरायण श्रीमती राधा देवी धर्म पत्नी श्री तेजसिंह जी बबेरीवाल, कुमावतपुरा का 9 जून को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र निलेश, पुत्रियां श्रीमती पूनम, श्रीमती अंजना, श्रीमती जया, पौत्र-दोहित्र, भाई-भतीजों एवं जेठ-जेठानियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। वरिष्ठ कांग्रेस नेता, उदयपुर सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के पूर्व अध्यक्ष एवं पंचायत समिति भीण्डर के पूर्व प्रधान श्री निर्भयसिंह जी सिंघवी (92) का 8 जून को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र निर्मल, रमेश, गजेन्द्र, सुशील, अनिल, पुत्रवधू अमिता (स्व. दिलीप), पुत्री आशा कुणावत, भाई-भतीजों सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का संपन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, वरिष्ठ नेता डॉ. गिरिजा व्यास, रघुवीरसिंह मीणा, प्रीति शक्तावत, लालसिंह झाला एवं प्रमुख राजनैतिक दलों के नेताओं ने शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए।

उदयपुर जिला सहकारी भूमि विकास बैंक लि.

शास्त्री सर्किल, सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार के पास, उदयपुर
फोन नंबर 0294-2416284

ऋण का प्रकार	ऋण का उद्देश्य		ऋण सीमा	ऋण स्वीकृति समय सीमा	ब्याज दर	दण्ड ब्याज	ऋण अवधि	किश्त भुगतान विकल्प	हिस्सा राशि	प्रशासनिक शुल्क
कृषि ऋण	लघु सिंचाई	फव्वारा, विद्युतिकरण, ड्रिप भूमिगत पाइपलाइन आदि	न्यूनतम सीमा 25000/- अधिकतम सीमा नाबार्ड/राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत योजनातंर्गत इकाई लागत के अनुसार।	सभी आवश्यक दस्तावेज संलग्न एवं पूर्व होने पर ऋण आवेदन पत्र प्राप्ति के अधिकतम 15 दिवस	ऋण लेते समय लागू ब्याज दर	3 प्रतिशत (अवधिपार मूलधन पर)	9 वर्ष	वार्षिक	समस्त ऋणों पर ऋण राशि का 3 प्रतिशत ग्रामीण आवास ऋण पर ऋण, राशि का 1 प्रतिशत	0.25 प्रतिशत
	फार्म मशीनी करण	ट्रैक्टर, समस्त प्रकार के कृषि यंत्र आदि					9 वर्ष	वार्षिक		
	विविध कृषि आधारित	डेयरी, पोल्ट्री, भेड़-बकरी पालन, तारबंदी, भूमि सुधार, ग्रामीण गोदाम					5 से 9 वर्ष	मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक वार्षिक		
अकृषि ऋण	वे सभी उद्योग जो जिला उद्योग केन्द्र से अनुमोदित है। शिक्षण संस्थान, व्यक्तिगत वाहन, भारवाहक वाहन, होटल निर्माण			(कृषि ऋणों के लिए कृषि भूमि का होना आवश्यक होगा)			5 से 15 वर्ष	मासिक त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक		
	पक्का आवास निर्माण एवं आवास मरम्मत।									

शिकायत निवारण प्रक्रिया

ऋण लेने के संबंध में यदि किसी प्रकार की कोई शिकायत/समस्या हो तो सचिव/अध्यक्ष, प्रधान कार्यालय उदयपुर को व्यक्तिशः/लिखित सूचित करें

अध्यक्ष

सचिव

K.K. Kumawat
Director
9351255950, 8696935950

Nitin Kumawat,
Director
7877797770, 8955550020

Kumawat
Tiles & Sanitary House

Deals in all sije ceramic and vitrified tiles

के.के. कुमावत,
पूर्व पार्षद एवं विधि समिति
अध्यक्ष, पूर्व शहर जिला प्रवक्ता
एवं जिला मंत्री,
भारतीय जनता पार्टी

wavin
International Company

Branch-1: 130, B-Block, Nr. Kendriya Vidhyalaya EVM Happy Home School, Pratap Nagar
Branch-2: 10, Rajasthan Mahila Vidhyalaya Compound, Nr. JMB Misthan, Surajpole, Udaipur

vedanta
transforming for good

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

हम प्रकृति को पोषण से संचित करे आज, संरक्षित हो सुरक्षित होगा हमारा कल

आप सभी को विश्व पर्यावरण दिवस की शुभकामनाएं
आइये मिलकर प्रकृति को संरक्षित करें

www.linkedin.com/company/hindustanzinc
www.instagram.com/hindustan_zinc
www.facebook.com/HindustanZinc
www.twitter.com/hindustan_zinc
www.twitter.com/CEO_HZL

Hindustan Zinc Limited Yashad Bhawan, Udaipur-313004 Rajasthan, India. T: +91 294 6604000-20 | www.hzlindia.com

CREATING SHARED VALUE.
ENVISIONING INFINITE POSSIBILITIES.

AgChem | Fine Chemicals | Life Sciences

A legacy of 75 years and a belief in science for sustainable development has paved the way for PI to rapidly evolve into an integrated Life Sciences company committed to its purpose of **Reimagining a healthier planet**. PI has now grown to be one of the **fastest-growing AgChem** and amongst the **TOP 5 CSM companies** in the world.

Inspired by Science

PI Industries Ltd.

www.piindustries.com | info@piind.com

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 21 अंक 03, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001